RNI-MPHIN/2005/14721
Po. Malwa Division/244/2017-2019
Despatch Date - 02 October 2018

अंक – 4 (मासिक) वर्ष – 14 अक्टूबर 2018 मूल्य 20/–

अपनों के लिए-अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

वरिष्ठ विशेषांक

जिनकी छांव में संरक्षित है समाज

श्री माहेश्वरी मेलापक 2018 विमोचित

फिर रिश्ते आएंगे आपके द्वार

राष्ट्रीय खेल महोत्सव का शुभारंभ

दीर्घायुर्भव जीव वत्सरशतम् नश्यन्तु सर्वा पदः
स्वास्थ्यम् संभज मुञ्च चञ्चलधीयं लक्ष्यैक निष्ठोभवः

आप दीर्घायु हो 100 वर्ष पूर्ण करें, आपकी समस्त आपदाएं नष्ट हो,
आप उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त करें, आपकी बुद्धि की चंचलता दूर हो और
आप अपने लक्ष्य के प्रति निष्ठावान हो।

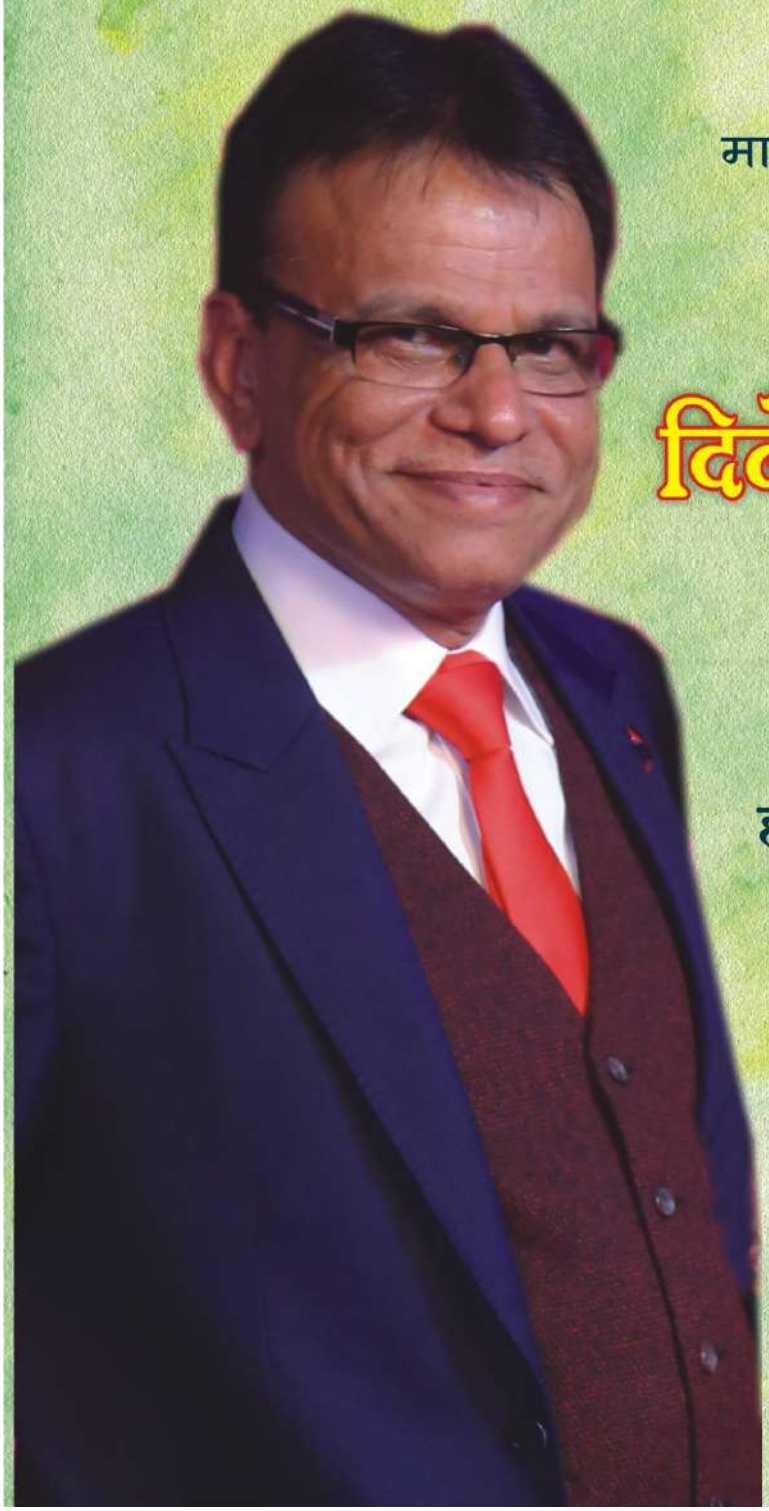

माहेश्वरी युवा संगठन उज्जैन
के संस्थापक एवं
हम सबके आत्मीय

दिनेश माहेश्वरी

की
59 वीं वर्षगांठ
(8 अक्टूबर) पर
हार्दिक शुभकामनाएं

शुभेच्छु सखा . . .
श्रीपाल जैन, पुष्कर बाहेती,
जयप्रकाश राठी, कैलाश डागा
नवल माहेश्वरी, प्रमोद मंत्री,
संदीप कुलश्रेष्ठ, सुनील जैन,
अक्षय आमेरिया, नरेन्द्र राठी
मित्र मंडली एवं
श्री माहेश्वरी टाईम्स परिवार

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

RNI-MPHIN/2005/14721

अंक-4 अक्टूबर 2018 वर्ष-14

प्रेरणास्रोत
स्व. श्री बंशीलाल बाहेती
स्व. श्री मदनलाल पलौड़

प्रबंध सम्पादक एवं निदेशक
श्रीमती सरिता बाहेती

सम्पादक
पुष्कर बाहेती

संरक्षक
पद्मश्री बंशीलाल राठी (चैन्नई)
श्री नेमीचन्द तोषनीवाल (कोलकाता)
श्री जोधराज लड्ढा (कोलकाता)
श्री बनवारीलाल जाजू (इन्दौर)

अतिथि सम्पादक
गोवर्धनदास बिन्नाणी, बीकानेर

परामर्शदाता
दिनेश माहेश्वरी (भूतड़ा) मुम्बई/इन्दौर
घनश्याम करनानी (कोलकाता)

कला निदेशक
अक्षय आमेरिया

विधि सलाहकार
राजेन्द्र ईनाणी, एडव्होकेट (बागली)

सम्पादकीय सलाहकार
गोविन्द मालू (इन्दौर)
बाबूलाल जाजू (भीलवाड़ा)
बंशीलाल भूतड़ा 'किरण' (इन्दौर)

कार्यालय-
90, विद्या नगर (टेड़ी खजूर दरगाह के पीछे),
सांवेर रोड, उज्जैन-456010 (म.प्र.)
Phone : 0734-2526561, 2526761
Mobile : 094250-91161
e-mail : smt4news@gmail.com
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती सरिता बाहेती द्वारा ऋषि ऑफसेट, श्री माहेश्वरी भवन, गोलामण्डी, उज्जैन (म.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

▸ श्री माहेश्वरी टाईम्स में प्रकाशित सभी लेखों के विचारों पर सम्पादक/प्रकाशक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है।
▸ सभी प्रसंगों का न्यायक्षेत्र उज्जैन (म.प्र.) होगा।

Sri Maheshwari Times
■ PNB A/c. No. : 0459002100043471
IFSC- PUNB0045900
■ ICICI A/c. No. : 030005001198
IFSC- ICIC0000300
Tariff of Membership
Rs. 800/- for Three years
Rs. 3100/- for Life Time (12 Years)

जिनकी छांव में संरक्षित है समाज

श्रेष्ठता के मार्गदर्शक है बुजुर्ग

विचार क्रान्ति

बुजुर्ग किसी परिवार या कुल विशेष में ही पूज्य नहीं होते। आयु के साथ ज्ञान वृद्ध का तो सदा सर्वदा सभी सभाओं में ही आदर होता है। सच तो ये है कि जिस समाज में बुजुर्ग का सम्मान नहीं होता और उनकी बात या आज्ञाओं का अनुसरण नहीं होता, वह समाज दिशाहीन हो जाता है।

जो अपने घर, बिरादरी के बड़े-बूढ़ों की हितकारी शिक्षाओं का उल्लंघन करते हैं, वे रावण या दुर्योधन की तरह कुल के नाश और जीवन के अंत का कारण बनते हैं। रामकथा में अपने बुजुर्ग नाना माल्यवान सहित हितैषियों की सलाह न मानकर रावण को जीवन और राज्य दोनों से हाथ धोना पड़ा। महाभारत के उद्योग और भीष्म पर्वों में दुर्योधन का व्यवहार इसका उदाहरण है। अपने बुजुर्ग पितामह भीष्म, पिता धृतराष्ट्र और चाचा विदुर समेत बूढ़े गुरु द्रोण और कृपा की हर भली बात को दुर्योधन ने ठीक वैसे ही नकारा जैसे रोगी अंतकाल में औषधियों को अस्वीकार कर देता है। परिणाम में महाभारत का महासंहारकारी संग्राम हुआ।

शल्य पर्व का अद्भुत प्रसंग है। कुल 18 दिन के युद्ध में अंतिम दिन भीम ने गदा युद्ध में दुर्योधन को धराशायी कर दिया। दुर्योधन पराजित होकर गिरा तब कराहते हुए भगवान श्रीकृष्ण को युद्ध के लिए जिम्मेदार बताते हुए कोसने लगा।

तब मरणासन्न दुर्योधन को फटकारते हुए भगवान ने जो कहा, वह बुजुर्गों के संदर्भ में कीमती वचन हैं। इसलिए कि अपने पाप का फल भोगते दुर्योधन को भगवान ने अंतिम अवसर पर भी बुजुर्गों की महत्ता ही याद दिलाई। भगवान बोले, 'मूर्ख! तुमने कभी बुजुर्गों की उपासना नहीं की। तुम्हारी पराजय उसी का परिणाम है।'

आशय ये कि बुजुर्गों की उपासना विजय और अवहेलना पराजय करा देती है। बुजुर्ग आयु और ज्ञान में ही नहीं, जीवन के अनुभव में भी बड़े होते हैं। उनका कहा हमेशा हितकर ही होता है। कभी पल भर किसी बुजुर्ग के पास बैठिये तो, बरगद की घनी छाँव-सी अनुभूति होगी।

उनकी उपस्थिति दिव्य है, उनका सत्संग सौभाग्य और उनकी सेवा जीवन की सार्थकता। इसीलिए तो हमारे शास्त्र कहते हैं, जिस घर, कुल या समाज में बुजुर्ग नहीं होते और उनसे परामर्श नहीं किया जाता, वह कुल और समाज संपन्न भले हो जाए, श्रेष्ठ नहीं हो पाता। श्रेष्ठता और सार्थकता के लिए बुजुर्गों की कृपा चाहिए ही।

सम्पादकीय

अनुभव की खान . . .

''घर में एक बुजुर्ग जैसे रोशनदान है..'' यह पंक्तियां जिसने भी लिखी, उसे सैल्यूट। बुजुर्ग यानी 'अनुभव की खान'। कहते हैं बरात में भी एक बुजुर्ग को साथ रखा जाता है। कारण वही, बुजुर्ग हमारे समाज के सबसे आदरणीय होते हैं, इसलिए उनका आशीर्वाद लिया जाता है। कारण वही। वस्तुतः समाज को दिशा देने का नाम बुजुर्ग ही करते आए हैं। उनके अनुभव नई पीढ़ी को हर मुश्किल से निकलने का मार्ग सुझा सकते हैं। इनके अनुभव किसी काम में चार चांद लगा सकते हैं। उनका व्यक्तित्व युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत होता है। उनको देखकर हम अपना रास्ता चुन सकते हैं। यही नहीं बुजुर्गों में जो खास बात होती है वह है, अपने परिवार समाज के प्रति समर्पण की। वे जानते हैं कि उनका जो कुछ है, वह परिवार और समाज का ही है। इसलिए वे अपनत्व और ममत्व से लबरेज भी होते हैं। जरूरत भर इतनी है कि उन्हें उनके अनुसार सम्मान और प्यार मिले। समाज में ऐसे भी बुजुर्ग हैं, जिन्होंने उम्र की ढलान पर भी अपने आप को ऊर्जावान और सक्रिय बना रखा है। वे आज भी इतना कुछ कर रहे हैं कि हमें उनसे सीखने की जरूरत महसूस होती है। यह अंक ऐसे ही वरिष्ठ नागरिकों को समर्पित है। वे समाज के ऐसे रोशनदान हैं, जिनकी रोशनी हमें रास्ता दिखाती है। हमने कोशिश की है समाज के ऐसे ही वरिष्ठजनों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को पाठकों के बीच लाने की। यह एक प्रयास है समाज के उन सभी वरिष्ठों को प्रणामू का, जो हमारे पथ प्रदर्शक हैं।

हमारी महासभा भी इतनी वरिष्ठ हो चुकी है और समाज के लिए वह भी रोशनदान की तरह ही है। समाज महासभा की ओर हमेशा आशा से देखता है। पर क्या महासभा समाज की अपेक्षाओं पर खरी उतर पा रही है? यह सवाल जनवरी 2019 में होने वाले महासभा के सम्मेलन को लेकर आज पूरे समाज के सामने है। समाज को लेकर कई सवाल खड़े हैं, जिनकी प्रतिध्वनि आपसी चर्चाओं में तो सुनाई देती है, लेकिन जब महासभा में फैसलों की बात आती है तो मुद्दे कुछ और ही नजर आने लगते हैं। इसलिए वरिष्ठों पर बात करते वक्त अचानक ही महासभा की चर्चा भी निकल आई है। सम्मेलन के पहले क्या समाज में एक अभियान चलाकर उन मुद्दों को फोकस किया जा सकता है, जिस पर महासभा को फैसले लेना चाहिए। यदि महासभा समाज के वास्तविक मुद्दों पर आने को तत्पर हो तो यह संभव भी है। अन्यथा पहले की तरह एक और आयोजन हो जाएगा और मुद्दे जहां के तहां रह जाएंगे। महासम्मेलन के आयोजन पर हम कोई टिप्पणी नहीं करना चाहते, क्योंकि इसको लेकर जो चल रहा है, वह किसी से छिपा नहीं है। इस मामले में समाजजन स्वयं फैसला ले सकते हैं। हालांकि महिला संगठन और युवा संगठन ने जिस तरह अपने आप को समाज के नजदीक रखने और अपने उद्देश्यों को पूरा करने पर जोर लगाया है, वह प्रशंसनीय है। वास्तव में अब जरूरत यही है कि समाज संगठनों के पदाधिकारी बजाए अपनी मनमानी और मर्जी से संगठन को हांके, वे समाजजनों की आवश्यकता और अपेक्षाओं के अनुरूप अपने को ढालें तो संगठन की सार्थकता नजर आएगी।

देवी अहिल्या की नगरी इन्दौर दो प्रमुख आयोजनों की साक्षी बन रही है, एक अ.भा. माहेश्वरी युवा संगठन द्वारा गत 29 सितम्बर से आयोजित राष्ट्र स्तरीय खेल महोत्सव व दूसरा अवसर है म.प्र. पश्चिमांचल प्रादेशिक माहेश्वरी सभा द्वारा 22 अक्टूबर से आयोजित होने वाला अखिल भारतीय विवाह योग्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन। खेल महोत्सव निश्चय ही माहेश्वरी खेल प्रतिभाओं को आकाश छूने के लिये प्रोत्साहन के पंख लगा रहा है। वहीं परिचय सम्मेलन भी हर वर्ग की सेवा में समर्पित होने को तैयार है। ऐसे अनुपम आयोजनों के लिये दोनों संगठन बधाई के पात्र हैं। अंत में बताना चाहूंगा कि श्री माहेश्वरी टाईम्स आगामी अंक हमारे खास पर्व को समर्पित कर विशेषांक के रूप में प्रकाशित करने जा रही है, जो होगा ''दीपावली विशेषांक''। विशिष्ट आलेख भी आमंत्रित हैं और सभी से शुभकामनाऐं भी। यह अंक आपकी अपेक्षा कितना खरा उतरा यह तो आपकी प्रतिक्रिया ही तय करेगी। अवश्य भेजें। जय महेश!

पुष्कर बाहेती
सम्पादक

अतिथि सम्पादकीय

जिंदादिली के साथ जीएं

बीकानेर निवासी श्री गोवर्धन बिन्नानी की पहचान समाज में एक अच्छे वित्तीय सलाहकार तथा समाज चिंतक के रूप में है। श्री बिन्नानी का जन्म सन् 1947 में बीकानेर के मूल निवासी परिवार में स्व. श्री बद्रीदास बिन्नानी के यहाँ कोलकाता में हुआ था। कोलकाता से ही बी.कॉम. ऑनर्स एवं कम्प्यूटर कोर्स की शिक्षा प्राप्त की। आपकी विशेषता यह थी कि कुछ नया करने की चाह में मात्र 15 वर्ष की उम्र से ही विभिन्न लेनदेन आदि के व्यवसाय से सम्बद्ध होकर अर्थोपार्जन करने लग गये थे। शिक्षा पूर्ण करने के बाद कोलकाता में बिड़ला ग्रुप से अकांउटेंट के रूप में सम्बद्ध हो गये और कई महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ संभाली। नौकरी के साथ ही पोर्टफोलियों व निवेश क्षेत्र से भी सम्बद्ध हो गये थे। मात्र 47 वर्ष की उम्र में वर्ष 1994 में अकाउंटेन्ट पद से सेवा निवृत्त होकर वित्तीय क्षेत्र में ही पूर्णतः समर्पित हो चुके हैं। सेवा निवृत्ति के बाद आपका निवास स्थल बीकानेर ही बन गया। लेखन आपका स्कूली जीवन से ही शौक रहा है और वर्तमान में भी श्री बिन्नानी अपनी लेखनी से समाज को मार्गदर्शित कर रहे हैं। आपके आलेख समाज की विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं।

समय की गति बहुत बलवान होती है। वही समय मनुष्य को बाल्यावस्था से युवावस्था, फिर प्रौढ़ावस्था और अंत में वृद्धावस्था तक का सफर कराता है। जीवन का अधिकांश समय बहुत ही रोमांचक व उद्देश्यपरक होता है, लेकिन वृद्धावस्था, जिसके स्मरण मात्र से ही हमारा मन निराशा से भर जाता है यानि, रोग, एकाकीपन, निरुद्देश्य जीवन इत्यादि की कल्पना मात्र ही हमें वृद्धावस्था का पूर्व में ही कटु आभास देने लगती है जबकि हम अपने सार्थक प्रत्यत्नों से उस पर आसानी से काबू पा सकते हैं। याद रखें 'वृद्धावस्था' वह - जहाँ आकर हमारी नजर धुंधली अवश्य हो जाती है, लेकिन अनुभव गहरे हो जाते हैं। अतः जैसे हम जीवन की बाकी अवस्थाओं का भरपूर आनंद लेते हैं, वैसे ही वृद्धावस्था का भी आनंद लेना चाहिए। मेरा मानना है कि हम जो कुछ अनुभवी लोगों द्वारा कही कहावतें बचपन में पढ़ते हैं, उन पर प्रौढ़ावस्था से ही अमल शुरू कर देना चाहिए। जैसे 'पूत कपूत तो क्यों धन संचय.. साईं इतना दीजिये...चाह गई चिंता मिटी...वाणी ऐसी बोलिये.. आदि।

युवावस्था एवं प्रौढ़ावस्थामें हमारा अधिकाधिक ध्येय धन कमाने पर केंद्रित रहता है। जाहिर सी बात है क्योंकि हमें अपने परिवार के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन करना होता है, लेकिन उम्र के इस पड़ाव में आकर ही हमें ज्ञात होता है कि जीवन में पद, पैसा, प्रतिष्ठा ये सब कुछ काम का नहीं, यदि आपके जीवन में खुशी, संतुष्टि और अपने नहीं हैं तो। खुशियाँ पैसो से नहीं मिलती, अपनों से मिलती हैं क्योंकि पैसा बहुत कुछ है, लेकिन सबकुछ नहीं। याद रखें जीवन आनंद के लिए है, चाहे जो हो, बस मुस्कुराते रहना है। यदि आप चिंतित हो, तो खुद को थोड़ा आराम दीजिये। अच्छी किताबें, जीवनसाथी, दोस्त सब आपके जीवन में निश्चित ही महत्वपूर्ण हैं, जो सदैव आपका हित ही करेंगे। उनकी संगत में रहिये। इस अवस्था में स्वयं को लाचार न बनाते हुए, हमें अपने समय, अनुभव का उपयोग, समाज के हित में करना चाहिए। वृद्धावस्था कोई श्राप नहीं, हमें हमारी सोच से इसे वरदान बनाना चाहिए। संभव है आयु के चलते हम कुछ रोगग्रसित हो जाएं लेकिन अपने रोगों का बखान करने एवं उनसे परेशान होने के बजाय हमें अपनी उत्सुकता, उमंग को बनाए रखना चाहिए। याद रखें जिंदगी तब खत्म नहीं होती, जब हमारी सांसें थम जाती हैं। जिंदगी जब खत्म होती है, जब हम सपने देखना छोड़ देते हैं। ऐसा नहीं है कि वृद्धावस्था में आप कुछ कर नहीं सकते, बल्कि यह समय है आपकी बची हुई ख्वाहिशों को पूरा करने का अपने लिए कुछ करने का जिनके लिए आप पहले अपनी पारिवारिक जिम्मेदारी के चलते समय नहीं दे पाए।

उम्र के इस पड़ाव में सबसे कठिन कार्य है, नई पीढ़ी के साथ सामंजस्य बैठाना, परंतु अपनी सूझबूझ, अनुभव का प्रयोग करते हुए यह कार्य भी बड़ी सरलता के साथ किया जा सकता है। परंपराओं के साथ आधुनिकता का मेल कठिन अवश्य है लेकिन नामुमकिन नहीं। आजकल की युवा पीढ़ी अत्यधिक महत्वाकांक्षी है। उनके साथ सामजंस्य बैठाने के लिए आवश्यकता है, उनके विचारों, उनकी जीवनशैली को समझने की, कुछ बाते अपनाने की और अपने विचार एवं परम्पराओ को अग्रेषित करने की ।

सैम्युअल के विचार वास्तव में विचारणीय हैं - 'कोई भी इस वजह से बूढ़ा नहीं होता कि उसने अपनी जिंदगी के कुछ सालों को जी लिया बल्कि हम इसलिए बूढ़े होते हैं कि हम अपने विचारों को छोड़ देते हैं। समय केवल हमारे शरीर को बूढ़ा करता है जबकि उत्साह की कमी हमारी आत्मा को खो देती है। इसलिए समय से पहले जीना मत छोड़िये। यह समय है जीवन के नवीन अध्याय को शुरू करने का। मस्त रहिये, स्वस्थ रहिये।

गोवर्धनदास बिन्नाणी
अतिथि सम्पादक
मो. 98291-29011 / 79768-70397

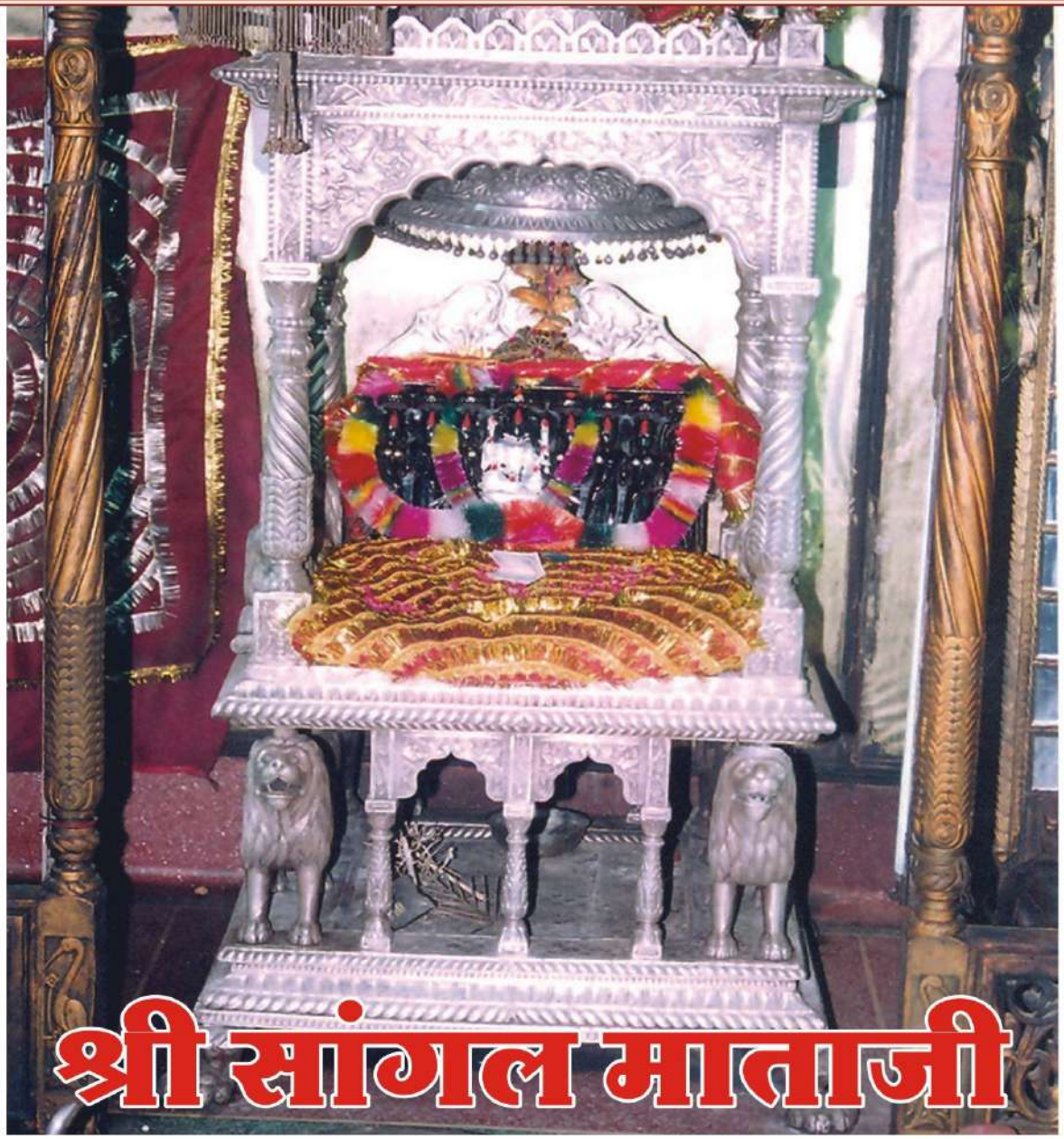

श्री सांगल माताजी

श्री सांगल माताजी माहेश्वरी समाज के भट्टड़, मालपानी व जावंधिया खाँप की कुलदेवी हैं।

माताजी का मंदिर राजस्थान के जैसलमेर जिले में भादरिया गाँव में स्थित है। यह मंदिर देश ही नहीं अपितु सम्पूर्ण एशिया में अपनें चमत्कारिक प्रभावों से प्रसिद्ध है। अतः माहेश्वरी समाजजनों के साथ ही अन्य जाति के श्रद्धालुओं की भी यहाँ भीड़ लगी रहती है। यह मान्यता है कि यहाँ मांगी हुई मुराद अवश्य ही पूरी होती है।

इस मंदिर की एक और भी विशेषता है। यहाँ एक विशाल अन्डरग्राउण्ड लायब्रेरी है जिसमें लाखों पुस्तकें हैं। इनमें कई दुर्लभ पुस्तके भी शामिल हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ लगभग 1500 गायों की विशाल गौशाला भी है। मंदिर में नियमित पूजा-अर्चना तो होती ही है, नवरात्रि में लगने वाला मेला विशेष आकर्षण होता है।

कैसे पहुँचें-

भादरिया गाँव जोधपुर मार्ग पर जैसलमेर से 75 कि.मी. तथा पोकरन से 40 कि.मी. दूर है। वैसे तो जैसलमेर व पोकरन से बस सुविधा भी उपलब्ध है लेकिन निजी वाहन या टैक्सी से आना जाना ज्यादा सुविधाजनक है।

कहाँ ठहरें-

ठहरने के लिये भादरिया गाँव में ही श्री सांगल माताजी के मंदिर परिसर के समीप धर्मशाला बनी हुई हैं जिसमें ठहरने की सामान्य सुविधा उपलब्ध है।

खेल महोत्सव से सजी देवी अहिल्या की नगरी

अभा माहेश्वरी युवा संगठन ने किया आयोजन
खेल, संस्कृति, कला व साहित्य के लिये भी बनेगा ट्रस्ट

इंदौर. अभा माहेश्वरी युवा संगठन झंवर ग्रुप ऑफ कंपनी द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय खेल महोत्सव का गत 29 सितंबर से चार दिवसीय आयोजन मप्र पश्चिमांचल माहेश्वरी युवा संगठन के तत्वावधान व इंदौर जिला माहेश्वरी युवा संगठन के आतिथ्य में हो रहा है। गत दिनों इसका भव्य शुभारंभ हुआ।

फूटी कोठी इंदौर स्थित दस्तूर गार्डन में देशभर से आए 800 खिलाड़ी प्रतियोगी के पथ संचलन तथा ध्वजारोहण के साथ इसका शुभारंभ शाम 6.30 बजे हुआ। कार्यक्रम के मुख्य संरक्षक अशोक ईनानी तथा राष्ट्रीय संयोजक नीलेश राठी व कौशल सोनी ने बताया कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रखर वक्ता व चिंतक कमल गांधी कोलकाता थे। अध्यक्षता युवा संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजकुमार काल्या ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में अभा महिला संगठन की राष्ट्रीय अध्यक्ष कल्पना गगडानी मुंबई, ख्यात समाजसेवी हरिकिशन झंवर चेन्नई, महिला संगठन की पूर्व अध्यक्ष शोभा सादानी, उद्योगपति सुरेश राठी, गिरीश सारडा व दिलीप तोतला थे। अतिथियों का अभिनंदन स्वागत मंत्री मुकेश कचौलिया के नेतृत्व में प्रदेशाध्यक्ष राहुल मानधन्या, सचिव पवन मालानी, जिला सचिव अक्षत झंवर आदि ने किया।

शिखर पर पहुंचें हमारे युवा यही लक्ष्य

युवा संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री काल्या ने उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि यह खेल महोत्सव एक नया इतिहास रचने जा रहा है। पहली बार 24 प्रदेशों से आए 800 प्रतियोगी और प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं। इस खेल महोत्सव में क्रिकेट, बेडमिंटन, टेबलटेनिस, शतरंज, कैरम जैसी प्रतियोगिताओं के साथ पहली बार वॉलीबॉल, तैराकी, दौड़ जैसी ऐथेलेटिक्स प्रतियोगिताएं भी आयोजित हो रही हैं। इसके दौरान ही संगठन की तृतीय कार्यकारी मंडल तथा सप्तम कार्यसमिति बैठक, माहेश्वरी रत्न सम्मान, मैराथन जैसे अनेक कार्यक्रम भी आयोजित होंगे। समाजहित में उच्च शिक्षा, रोजगार, व्यापार, व्यवसाय एवं विवाह से संबंधित कार्यक्रम भी संगठन आयोजित करेगा। हमारी ऐसी भावना है कि खेल, कला, साहित्य और सांस्कृतिक क्षेत्र की युवा प्रतिभाओं को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिलें तथा हमारे समाज का कोई साथी क्रिकेट का रणजी खेले, नेशनल टीम में उसे सहभागिता मिले, कोई नेशनल लेवल पर शतरंज खेले। इस हेतु खेल, साहित्य एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों को बढ़ावा देने एवं प्रोत्साहित करने के लिये हम जल्द ही एक ट्रस्ट का निर्माण भी करने जा रहे हैं।

प्रतिदिन एक समय कई स्थानों पर स्पर्धा

इस आयोजन में क्रिकेट, वॉलीबाल, दौड़, बैडमिंटन, टेबल टेनिस, तैराकी सहित विभिन्न इनडोर गेम्स का भी आयोजन होगा। प्रतिदिन इन स्पर्धाओं का शुभारंभ विभिन्न स्थानों पर एक साथ प्रातः 8 बजे से होगा। डॉ. रवि राठी रायपुर, शैलेंद्र करवा रायपुर, हरिकिशन झंवर चेन्नई, संजीव चांडक वाराणसी, कमल भूतड़ा सूरत तथा नारायण मालपानी मुंबई इस आयोजन में राष्ट्रीय समन्वयक की भूमिका निभा रहे हैं। इसमें 24 प्रदेशों से आए प्रतियोगी अपनी प्रतिभाओं का परिचय दें रहे हैं। आयोजकों ने इस स्पर्धाओं के आयोजन के लिये शहर के कई प्रमुख खेल मैदान व स्टेडियम तथा स्वीमिंग पुल की व्यवस्था की। विजेता खिलाड़ियों को प्रायोजक झंवर ग्रुप ऑफ कंपनी द्वारा भी सम्मानित किया जाएगा।

गगडानी ने पूर्ण की अपनी ३३ दिवसीय संगठन यात्रा

कई प्रदेशों के विभिन्न शहरों में महिलाओं में जगाई संगठन भावना

मुंबई. अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन अध्यक्ष कल्पना गगडानी ने देश के कोने-कोने में बसे परिवारों की महिलाओं में संगठन भावना जगाने तथा स्थानीय स्तर तक संगठन को मजबूत करने के लिए 33 दिवसीय संगठन यात्रा की शुरुआत की थी। श्रीमती गगडानी ने यात्रा गत 11 सितंबर को पूर्ण की।

श्रीमती गगडानी की यात्रा की शुरुआत दिल्ली से हुई व गुरुग्राम, बसदुरगढ़, मोदीनगर, अलीगढ़, आगरा, कानपुर, झांसी, राठ, कुरई, मैनपुरी, इटवा होते हुए लखनऊ में संपन्न हुई। इसमें दिल्ली, पंजाब हरियाण एवं उत्तरप्रदेश के बाद मप्र के भोपाल, विदिशा, बनखेड़ी, बरेली, गाडरवारा एवं पिपरिया में सभाएं आयोजित की। छत्तीसगढ़ में रायपुर, धमतरी, कांकर, कोंडगांव, जगदलपुर में सभाएं की गईं।

क्या था इसका उद्देश्य

यात्रा के उद्देश्य के के बारे में श्रीमती गगडानी का कहना है कि इसका उद्देश्य इन छोटे-छोटे गांवों में माहेश्वरी महिलाओं से मिलकर और उन्हें राष्ट्रीय संगठन की कार्यप्रणाली से अवगत कराते हुए उन्हें उसमें सहभागी बनाने का विचार था। वहीं दूसरी ओर विभिन्न प्रदेशों में छोटे-छोटे गांवों में बसे परिवारों की परिस्थिति, रहन-सहन, सोच विचार एवं आवश्यकताओं को समझना एवं उस दिशा में कार्य करना भी था। जानकार अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि हमारी समितियों के निरंतर कार्यों ने महिलाओं में उत्साह भरा है। सिद्धि एक प्रसिद्धि प्रकल्प के अंतर्गत शर्बत वितरण एवं उसका विश्व रिकॉर्ड बनाना महिलाओं को उत्साह से भर गया एवं राष्ट्रीय संगठन के प्रति विश्वास एवं खुद के संगठन के प्रति क्षमता एवं उत्साह को जगा गया। हर जगह सभी सदस्याएं एक ही प्रश्न पूछने लगीं कि अब आगे क्या कार्य दे रहे हैं? जल्दी कुछ और काम बताइये?

महिलाओं में बड़ी विचारों की अभिव्यक्ति

श्रीमती गगडानी का कहना है कि सुलेखा समिति के अंतर्गत हम नियमिति चिंतन मनन का कार्य सामाजिक विषयों पर अपनी राय बतलाने का कर रहे हैं और अब तक सात विषयों पर विचार आमंत्रित कर चुके हैं। इससे भी गांव-गांव जिले-जिले में जागरुकता फैली है। नई पीढ़ी खुल कर भाग ले रही है। संगठन को उस सोच के आधार पर कार्य की दिशा मिल रही है। सामाजिक समस्याओं से अवगत कराने एवं अनेक सर्वसम्मत हल निकालने के उद्देश्य से हमने अब 10 से 40 वर्ष की युवतियों का सम्मेलन आयोजित करने का निर्णय किया है। इसमें वैवाहिक संबंधों में आ रही परेशानी तथा पारिवारिक सामंजस्य पर चिंतन हो सकेगा।

श्री माहेश्वरी मेलापक-2018 का हुआ विमोचन

कई सफल रिश्तों की सौगात देने के अभियान में फिर नया कदम तय

उज्जैन। पत्रिका श्री माहेश्वरी टाईम्स के प्रकाशन समूह ऋषिमुनि द्वारा गत लगभग एक दशक से समाज के विवाह योग्य युवक-युवतियों की अन्तर्राष्ट्रीय डायरेक्ट्री "श्री माहेश्वरी मेलापक" का प्रकाशन किया जा रहा है। इसके नवीन अंक "श्री माहेश्वरी मेलापक-2018" का विमोचन गत दिनों हुआ।

अन्य समाजों की तरह माहेश्वरी समाज में भी सफल वैवाहिक रिश्ते तय करना एक अत्यंत कठिन चुनौती बन चुका है। इसके अभाव में रिश्तों को बिखरने में समय नहीं लगता। यदि दाम्पत्य के रिश्ते सफल है तो जीवन सफल है। इसी परेशानी को देखते हुए लगभग एक दशक पूर्व हमने समाज के बीच मित्र की तरह सहयोगी बनने के लिये "श्री माहेश्वरी मेलापक" की शुरुआत की थी। अभी तक की अपनी सेवायात्रा में श्री माहेश्वरी टाईम्स प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से हजारों रिश्तों को जोड़ने में अपनी अहम भूमिका निभा चुकी है। उक्त जानकारी श्री माहेश्वरी मेलापक के विमोचन अवसर ऋषिमुनि प्रकाशन के प्रमुख व श्री माहेश्वरी टाईम्स सम्पादक पुष्कर बाहेती ने दी।

आकर्षक स्वरूप के साथ तथ्यपूर्ण जानकारी

श्री माहेश्वरी मेलापक में प्रकाशित बॉयोडाटा का संग्रह एक टीम द्वारा अथक परिश्रम से एवं अत्यंत सजगतापूर्वक किया गया है। प्रयास यह है कि सही व उत्कृष्ट जानकारी मिले जो रिश्ते जोड़ने में अहम भूमिका निभा सके। पूर्व के अंकों की तरह इसमें भी 'आपकी बेटी हमारे बेटी' योजनान्तर्गत कन्याओं के बायोडाटा का निःशुल्क प्रकाशन किया गया है। पूर्ण शुक्ल का भुगतान करने वाले प्रत्याशियों को यह डायरेक्ट्री शीघ्र प्रेषित की जा रही है। शेष प्रत्याशी अथवा इच्छुक अन्य समाजजन भी यदि श्री माहेश्वरी मेलापक मंगवाना चाहते हैं तो निर्धारित शुल्क 750/- रु. के भुगतान से इसे प्राप्त कर सकते हैं।

प्रदूषण मुक्ति के लिए सिखाया मिट्टी के गणेश बनाना

श्री माहेश्वरी टाईम्स, जिला व माहेश्वरी महिला संगठन भीलवाड़ा का अनूठा प्रयास

भीलवाड़ा. श्री माहेश्वरी टाईम्स, जिला व माहेश्वरी महिला संगठन भीलवाड़ा द्वारा प्रकृति संरक्षण के संदेश के साथ मिट्टी के गणेश की सीखो सिखाओ कार्यशाला का आयोजन गत 11 सितंबर को माहेश्वरी भवन नागोरी गार्डन में किया गया। इसमें बड़ी संख्या में समाज की महिलाएं शामिल हुईं। माहेश्वरी टाइम्स परिवार की अभिन्न सदस्या एवं ख्यात कलाकार आशा मंत्री व इनकी सहयोगी बेटी ख्यात इंटीरियर डिजाइनर पलक मंत्री द्वारा मिट्टी के गणेश बनाना सिखाया गया। कार्यक्रम के संयोजक महावीर समदानी ने बताया कि दो सत्रों में यह आयोजन हुआ। प्रातःकालीन सत्र का शुभारंभ गणेश उत्सव प्रबंध एवं सेवा समिति अध्यक्ष समाजसेवी उदयलाल समदानी, पूर्व सभापति ओमप्रकाश नरानीवाल, पूर्व उपाध्यक्ष पुष्कर सेवा समिति सत्यनारायण डाड, नगर सभा अध्यक्ष केदारमल जागेटिया, नगर मंत्री केदार गगरानी, शिखा भदादा, शोभा भदादा, मधु जाजू, हरीश पोरवाल, रमेश राठी, नरेंद्र मंडोवरा आदि द्वारा दीप प्रज्जवलन कर किया गया। कार्यक्रम का संचालन सीमा कोगटा ने किया। महिला संगठन जिलाध्यक्ष अनिला अजमेरा व सचिव सीमा कोगटा ने बताया कि महिला प्रशिक्षु अच्छी तरह से सीखें इसके लिए प्रोजेक्टर लगाकर लाइव दिखाया गया।

इस कार्यक्रम का मीडिया पार्टनर दैनिक भास्कर रहा। इसने अच्छा कवरेज कर इस कार्यक्रम को नई ऊंचाई प्रदान की। कार्यक्रम के प्रायोजक नेताजी राखी के संचालक नवनीत सोडाणी व पीयूष सोडानी थे। कार्यक्रम के समापन में उपसभापति देवकरण गगड़, उद्योगपति आरएल नौलखा, पूर्व प्रदेशाध्यक्ष राधेश्याम सोमानी, प्रदेशाध्यख कैलाशचंद्र कोठारी, महेश सेवा समिति सचिव राजेंद्र कचोलिया, राष्ट्रीय महिला उपाध्यक्ष ममता मोदानी, महेश सेवा समिति उपाध्यक्ष कैलाशचंद्र मूंदड़ा, महेश क्रेडिट कोऑपरेटिव सोसायटी सचिव श्यामसुंदर नौलखा, दैनिक भास्कर के सुनीलकुमार आदि गणमान्य अतिथि मौजूद थे। नगर महिला अध्यक्ष गायत्री मूंदड़ा व सचिव वीणा मोदी ने बताया इस कार्यक्रम में लगभग 150 महिलाओं व बच्चों ने गणपति बनाना सीखा। आशा मंत्री व पलक मंत्री को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। मीडिया पार्टनर, प्रायोजक को भी स्मृति चिह्न भेंट किये गये। कार्यक्रम की सफलता में सुशील तोषनीवाल, अन्नू मोदी, संध्या आगीवाल, प्रीति लोहिया, मानकंवर काबरा, संगीता ईनाणी, अंजु सोमानी, सोनल महेश्वरी व साक्षी आगाल का विशेष सहयोग रहा। श्रेष्ठ गणपति बनाने वाले सुचिता मंडोवरा, रिद्धि सुखवाल व परमेश्वर पोरवाल को माहेश्वरी टाइम्स द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए। कार्यक्रम के अंत में माहेश्वरी टाइम्स प्रतिनिधि शंकर सोनी ने सभी का आभार माना।

नई कार्यकारिणी का किया गठन

चंद्रपुर. गत 1 जुलाई को लक्ष्मीनारायण मंदिर में माहेश्वरी युवक मंडल की वार्षिक सभा आयोजित हुई। इसमें मंडल की नई कार्यकारिणी का गठन हुआ। इसमें अध्यक्ष राजेश काकानी व सचिव दीपक कैलाश सोमानी का चयन हुआ। प्रवीण सारडा, अनूप गांधी, शक्ति धूत, ऋषिकांत जाखोटिया, पीयूष माहेश्वरी, धीरज राठी, प्रतीक सारडा, भारत बजाज, हरीश सोमानी, उमेश सारडा, अनूप मालपानी आदि उपस्थित थे।

तीज के सिंजारा का हुआ आयोजन

बिजयनगर (अजमेर). स्थानीय माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी सिंजारा महोत्सव का आयोजन किया गया। इसमें कई रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किए गए। तीज क्वीन का खिताब सोनल पडियार ने जीता। कार्यक्रम में भाग लेने वाली सभी महिलाओं को पुरस्कृत किया गया। सामूहिक गोठ भी रखी गई। अध्यक्ष सुमन बांगड़ व सचिव अंतिमा पण्डयार ने सभी का आभार व्यक्त किया।

"विचार गतिशील व भिन्न होते है...
सब्जी की टोकरी में से
हर व्यक्ति सब्जी 'छांटता' है
और मजे की बात है कि
'बिक' भी पूरी जाती है !!!!!"

छात्राओं का करवाया रक्त परीक्षण

वरंगल. स्थानीय माहेश्वरी समाज द्वारा तापड़िया डायग्नोस्टिक सेंटर वरंगल के सहयोग से गवर्नमेंट गर्ल्स जूनियर कॉलेज, श्री कृष्णा कॉलोनी में कॉलेज की छात्राओं के लिए रक्त परीक्षण शिविर लगाया गया। इसके अंतर्गत छात्राओं के रक्त ग्रुप व हीमोग्लोबिन प्रतिशत का परीक्षण किया गया। जिन छात्राओं को हीमोग्लोबिन के वजह से रक्त की कमी है उन्हें डॉक्टर द्वारा परीक्षण कर दवाइयां दी जाएंगी। शुभारंभ कॉलेज की प्रधानाचार्य विजया देवी ने किया। इस अवसर पर माहेश्वरी समाज अध्यक्ष संपतकुमार लाहोटी ने आभार माना। समाज के सहमंत्री डॉ. विष्णुकुमार बल्दवा ने भी छात्राओं को संबोधित किया। इस अवसर पर समाज के उपाध्यक्ष श्याम जखोटिया, मंत्री नवल मणियार, कोषाध्यक्ष रामकिशोर मणियार, हरिकिशन मणियार, सीताराम बंग, हीरालाल सारड़ा, राजेंद्र लड्ढा, दिलीप तापिड़या, कैलाश सोनी, जूनियर कॉलेज के सभी अध्यापकगण, स्टाफ उपस्थित थे।

महेश क्रेडिट को-ऑपरेटिव के चुनाव संपन्न

भीलवाड़ा. महेश क्रेडिट को-ऑपरेटिव सो. लि. के चुनाव गत दिनों संपन्न हुए। इसमें कन्हैयालाल खटौड़ (रायपुर) अध्यक्ष व ओमप्रकाश बिड़ला (मांडल) उपाध्यक्ष चुने गए। इससे पूर्व सचिव पद पर श्यामसुंदर नौलखा तथा कोषाध्यक्ष पद पर आलोक पलौड़ को निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया गया। पदाधिकारियों के अतिरिक्त मधु तोषनीवाल, सुनीता जागेटिया, कमल कासट, रामकुमार जागेटिया, रामस्वरूप तोषनीवाल, महावीर सोनी को संचालक के पद पर चुना गया।

"सिंह अगर चट्टान पर बैठ जाए तो वह चट्टान भी सिंहासन कहलाती है, इसीलिए सिंहासन का मोह ना रखते हुए खुद सिंह बनो , आप जहां पर बैठेंगे वहां सिंहासन बन जाएगा लल"

नंदोत्सव का हुआ आयोजन

ओढव/अहमदाबाद. श्री माहेश्वरी रामायण मंडल द्वारा 24वां जन्माष्टमी एवं नंद महोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जन्माष्टमी के दिन शाम को एक भजन संध्या रखी गई। सुबह नंद महोत्सव में पूरे ओढव समाज की करीब 2000 महिलाओं एवं पुरुषों ने मिलकर भव्य शोभायात्रा निकाली, जिसमें "गोविंदा मटकी फोड़" का कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। उपरोक्त कार्यक्रम के सौजन्यकर्ता अंबरेश्वरलाल असावा व रामप्रसाद काल्या थे।

नंदोत्सव का हुआ आयोजन

अमरावती. वडनेरा रोड स्थित महेश भवन में माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा नंदोत्सव मनभावन तरीके से मनाया गया। इसमें प्रतियोगिता, नृत्य, दाही हांडी आदि का विशेष आकर्षण रहा। अध्यक्ष अर्चना लाहोटी, पूर्व अध्यक्ष प्रीति डागा, सचिव सपना पनपालिया व कोषाध्यक्ष शीतल बूब के मार्गदर्शन में शृंगार ग्रुप की संगीता राठी, सोनाली राठी आदि ने कार्यक्रम का नियोजन किया। इस अवसर पर विजेताओं को पुरस्कृत करने के साथ विशेष पुरस्कार की श्रेणी में राधा कैसे न जले व गुरु सम्मान भी प्रदान किए गए।

शिक्षकों का किया सम्मान

उज्जैन. लायंस क्लब उज्जैन अवंतिका द्वारा शिक्षकों का सम्मान एवं जोन विजिट कार्यक्रम का आयोजन गत 8 सितंबर को किया गया। कार्यक्रम में अध्यक्ष शैलेंद्र राठी, सचिव मनीष मंगल, एलडी साबू, ओपी बियाणी, श्री साबू व वरिष्ठ क्लब सदस्यों द्वारा शासकीय शिक्षिकाओं का सम्मान किया गया। सदस्यों द्वारा गुलाब मेहर, सरोज पांडे, वर्षा मेहता आदि शिक्षकों का सम्मान किया।

जाखेटिया परिवार का द्वितीय महाअधिवेशन

मांडल. जाखेटिया बंधुओं द्वारा अपने गोत्रीय बंधुओं होलानी व भुवानीवाल के अखिल भारतवर्षीय द्वितीय महाअधिवेशन का आयोजन कुलदेवी जाखड़ माताजी मांडल में 19 अगस्त को किया गया। उक्त जानकारी देते हुए पार्षद केदार जागेटिया ने बताया कि 18 अगस्त को कुलदेवी के यहां रात्रि जागरण किया गया। 19 अगस्त को शोभायात्रा माहेश्वरी भवन से कस्बे के विभिन्न मार्गों से होती हुई माताजी के दरबार में पहुंची। यहां पर सभी ने माताजी के दर्शन कर परिवार की खुशहाली की कामना की। मीठालाल जागेटिया ने बताया कि माहेश्वरी भवन पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। जागेटिया परिवार के 95 वर्षीय वरिष्ठ सदस्य शंकरलाल जागेटिया एवं भरत जागेटिया चित्तौड़गढ़नगर परिषद चेयरमैन व अनेक कार्यकर्ताओं का सम्मान किया गया। मांडल माहेश्वरी समाज एवं उत्सव रिसॉर्ट द्वारा आवास एवं भोजन हेतु भवन उपलब्ध कराए गए। पार्षद केदार जागेटिया, बृजमोहन जागेटिया, मूलचंद जागेटिया, मीठालाल जागेटिया, अशोक जागेटिया, सुनील जागेटिया, सुमित जागेटिया, गोपाल जागेटिया, अनिल जागेटिया, कैलाशचंद्र जागेटिया आदि का विशेष सहयोग रहा।

मालपानी साईंटिफिक पोस्टर में प्रथम

चेन्नई. समाज की प्रतिभा श्रीमती चारु राजेश मालपानी को चेन्नई में आयोजित इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन ब्रेस्ट फीडिंग 2018 में सांईंटिफिटक पोस्टर प्रजेंटेशन के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। श्रीमती मालपानी फूड साईंस व न्यूट्रीशन की शोधार्थी हैं।

तीज कार्निवाल का हुआ आयोजन

अमरावती. माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा महेश भवन में तीज कार्निवाल का आयोजन किया गया। इसमें सर्वप्रथम वीना राठी द्वारा सतू डेकोरेशन सिखाया गया। बाद मे तीज कार्निवल में गीतों पर महिलाएं थिरकी। विमल नावंदर, रजनी नावंदर, लीलाजी, पूर्वाध्यक्ष प्रभाजी, अध्यक्ष अर्चना लाहोटी, प्रीति डागा, सपना पनपालिया आदि उपस्थित थीं।

> सुदामा ने कृष्ण से पुछा 'दोस्ती' का असली मतलब क्या है? कृष्ण ने हंसकर कहा जहाँ 'मतलब' होता है, वहाँ दोस्ती कहाँ होती है!

सीएमपी एंटरप्राइजेज का शुभारंभ

भीलवाड़ा. पीडीएल हितकर वालों के नये व्यवसाय सीएमपी एंटरप्राइजेज का शुभारंभ गत 29 अगस्त को अजमेर रोड पर हुआ। संस्थान के संचालक लक्ष्मीनारायण व चिरायु काबरा ने बताया कि सभी प्रकार के एलुमिनियम सेक्शन व उसकी एसेसरीज का होलसेल व रिटेल का कार्य होगा। इस अवसर पर शहर के अनेक गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे। नए व्यवसाय के शुभारंभ पर सभी ने काबरा परिवार को बधाई और शुभकामनाएं दीं।

मिट्टी के गणेश बनाने का दिया प्रशिक्षण

इंदौर. यदि पर्यावरण स्वस्थ रहेगा तो ही मनुष्य स्वस्थ रहेगा और चहुंओर खुशहाली एवं विकास की इबादत देखने को मिलेगी। उक्त विचार आईडीए अध्यक्ष शंकर ललवानी ने लोक संस्कृति मंच की निःशुल्क कार्यशाला में व्यक्त किए। संस्था के इस आयोजन में माहेश्वरी डीडवाना महिला मंडल (140 घर) एवं माहेश्वरी महिला संगठन मध्य क्षेत्र के संयुक्त तत्वावधान में मिट्टी के गणेशजी बनाने का निःशुल्क प्रशिक्षण दिया गया। संस्था अध्यक्ष डॉ. वीणा सोनी एवं मीनाक्षी नवाल ने बताया कि इसमें करीब 100 महिलाओं एवं युवतियों ने गणेश चतुर्थी पर्व को ध्यान में रखते हुए अपने अपने घरों में स्वनिर्मित इको फ्रेंडली गणेश बनाए। संस्था सचिव आशा सिंगी एवं अर्चना भविका ने प्रशिक्षकों का सम्मान किया गया। आभार सुषमा मालू ने माना। कार्यक्रम में विशेष रूप से सुधा मालपानी, नम्रता बियाणी, मीना मानधना आदि उपस्थित थी।

बजाज को एमएसएमई अवॉर्ड

जयपुर. हाल ही में देशभर की औद्योगिक संस्थानों की अपेक्स बॉडी 'इंडिया एस.एम.ई.फोरम' मुंबई द्वारा नईदिल्ली के पांच सितारा होटल में एक विशेष समारोह आयोजित किया गया। इसमें एक्सिस बैंक की चेयरमैन शिखा शर्मा द्वारा भारत सरकार के एम.एस.एम.ई. मंत्री (राज्यमंत्री-स्वंतत्र प्रभार) गिरिराज सिंह की उपस्थिति में जयपुर की औद्योगिक ईकाई श्री ट्रांसफॉरमर्स के सुरेंद्र-श्याम बजाज को देशभर से प्राप्त 33102 नामांकनों से चयनित कर 'टॉप 100 एम.एस.एम.ई.' अवॉर्ड प्रदान किया गया।

पुस्तक 'आदर्श जीवन' विमोचित

मदनगंज-किशनगढ़. भक्ति, धर्म एवं सांस्कृतिक ज्ञान के प्रेरक संस्थान, किशनगढ़ (राजस्थान) द्वारा गत 16 सितंबर को माहेश्वरी भवन मदनगंज में श्रीकृष्णचंद्र टवाणी की नवीन कृति 'आदर्श जीवन' पुस्तक का विमोचन किया गया। विमोचन आचार्य धर्मेंद्र पीठाधीश्वर पंचखंड भीमगिर, विराटनगर, जिला जयपुर तथा देवाचार्य डॉ. जयकृष्ण पीठाधीश्वर निम्बार्क पीठ कचारिया, कृष्णागढ़ के करकमलों से संपन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता माहेश्वरी पंचायत संस्था के अध्यक्ष मुकुटबिहारी मालपानी ने की। मुख्य अतिथि योगाचार्य डॉ. प्रेमसुख सुराणा अजमेर थे। इस अवसर पर ज्ञान मंदिर द्वारा 'अध्यात्म सेवा सम्मान 2018' से दस अध्यात्म सेवी साहित्यकारों को सम्मानित भी किया गया। इनमें से रामस्वरूप चोटिया रिसड़ा (पश्चिम बंगाल) ही उपस्थित हो सके। उन्हें माल्यार्पण कर शॉल ओढ़ाकर साहित्य भेंट किया गया। इस अवसर पर कवि सम्मेलन का भी आयोजन हुआ।

जन्माष्टमी पर्व का हुआ आयोजन

यवतमाल (महाराष्ट्र). स्थानीय माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व उत्साहपूर्वक मनाया गया। इसमें यशोदा मैया प्रेमलता माहेश्वरी बनी। चंदा काबरा, प्रेमलता माहेश्वरी, कांता गट्टानी, सिंधु लाहोटी, नीलिमा मंत्री, सुनीता बूब, वर्षा राठी, अरुणा चांडक, नीता माणधना, अलका मूंदड़ा, प्रियंका लड्ढा, शोभा मूंधड़ा आदि का विशेष सहयोग रहा। प्रियंका ने कार्यक्रम का संचालन किया। आभार पुष्पा मूंधड़ा अध्यक्ष यवतमाल माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा प्रकट किया गया।

रिएलिटी शो में सुदा सम्मानित

अमरावती. शहर की ख्यात रंगोली, मेहंदी तथा डांस कलाकार माधुरी सुदा को सोलो डांस के प्रायोजक आराधणा की ओर से प्रथम स्थान प्राप्त करने के उपलक्ष्य में सम्मान पत्र तथा 2500 रुपए के नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया। श्रीमती सुदा को रेणुका फिल्म प्रोडक्शन के डायरेक्टर तथा प्रबंधक संपादक वीसीए न्यूज की ओर से स्वर्गीय श्री धीरज जायसवाल की स्मृति में यह पुरस्कार प्रदान किया गया। उल्लेखनीय है कि श्रीमती सुदा वरिष्ठ समाजसेवी जगदीश सुदा की पुत्रवधू व स्व. श्री सतीश सुदा की धर्मपत्नी हैं।

बाहेती दंपती ने की देहदान की घोषणा

खंडवा. शहर एवं आसपास के क्षेत्रों में समाजसेवा में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले बाहेती परिवार के वरिष्ठ सदस्य, विभिन्न संस्थाओं के प्रमुख व अखिल भारतीय माहेश्वरी सभा के मुख्य चुनाव अधिकारी प्रकाशचंद्र बाहेती व उनकी धर्मपत्नी माहेश्वरी महिला मंडल की प्रदेशाध्यक्ष अरुणा बाहेती ने स्वप्रेरणा से देहदान की घोषणा की। नेत्रदान व देहदान जनजागृति समिति तथा सक्षम संस्था के नारायण बाहेती व अनिल बाहेती ने देहदान घोषणा पत्र संबंधी कार्यवाही पूर्ण की गई। हस्ताक्षरयुक्त देहदान घोषणा पत्र को अरुण बाहेती की उपस्थिति में समिति सदस्यों को सौंपा गया।

सान्निध्य को मिला मोस्ट प्रोमिसिंग प्लेयर अवॉर्ड

गुरुग्राम. वरिष्ठ समाज सदस्य राम दुजारी के पोते और मनीष दुजारी व ऋतु दुजारी के सुपुत्र सान्निध्य दुजारी को बास्केटबाल की अंडर 16 टीम में खेलने पर मोस्ट प्रोमिसिंग प्लेटर अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। वे हरियाणा की तरफ से अंडर 16 स्टेट लेवल बास्केटबॉल मैच खेलते हैं। उन्हें स्कूल में भी प्लेयर ऑफ दी अवॉर्ड प्राप्त हुआ है।

मूंधड़ा बनीं लायंस की महिला सचिव

मालेगांव. समाजसेवी सुमिता राजकुमार मूंधड़ा का लायंस क्लब ऑफ मालेगांव साऊथ में पहली महिला सचिव वर्ष 2018-19 के लिए निर्वाचित हुईं। उल्लेखनीय है कि श्रीमती मूंधड़ा विभिन्न सामाजिक संस्थाओं में भी सक्रिय सदस्य हैं।

क्रोध के क्षण में धैर्य का एक पहल दुःख के हजारों पलों से बचे रहने में हमारी सहायता करता है।

एक दिवसीय यात्रा का आयोजन

बदनावर (धार). माहेश्वरी सेवा संगठन द्वारा कोटेश्वर महादेव बखतगढ़ (बदनावर) के पास एक दिवसीय यात्रा का आयोजन किया गया। आयोजनकर्ता ओमप्रकाश झंवर, नरेंद्र बाहेती, रमेश डारिया एवं पप्पू भंसाली थे। इस अवसर पर सदस्यों के लिए कपल गेम, हाऊजी आदि का आयोजन किया गया। सचिव सुनील डांगरा ने बताया कि इस यात्रा में रतनकिरण धूत, सुनील संगीता डांगरा, घनश्याम उषा लोहिया, संतोष राजकुमारी काबरा, नरेंद्र सुमिता चौखड़ा, ओमप्रकाश सरिता झंवर, नरेंद्र मधु बाहेती, डॉ. बीएन साधना तापड़िया, द्वारकाधीश मधु धूत, रमेश सरिता डारिया आदि उपस्थित थे।

बजाज का हुआ सम्मान

चंद्रपुर. जिला पतंजलि योग समिति द्वारा गुरु पूर्णिमा के अवसर पर ख्यात समाजसेवी दिनेश बजाज का शॉल, श्रीफल एवं स्मृति चिह्न देकर सत्कार किया गया। श्री बजाज ने गरीब क्षेत्रों में लायंस के माध्यम से अभी तक मोतियाबिंदु के 20 हजार सफल ऑपरेशन करवाए हैं। मोतियाबिंदु के कैंप लगाने के लिए वे हमेशा ही प्रयत्नशील रहते हैं।

'नानीबाई रो मायरो' का होगा आयोजन

ओढव (अहमदाबाद). श्री माहेश्वरी रामायण मंडल द्वारा व्यास पीठाचार्य संतश्री रमताराम जी महाराज के शिष्य संतश्री दिग्विजयरामजी महाराज के मुखारविंद से आगामी 21 से 24 दिसंबर तक नानीबाई का मायरो का आयोजन किया जाएगा। कथा स्थल वस्त्रालय पार्टी प्लॉट, माधव स्कूल रोड, वस्त्रालय अहमदाबाद रहेगा।

> "जो व्यक्ति 'स्पष्ट, साफ़, सीधी' बात करता है उसकी वाणी तीव्र और कठोर होती है। लेकिन ऐसा 'व्यक्ति' कभी किसी को धोखा नहीं देता? 'सीधे और सच्चे बनें'"

वर्षभर पौधारोपण का संकल्प

इंदौर. लायंस क्लब ऑफ इंदौर और लायंस क्लब ऑफ इंदौर ईस्ट के संयुक्त तत्वावधान में हरियाली का संदेश देते हुए वर्ष भर पेड़-पौधे लगाने का संकल्प लिया गया। इसके अंतर्गत इंदौर के प्रथम बटालियन पुलिस सामुदायिक भवन पोलो ग्राउंड में पौधारोपण किया गया। लायंस क्लब ऑफ इंदौर की अध्यक्ष सुशीला मेहता और लायंस क्लब ऑफ इंदौर ईस्ट अध्यक्ष मधुसूदन भलिका ने बताया कि इसमें 101 पौधे लगाए गए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि इंदौर एस.पी. मनीष अग्रवाल और डिस्ट्रिक्ट गवर्नर निर्मल जैन थे।

महासभा पदाधिकारियों का भ्रमण

पिपरिया. अ.भा.मा. महासभा सभापति श्याम सोनी व अन्य पदाधिकारियों द्वारा पिपरिया में संगठन आपके द्वार कार्यक्रम के अंतर्गत समाजजनों से संपर्क किया गया। इस अवसर पर मध्य क्षेत्र पूर्वी सभा प्रदेशाध्यक्ष विजय राठी ने भी समाज हित में बात रखी। प्रदेश मानद मंत्री लक्ष्मेंद्र माहेश्वरी, अ.भा.माहेश्वरी युवा संगठन के संगठन मंत्री दीपक चांडक, प्रदेश नर्मदांचल उपाध्यक्ष ओमप्रकाश मूंदड़ा, संयुक्त मंत्री अजय घुरका, होशंगाबाद हरदा जिलाध्यक्ष बालकिशन टावरी, सचिव अमित बीसानी साथ थे। माहेश्वरी सेवा मंडल अध्यक्ष नरसिंहदास के नेतृत्व में संगठन के कृष्णकुमार सराफ, महिला परिषद अध्यक्ष बीना मूंदडा, सचिव अरुणा मूंदड़ा, युवा संगठन अध्यक्ष निखिल सराफ, सचिव पराग लोया आदि ने समाज हित में चर्चा की।

बच्चों को बांटी शिक्षण सामग्री

गंजबासौदा (विदिशा). स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर माहेश्वरी महिला मंडल ने बच्चों के चेहरों पर मुस्कान बिखेरी। मंडल ने बेदनखेड़ी स्थित लक्ष्मीबाई मावि में जाकर बच्चों को शिक्षण सामग्री और मिठाई बांटी। इस दौरान मंडल की पद्मा परवाल, आशा मूंदड़ा, संतोष मूंदड़ा, आशा पलोड़, नेहा पलोड़, राधिका सर्राफ, उषा माहेश्वरी, उषा मूंदड़ा, संगीता मूंदड़ा, रंजना मूंदड़ा आदि मौजूद थीं। बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम की रंगारंग प्रस्तुतियां भी दीं।

डॉ. मूंदड़ा को समाजसेवा रत्न

भीलवाड़ा. अंतरराष्ट्रीय माहेश्वरी कपल क्लब भारत की भीलवाड़ा जिला शाखा के तत्वावधान में चाइल्ड कॅरियर गाइडेंस कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें बड़ौदा के ख्यात चाइल्ड स्पेशलिस्ट डॉ. किशन मूंदड़ा ने मुख्य वक्ता के रूप में वर्कशॉप को संबोधित किया। इस अवसर पर मेडिकल क्षेत्र में डॉ. मूंदड़ा द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यों के लिए क्लब के राष्ट्रीय महासचिव डॉ. अशोक सोडाणी, प्रांतीय अध्यक्ष सुरेश सोनी एवं जिलाध्यक्ष राकेश जागेटिया द्वारा उन्हें 'माहेश्वरी समाजसेवा रत्न अवॉर्ड' से सम्मानित किया गया।

डॉ. कविता चांडक ने प्रस्तुत किया शोध पत्र

नागपुर. शहर की ख्यात होम्योपैथिक विशेषज्ञ डॉ. कविता चांडक ने 73वीं वर्ल्ड होम्योपैथी अंतरराष्ट्रीय परिषद में अपने दो शोध पत्र प्रस्तुत किए। इसमें उन्होंने मानसिक विकार, डिप्रेशन, हिस्टीरिया एवं आत्महत्या की प्रवृत्ति आदि पर तो प्रकाश डाला ही साथ ही में ऑटीजम नामक बीमारी पर विस्तार से शोध पत्र प्रस्तुत किया। उनका दूसरा शोध पत्र दांतों के विकार में महत्वपूर्ण स्टेरॉईड्स को होम्योपैथी के योगदान से कैसे कम किया जा सकता है, इस विषय पर था। इसके लिए उन्होंने दो वर्ष तक डेंटिस्ट डॉ. संजोग चांडक के सहयोग से शोध किया। डॉ. चांडक अभी तक देश-विदेश में कई सेमिनारों में भाग ले चुकी हैं।

> "जब भी चुनौतियाँ आयें, जितनी बार भी आप गिरो, उठना सीखो। अगर उठोगे, खड़े रहोगे, आगे बड़ोगे, तभी सफलता के सर्वोच्च शिखर को छू पाओगे ? 'परिस्थिति से हार ना माने'"

पेपर क्रॉफ्ट से की गणाधिराज की सजावट

रायपुर (छग). कूल होम्स सोसायटी, मोवा निवासी मीना शैलेंद्र माहेश्वरी के निवास में विराजित श्री गणनायक की सजावट क्षेत्र में चर्चा का केंद्र बनी रही। यह झांकी सादगीपूर्ण, अनूठी व कलात्मकता से भरपूर थीं। मीना ने बताया कि मिट्टी से निर्मित श्री गणेश जी प्रतिमा स्थल की सजावट हेतु पुराने अखबार व पत्रिकाओं के पन्नों को फोल्ड कर छोटी-बड़ी पंखी, सर्कल, रिंग, दीया स्टैंड, झालर, तोरण आदि के शेप्स देकर सजावट की। सजावट का आइडिया उन्हे पति शैलेंद्र ने दिया। साकार करने में परिवार के सदस्यों पायल, यश और शैली ने सहयोग दिया।

चाय विक्रेता संस्थान में माहेश्वरी

भीलवाड़ा. जिला चाय विक्रेता संस्थान में अध्यक्ष महेश जाजू चुने गए। श्री जाजू ने अपनी कार्यकारिणी में संरक्षक नवरतन मल झाबक व मनोहरलाल सूरिया, कोषाध्यक्ष दिनेश राठी, सचिव अंकित लखोटिया, वरिष्ठ उपाध्यक्ष संपत सोमाणी, उपाध्यक्ष नवरतन सूरिया व मुकेश पलौड़, सहसचिव विकास मूंदड़ा तथा प्रचार प्रसार मंत्री पद पर मनीष झंवर आदि को शामिल किया है।

पुलिस बिन एक दिन

जोधपुर. समाज में पुलिस के महत्व और आम जनता के प्रति एक-दूसरे के कर्तव्यों को रेखांकित करते हुए पुलिस पब्लिक प्रेस द्वारा पुलिस पब्लिक रिलेशनशिप सेमिनार 'पुलिस बिन एक दिन' का आयोजन गत 22 सितंबर को सूचना केंद्र में किया गया। मुख्य अतिथि पूर्व न्यायाधिपति गोपालकृष्ण व्यास थे। महिला आयोग की सदस्या डॉ. नीलम मूंदड़ा ने अध्यक्षता की। कार्यक्रम में राष्ट्रीय संपादक पवन भूत ने पुलिस पब्लिक प्रेस की कार्यप्रणाली तथा कार्यक्रम के मुख्य विषय 'पुलिस बिन एक दिन' पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम संयोजक कैलाशचंद्र लढा थे।

पश्चिमी मप्र प्रादेशिक सभा ने की सुखद दाम्पत्य के रिश्ते जोड़ने की तैयारी

संगठन का अनुपम प्रयास 20 से 22 अक्टूबर तक इंदौर में होगा अभा युवक-युवती परिचय सम्मेलन का आयोजन

इंदौर. पश्चिमी मप्र प्रादेशिक माहेश्वरी सभा आगामी 20 से 22 अक्टूबर तक इंदौर के दस्तूर गार्डन (फूटी कोठी) पर विवाह योग्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन आयोजित करने जा रही है। इस आयोजन की विशेषता यह होगी कि इसका पंजीयन शुल्क कम से कम रखने का प्रयास किया गया है, वहीं इसमें बिना किसी भेदभाव के सभी प्रकार के प्रत्याशियों को शामिल किया जाएगा। सम्मेलन के मुख्य संयोजक डॉ. रवींद्र राठी ने बताया कि इस त्रिदिवसीय आयोजन में देशभर में 1500-2000 प्रत्याशी शामिल होंगे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गुजरात प्रांतीय माहेश्वरी सभा अध्यक्ष आरआर कॉबेल के प्रमुख त्रिभुवन काबरा होंगे। विशेष अतिथि के रूप में उपसभापति मोहन राठी (दुर्ग), लखनलाल नागोरी (खंडवा), जगदीश सोमानी तथा विद्या वायर्स के प्रमुख श्यामसुंदर राठी उपस्थित रहेंगे। कार्यक्रम के स्वागताध्यक्ष वासुदेव काबरा होंगे। पश्चिमांचल के समस्त जिलाध्यक्ष, तहसील अध्यक्ष, महासभा के सदस्य तथा विवाह प्रकोष्ठ से जुड़े समस्त पदाधिकारी उपस्थित रहेंगे।

सभी व्यवस्था तैयार

इस आयोजन की सभी व्यवस्थाओं को आयोजन समिति अंतिम रूप दे चुकी है। तीनों दिवस के इस परिचय सम्मेलन का आयोजन फूटी कोठी स्थित दस्तूर गार्डन में ही होगा। भोजन व्यवस्था अक्षत गार्डन में रहेगी। आगंतुकों के आवास की व्यवस्था दस्तूर गार्डन के साथ अक्षत गार्डन, सुरुचि गार्डन, चिड़ियाघर स्थित माहेश्वरी भवन तथा महेश नगर स्थित माहेश्वरी भवन में रहेगी। आवास स्थल ऐसे ही तय किए गए हैं जहां से आवागमन अत्यंत आसान हो।

आमजन की पहुंच में पंजीयन

आम व्यक्ति तक इस आयोजन का लाभ पहुंचे, इसके लिए इसमें शामिल होने के लिए प्रत्याशियों का पंजीयन शुल्क मात्र एक हजार रुपए रखा गया है। इसमें प्रत्याशी तथा अभिभावक की भोजन व चाय नाश्ता की व्यवस्था भी शामिल रहेगी। मात्र 500 रुपए शुल्क में आवास व्यवस्था प्राप्त की जा सकेगी। पत्रिका मिलान से लेकर काउंसलर तक की व्यवस्था उपलब्ध होगी। कार्यक्रम के दौरान समाज के वरिष्ठ माणकचंद लड्ढा (लड्ढा टेंट हाउस वाले) व श्रीमती गीताबाई लड्ढा गुणावद वालों का सम्मान किया जाएगा।

गणेश चतुर्थी पर पौधारोपण

गुना. स्थानीय माहेश्वरी मंडल द्वारा गणेश चतुर्थी के अवसर पर पौधारोपण सार्वजनिक स्थान पर किया गया। इसमें करीब 100 पौधे लगाए गए, जिसमें नीम, आम, जामुन आदि के उपयोगी पौधे शामिल थे। अध्यक्ष आशा राठी, नीलिमा लाहोटी, लक्ष्मी राठी, प्रमिला लड्ढा सहित कई सदस्याएं मौजूद थीं।

राधाष्टमी का हुआ आयोजन

रायपुर. माहेश्वरी महिला समिति गोपाल मंदिर द्वारा प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी राधाष्टमी पर भजनों का आयोजन किया गया। राधिका बागड़ी एवं नीलू बागड़ी ने अपने भजनों से लोगों को मंत्रमुग्ध कर सभी को नृत्य करने पर मजबूर कर दिया। राधा के रूप में हमसिखा नत्थानी उपस्थित थीं। इस कार्यक्रम में मध्यांचल उपाध्यक्ष ज्योति राठी, समिति की अध्यक्ष संगीता चांडक, सचिव प्रगति कोठारी, नंदा भट्टर, नीता लाखोटिया, कविता दम्मानी, भावना मर्दा, शशि बंग, नीता बजाज, शशि मोहता, नीता केला, एवं सलाहकार समिति से शशि बागड़ी, मधुरिका नथानी, सुनीता लड्ढा आदि समस्त कार्यकारिणी सदस्याओं का विशेष सहयोग मिला।

बरखा विशेष कार्योपलब्धि से सम्मानित

शेगांव. (अहमदनगर). इस छोटी सी तहसील से होकर भी ब्यूटीशियन का कार्य पूरे भारत में करनेवाली बरखा सचिन बाहेती को कला क्षेत्र का विशेष कार्योपलब्धि पुरस्कार प्रदान किया गया। महाराष्ट्र प्रदेश सभा द्वारा सन 2018 में देने वाले प्रदेशस्तरीय पुरस्कारों में कला क्षेत्र के पुरस्कार हेतु बरखा बाहेती का चयन हुआ था। इस समारोह में ब्रिजलाल बाहेती तथा अहमदनगर जिला माहेश्ववरी सभा के मानद मंत्री अजय जाजू के करकमलों द्वारा श्रीमती बाहेती को सम्मानित किया गया। जिला संयुक्त मंत्री द्वारकानाथ बिहाणी, जिला संगठन मंत्री ओमप्रकाश धूत, शेवगांव तहसील के पूर्व अध्यक्ष विजय दरक, अध्यक्ष मनीष बाहेती, जिला युवा प्रतिनिधि कन्हैयालाल सारडा, दिलीप मूंदड़ा, जगदीश मानधने, नंदुशेठ सारडा तथा सुभाष बाहेती, मीराबाई बाहेती, सचिन बाहेती आदि मौजूद थे।

इस बात पर ध्यान दिए बिना कि कोई हमें देख रहा है या नहीं किसी काम को सही ढंग से करना मात्र ही अनुशासन है।

श्री विक्रमादित्य पंचांग कार्तिकादि का हुआ विमोचन

पाठकों के बीच ''घर का पंडित'' की प्रतिष्ठा रखता है यह पंचांग

उज्जैन. प्रतिष्ठित प्रकाशन समूह ''ऋषि-मुनि'' द्वारा प्रकाशित लोकप्रिय ''श्री विक्रमादित्य पंचांग (कार्तिकादि) के संवत् 2075-76, सन् 2018-19 'परिधावी' संवत्सर के नवीन अंक का विमोचन गरिमामय कार्यक्रम में हुआ। इस अवसर पर शहर के कई गणमान्यजन उपस्थित थे।

श्री विक्रमादित्य पंचांग का विमोचन प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान भारतीय ज्ञानपीठ में आयोजित कार्यक्रम में हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ख्यात वरिष्ठ शिक्षाविद् व समाजसेवी कृष्णमंगलसिंह कुलश्रेष्ठ थे। इस अवसर पर श्री कुलश्रेष्ठ ने इस पंचांग के अपने लक्ष्य पर खरा उतरने की शुभकामनाएं दी गईं। प्रकाशक पुष्कर बाहेती ने पंचांग के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि श्री विक्रमादित्य पंचांग ऋषि-मुनि प्रकाशन द्वारा गत 20 वर्षों से सतत रूप से कार्तिकादि रूप में प्रकाशित हो रहा है। लक्ष्य था, विभिन्न मुहूर्तों तथा ज्योतिषिय गणनाओं को सरलतम ढंग से पाठकों तक पहुंचाना, जिसमें ज्योतिष की सामान्य जानकारी रखने वाला पाठक भी इससे लाभांवित हो सके। इसी प्रयास का परिणाम है कि आज 'श्री विक्रमादित्य पंचांग' क्षेत्र ही नहीं बल्कि संपूर्ण प्रदेश में लोकप्रियता के शिखर पर है और उसकी पहचान 'घर का पंडित' के रूप में बन चुकी है। पंचांग की सम्पादन सहयोगी रजनी कुलश्रेष्ठ ने पंचांग की विशेषताओं के बारे में बताया कि यह ग्रहलाघवीय गणना पद्धति से तैयार है और इसमें सुक्ष्म तथा सटिक गणना की गई है। विभिन्न प्रमुख अवसरों के सभी मुहूर्त भी स्पष्ट किये गये हैं, जिससे आम व्यक्ति भी अपनी आवश्यकता के अनुसार सामान्य मुहूर्त देख सकते हैं। अन्य आवश्यक जानकारियाँ भी समाहित की गई हैं, जो पाठकों को अवश्य पसंद आएंगी।

ऋतु भ्रमण का किया आयोजन

उदयपुर. महेश महिला सोसायटी द्वारा नयाखेड़ा स्थित फॉर्म हाउस एवं नांदेश्वरजी में प्राकृतिक सावन ऋतु भ्रमण का आयोजन सोसायटी की अध्यक्ष मंजू मूंदड़ा के सान्निध्य में किया गया। सचिव नीलम पेड़ीवाल ने बताया कि अरावली की पर्वतमाला में बसे श्री नांदेश्वर धाम में करीब 40 महिलाओं ने जल क्रीड़ा एवं भजनों का आनंद लिया। दीक्षा मंत्री के नेतृत्व में विभिन्न खेलों का आयोजन हुआ। अनिता माहेश्वरी को समाजसेवा के लिए स्मृति चिह्न भेंटकर एवं ऊपरना ओढ़ाकर उर्मिला देवपुरा एवं सुनीता राठी द्वारा सम्मानित किया गया। संरक्षक राकेश मूंदड़ा के सहयोग से अल्पाहार एवं मौसमी पकवानयुक्त भोजन का आयोजन किया गया। शोभा कालानी एवं राजश्री सोमानी ने आभार व्यक्त किया। भ्रमण में ग्रीन व क्लीन उदयपुर का संदेश प्रेम अजमेरा, मधु मूंदड़ा एवं किरण मंडोवरा द्वारा दिया गया।

डॉ. पल्लवी को गोल्ड मेडल

बूंदी. दिल्ली के विज्ञान भवन में नेशनल बोर्ड ऑफ एक्जामिनेशन के तत्वावधान में आयोजित 19वें दीक्षांत एवं पुरस्कार वितरण समारोह में बूंदी की डॉ. पल्लवी सराफ काबरा को गोल्ड मेडल से नवाजा गया। समारोह के मुख्य अतिथि उपराष्ट्रपति वैंकेया नायडू व अध्यक्षता कर रहे केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा ने डॉ पल्लवी को चिकित्सा के क्षेत्र में स्नातकोत्तर स्तर की परीक्षा डीएनबी की पैथोलॉजी ब्रांच में पूरे भारत में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर यह सम्मान प्रदान किया। इनके पति शुभम काबरा गुड़ानाथावतान निवासी भी वर्तमान में उदयपुर में चिकित्सा के क्षेत्र में सेवारत हैं।

आपणो उत्सव के रूप में मना वार्षिकोत्सव

वर्धा. परिवर्तन संसार का नियम है, जो सभी पर लागू है। बच्चों की पढ़ाई, नौकरी आदि के कारण संयुक्त परिवारों का विघटन होकर एकल परिवारों का चलन बढ़रहा है, पर जड़ों से कटकर ना रहिये, बुजुर्गों के आशीर्वाद मिलते रहें, ऐसी व्यवस्था बनाए रखना होगी। यह विचार मिहान के चेयरमैन तथा मैनेजिंग डायरेक्टर आईएएस सुरेश काकाणी मुंबई ने व्यक्त किए। वे माहेश्वरी मंडल वर्धा के वार्षिकोत्सव आपणो उत्सव में प्रमुख अतिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर महेश पत्र संस्था की ओर से केरल आपदा के लिए 21 हजार रुपए भी महासभा को सौंपे तथा गोविंद राठी एवं श्रीकांत परिवार की ओर से एक लाख रुपए की सहायता राशि दी गई। वर्धा के जिलाधीश आईएएस शैलेष नवाल ने सोशल मीडिया के प्रभावी उपयोग की जानकारी दी। मंडल अध्यक्ष कमल भूतड़ा एवं महिला संगठन अध्यक्ष शोभा गांधी ने स्वागत भाषण दिया। इस अवसर पर जीवन के 71 वर्ष पूर्ण करने वाले बुजुर्गों तथा विवाह के 50 वर्ष पूर्ण करने वाले दंपतियों के सम्मान के साथ मेधावी विद्यार्थियों को गोपीरतन पारिवारिक न्यास द्वारा 25 हजार के नकद इनाम भी दिए गए। समन्वयक राजकुमार जाजू द्वारा संपादित बुलेटिन समाज प्रवाह का विमोचन भी अतिथियों से करवाया गया। कमलकिशोर भूतड़ा, युवा सचिव जितेंद्र मोहता, महिला मंडल अध्यक्ष शोभा गांधी, नवयुवती अध्यक्ष निमिशा टावरी एवं ट्रस्टी विजय मोहता भी मंचासीन थे।

सम्मान समारोह का हुआ आयोजन

जयपुर. श्री माहेश्वरी समाज जयपुर का तृतीय सम्मान समारोह गत 9 सितंबर को माहेश्वरी विद्यालय तिलक नगर में आयोजित किया गया। समाज महामंत्री संजय माहेश्वरी ने बताया कि श्री माहेश्वरी समाज जयपुर द्वारा वर्ष 2016 से आयोजित हो रहे सम्मान समारोह में प्रतिवर्ष अभा स्तर पर समाज को अपनी असाधारण सेवाओं से गौरवान्वित करने वाली देश की 3 वरिष्ठ विभूतियों को माहेश्वरी भारत गौरव सम्मान एवं अपनी अद्वितीय सेवाएं एवं सहयोग प्रदान करने वाले जयपुर माहेश्वरी समाज की 3 विभूतियों को माहेश्वरी समाज रत्न सम्मान से विभूषित किया जाता है। इसी क्रम में इस बार समाजसेवी बालकृष्ण रामधर लखोटिया (मुंबई), विद्वान व उद्योगपति सिम्पलेक्स इंफ्रा लि. के. चेयरमैन डॉ. विट्ठलदास मूंधड़ा (कोलकाता) तथा एलन कॅरियर इंस्टिट्यूट के संस्थापक गोविंद माहेश्वरी कोटा को माहेश्वरी भारत गौरव सम्मान से अलंकृत किया गया। समाज को अपनी दीर्घकालिक सेवाएं देने वाले समाज संरक्षक गिरिराजप्रसाद भूतड़ा, पूर्व अध्यक्ष बालकिशन सोमानी तथा पूर्व महामंत्री मनोहरलाल सारडा को माहेश्वरी समाज रत्न सम्मान से अलंकृत किया गया। समाज अध्यक्ष सत्यनारायण काबरा एवं पदाधिकारियों ने अतिथियों का स्वागत किया। उक्त जानकारी अध्यक्ष सत्यनारायण काबरा एवं महामंत्री संजय माहेश्वरी ने दी।

गरबा एवं कुकिंग के गुर सिखाए

महू. श्री माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा गरबा एवं कुकिंग की वर्कशॉप आयोजित की गई थी। गरबा का प्रशिक्षण इंदौर की प्रसिद्ध कोरियोग्राफर एवं फोक फिटनेस की ट्रेनर शैली अजमेरा ने दिया। उन्होंने बेसिक गरबा, वालीबुड फ्री स्टाइल और फिटनेस गरबा सिखाया गया। कुकिंग की वर्कशॉप में इंदौर की ख्यात पाकशास्त्री रेखा पंडित द्वारा इटालियन एवं कॉटीनेंटल डिशेस बनाना सिखाया। इन वर्कशॉप में अध्यक्ष किरण माहेश्वरी, पद्मा सोडानी, प्रेमलता सोढानी, लता लड्ढा आदि सहित समस्त सदस्याएं मौजूद थीं।

अगर एकाग्रता नहीं है, तो योग्यता होते हुए भी किसी कार्य को पूर्ण नहीं किया जा सकता ?
'अपने लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करें'

महिला गौरव ने दिया योगदान

उदयपुर. सुरभि (सांस्कृतिक) माहेश्वरी महिला गौरव द्वारा सावन के महीने में सावन उत्सव व लहरिया प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विजेताओं को मुख्य संरक्षक कौशल्या गट्टानी द्वारा पारितोषिक दिया गया। अध्यक्ष सरिता न्याती, सचिव आशा नारानीवाल सहित अनेक महिलाओं ने भाग लिया। समिति द्वारा अपने में व समाज में बदलाव की सोच के साथ सेंट्रल जेल उदयपुर में कैदियों के साथ सत्संग भवन में नृत्य, नाटक आदि का कार्यक्रम आयोजित किया गया। श्री गट्टानी के नेतृत्व में 35-40 महिलाएं मौजूद थीं। सुषमा समिति द्वारा श्रीमती गट्टानी के नेतृत्व में महेश सेवा संस्थान के महेश शिक्षा सदन का लोकार्पण उच्च शिक्षा मंत्री किरण माहेश्वरी के साथ किया गया।

एक्यूप्रेशर पद्धति से निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन

बीकानेर. हर वर्ष की भांति सर्व जन हिताय सर्वजन सुखाय की भावना को ध्यान में रखते हुये एक्यूप्रेशर पद्धति से 14 दिवसीय चिकित्सा शिविर का आयोजन गत 26 सितंबर से 9 अक्टूबर 2018 तक श्री प्रीति क्लब व रोटरी क्लब बीकानेर मिडटाउन के संयुक्त तत्वावधान में माहेश्वरी सदन, जस्सूसर गेट के बाहर किया जा रहा है। माहेश्वरी सदन भी इसमें सहभागिता निभायेगा ताकि विशाल जन मानस इस शिविर का लाभ उठा सके।

श्री प्रीति क्लब के अध्यक्ष घनश्याम कल्याणी ने बताया कि इस चिकित्सा शिविर में जसवंतगढ़मूल के कोलकाता निवासी डॉ. ललितकुमार सोमानी अपनी सेवा देंगे। वे असाध्य रोग जैसे कि लकवा, पोलियो, गठिया, दमा, घुटनों का दर्द, माइग्रेन, साइनस, साइटिका आदि रोगों का इलाज करेंगे। श्री प्रीति क्लब के सचिव नारायण दम्माणी ने बताया कि शिविर का प्रबंधन महेश राठी परिवार, कोलायत द्वारा अपने स्मृति शेष परिजनों की याद में किया जाता है। रोटरी क्लब बीकानेर मिडटाउन के सचिव रघुवीर झंवर ने बताया शिविर का उदघाटन सुबह 9.30 पर उत्तरी राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी संगठन के अध्यक्ष सोहनलाल गट्टाणी व यूआईटी चेयरमैन श्री महावीर रांका द्वारा संयुक्त रूप ने किया

दहशत से ज़रा सी भी शक्ति नहीं मिलती है। शांत, स्थिरचित्त और सकारात्मक बने रहने का निणय्र लें ?
'दहशत में न आएँ.. मस्त रहो... व्यस्त रहो'

रक्षाबंधन का सामूहिक आयोजन

नासिक. श्री माहेश्वरी बालाजी मंदिर ट्रस्ट नाशिक नगर माहेश्वरी सभा द्वारा प्रथम बार सामूहिक रक्षाबंधन का आयोजन गत 26 अगस्त को किया गया। शहर सभा की ओर से सुबह नाश्ता से लेकर शाम को रक्षाबंधन तक साथ में आयोजित किए गए। हर एक बहन को साड़ी, मिठाई, पूजा की थाली भेंट की गई। बहनों के लिए प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जीतने वाली बहनों को पारितोषिक से सम्मानित किया गया। झूला के गीत, सांस्कृतिक कार्यक्रम के आनोखे आयोजन से सामूहिक रक्षाबंधन कार्यक्रम में बहनों की खुशियां समा नहीं पा रही थीं। उक्त जानकारी चेयरमैन जयप्रकाश जातेगांवकर ने दी।

को-ऑपरेटिव सोसायटी के चुनाव संपन्न

बूंदी. श्री महेश क्रेडिट को-ऑपरेटिव सोसायटी लिमिटिड के पदाधिकारियों के हुए चुनाव गत दिनों संपन्न हुए। इसमें संजय लाठी अध्यक्ष, चतुर्भुज गुप्ता उपाध्यक्ष, नारायण मंडोवरा सचिव व सोहनलाल बाहेती कोषाध्यक्ष चुने गए। निर्वाचन अधिकारी ओमप्रकाश शर्मा ने बताया कि निर्धारित चुनाव कार्यक्रम अनुसार चूड़ी बाजार स्थित माहेश्वरी पंचायत भवन में चार पदों के लिए नामांकन दाखिल हुए। अन्य कोई नामांकन दाखिल नहीं होने के कारण चारों पदों पर निर्विरोध निर्वाचित घोषित किये गए।

अभा माहेश्वरी युवक-युवती परिचय पुस्तिका का होगा प्रकाशन

जयपुर. जिला माहेश्वरी सभा समिति द्वारा अभा माहेश्वरी विवाह योग्य युवक-युवती की रंगीन परिचय पुस्तिका का प्रकाशन होने जा रहा है। इसके संयोजक मालचंद बाहेती हैं। अध्यक्ष रामअवतार आगीवाल तथा मंत्री कन्हैयालाल छापरवाल ने बताया कि इसमें बायोडॉटा प्रकाशन के लिए पंजीयन शुल्क 500 रुपए तथा 100 रुपए का डाक खर्च सहित 30 नवंबर तक पंजीयन करवाया जा सकता है। प्रविष्टि कृष्णाधाम वृद्धाश्रम प्लाट नंबर 10 ए, सेक्टर-2, विद्यानगर जयपुर को प्रेषित की जा सकती है। इसमें सभी वर्ग के प्रत्याशियों के बॉयोडाटा शामिल किए जाएंगे।

पश्चिमी उप्र में सेवा यात्रा

कानपुर. पश्चिमी उत्तरप्रदेश महिला संगठन' द्वारा अध्यक्ष विनीता राठी व सचिव मंजू हरकुट के नेतृत्व में माह अगस्त में विभिन्न सेवा गतिविधियों का आयोजन किया गया। इसमें गाजियाबाद मंडल द्वारा तीज महोत्सव में उत्तरांचल सहसचिव शर्मिला राठी का मुख्य अतिथि के रूप में सम्मान किया गया। सुश्रिता तीज के उपलक्ष्य में प्रदेश के करीब 20 शहरों में फैंसी ड्रेस, लघुनाटिका, मेहंदी व नृत्य आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। विभिन्न मंडलों द्वारा लागत मूल्य पर आटा वितरित किया गया। मोदीनगर मंडल द्वारा समाज की जरूरतमंद महिलाओं को सम्मानित किया गया। फिरोजाबाद में तीन अथवा उससे अधिक बेटियों की माताओं को सम्मानित किया गया। मोदीनगर मंडल द्वारा गांव में स्कूल की बच्चियों को सेनेटरी पेड्स बांटे गए। इसी प्रकार सुकीर्ति, सुलेखा, संचारिका, सौष्ठा, सुरभि, सुरम्या, संवरना, सुषमा, शुचिता आदि समितियों द्वारा विभिन्न स्थानों पर सेवा गतिविधियां आयोजित की गईं।

क्रेडिट को ऑपरेटिव के चुनाव संपन्न

बूंदी. श्री महेश क्रेडिट को-ऑपरेटिव सोसायटी लिमिटेड के पदाधिकारियों के चुनाव गत दिनों संपन्न हुए। इसमें संजय लाठी अध्यक्ष, चतुर्भुज गुप्ता उपाध्यक्ष, नारायण मंडोवरा सचिव व सोहनलाल बाहेती कोषाध्यक्ष चुने गए। निर्वाचन अधिकारी ओमप्रकाश शर्मा ने बताया कि नवनिर्वाचित पदाधिकारियों व संचालक मंडल सदस्यों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई गई। निर्वाचन के प्रमाण-पत्र प्रदान किए। चुनाव में विजयी रहे प्रगतिशील पैनल के सभी निर्वाचित सदस्यों ने सदर बाजार स्थित श्री कल्याणराय मंदिर जाकर दर्शन किए व सोसायटी की उत्तरोत्तर प्रगति की कामना की।

> यदि आप कुछ नकारात्मक से शुरू करते हैं, तो कोई भी इसे पसंद नहीं करेगा। पहला संवाद हमेशा सकारात्मक होना चाहिए जो लाभार्थी में वास्तविक आशा जगाये ?
> 'हाँ से प्रारंभ करें'

सातुड़ी तीज उत्सव

इंदौर. श्री बालाजी क्षेत्र माहेश्वरी सखी संगठन द्वारा सातुड़ी तीज उत्सव सुरुचि गार्डन स्कीम 71 पर डॉ प्रीति माहेश्वरी व रीमा भूतड़ा के आतिथ्य में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर देवरानी-जेठानी, सास-बहू, ननद-भौजाई आदि अलग-अलग शृंगार करके आईं व तीज के गीतों पर झाले, विभिन्न ग्रुपों में अंताक्षरी, डांस व गीत प्रतियोगिता में सक्रियता से सहभागिता करते हुए रंगारंग प्रस्तुतियां देकर विजयी हुईं और आकर्षक पुरस्कार प्राप्त किए। इस अवसर पर श्री बालाजी क्षेत्र माहेश्वरी महिला संगठन की अध्यक्ष सीमा गगरानी, संगठन संरक्षक मीना ईनानी, अध्यक्ष सुमन सोनी, सचिव पायल लाठी, संस्थापक अध्यक्ष माधुरी सोमानी, संयोजक धीरा सोमानी, रश्मि लड्ढा, प्रियंका भलिका, रीना मानधन्या सहित कई सदस्याएं मौजूद थीं। कार्यक्रम का संचालन माधुरी सोमानी ने किया। अंत में सचिव पायल लाठी ने आभार माना।

सत्तू सजाओ में माहेश्वरी प्रथम

धार. स्थानीय माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा सत्तू सजाओ प्रतियोगिता सांवरिया सेठ मंदिर में आयोजित की गई। इसमें प्रथम पुरस्कार सुनीता महेशचंद्र माहेश्वरी (परवाल) को दिया गया। इसमें विशेष सहयोग उनकी पुत्रवधू रक्षा परवाल एवं रूपाली परवाल का रहा। यह कार्यक्रम सातुड़ी तीज के उपलक्ष्य में आयोजित करवाया गया।

खींवज माता की यात्रा का आयोजन

जोधपुर. अभा भूतड़ा समिति द्वारा पिछले 33 वर्षों की भांति इस वर्ष भी होमष्टमी के शुभ अवसर पर 17 अक्टूबर को प्रातः 8 बजे आखलिया चौराहा से विशेष बस द्वारा भूतड़ा परिवार के सदस्यों की खींवज मातेश्वरी पोकरण (जिला-जैसलमेर, राजस्थान) के मंदिर की संघ यात्रा का आयोजन किया जाएगा। अध्यक्ष देवकिशन भूतड़ा व सचिव सुरेशचंद्र भूतड़ा ने बताया कि जो सदस्य इस यात्रा में सम्मिलित होना चाहते हैं, वे अपना नाम मय दूरभाष व किराया प्रति सदस्य 250 रुपए एवं 100 रुपए दोपहर के भोजन सहित कुल 350 रुपए शुल्क 01 अक्टूबर से 15 अक्टूबर शाम 5 बजे तक भूतड़ा गेस्ट हाउस, स्टेशन रोड, जोधपुर में जमा कर पंजीयन करवा सकते हैं। प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी समिति की 34वीं वार्षिक आमसभा एवं पुरस्कार वितरण समारोह जोधपुर में आयोजित होगा। इस अवसर पर स्मारिका का भी प्रकाशन होगा। स्मारिका हेतु प्रकाशन योग्य सामग्री भी आमंत्रित है। इसी प्रकार 15 दिसंबर को प्रतिभा सम्मान का आयोजन होगा। वार्षिक आमसभा 23 दिसंबर को माहेश्वरी न्याति नोहरा जालोदी की गेर में होगी।

जिला अधिवेशन का किया आयोजन

बुलढाणा. जिला माहेश्वरी संगठन द्वारा एक दिवसीय जिला समाज अधिवेशन का आयोजन गत 19 अगस्त को कृष्णा कॉटेज शेगांव में शेगांव तहसील माहेश्वरी संगठन के आतिथ्य व माहेश्वरी मंडल शेगांव के तत्वावधान में किया गया। इसके पूर्व जिला समाज अधिवेशन 28 मई को बुलढाणा में संपन्न हुआ था। गत दिनों आयोजित इस अधिवेशन में तकरीबन 1800 महिला एवं पुरुषों की उपस्थिति रही। इस अधिवेशन को सफल बनाने हेतु पिछले 2 माह से अविरत प्रयास चल रहे थे। अध्यक्ष घनश्यामदास भाला व मंत्री संजय पुरुषोत्तम सातल ने बताया कि इसके द्वारा हर समाज बंधु तक पहुंचने का प्रयास किया गया। संगठन के सभी साथियों ने 13 तहसीलों का भ्रमण कर हर गांव में सभाएं लीं व वर्तमान परिस्थिति में संगठन की शक्ति से समाजबंधुओं को अवगत करवाया।

> सबसे तकलीफ़देह अकेलापन अपने आप के साथ सहज नहीं होना है?
> 'स्वयं के मित्र बनिए'

राष्ट्रीय पदाधिकारियों का मध्य उप्र भ्रमण

कानपुर. मध्य उत्तरप्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन का त्रिदिवसीय भ्रमण कार्यक्रम राष्ट्रीय संगठन मंत्री मंजू बांगड़ के सहयोग से प्रदेशाध्यक्ष सुजाता राठी के नेतृत्व में गत 19 से 21 अगस्त तक हुआ। इस शुभ अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष कल्पना गगरानी का आगमन सभी के लिए अत्यंत प्रेरक रहा। उत्तरांचल उपाध्यक्ष कांता गगरानी, सहसचिव शर्मिला राठी, सुरभि समिति प्रभारी प्रेमा झंवर, प्रदेश की राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य संतोष बाहेती व प्रदेशाध्यक्ष सुजाता राठी की सहभागिता रही। शुभारंभ कानपुर में बांगड़ हाउस में राष्ट्रीय पदाधिकारियों व प्रदेश पदाधिकारियों के स्नेह मिलन से हुआ। उन्होंने प्रथम दिवस कानपुर का भ्रमण कर सदस्याओं से भेंटकर मार्गदर्शन दिया। इसके बाद अगले दिन झांसी, राठ, उरई तथा 21 अगस्त को मैनपुरी व भर्थना भ्रमण के साथ समापन हुआ। इस दौरान हर स्थान पर स्थानीय संगठन द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ स्वागत समारोह आयोजित किए गए।

प्रेमकिशोर सिकची चॅरीटेबल ट्रस्ट, अहमदाबाद निर्मित
आलिशान 'सिकची रिसोर्ट', वलगांव

विशेषताएं : * निसर्गरम्य, शांत पवित्र वातावरण में शुभ कार्यों को यादगार बनाने का एक अनूठा अनुभव। * विदर्भ में उच्च कोटि के लिए नामांकित वातानुकूलित वास्तु में करीब 300 मेहमानों के लिए ठहरने की उत्तम व्यवस्था। * मंदिर, भव्य स्टेज, सभागृह, पार्किंग, जलप्रपात, बालवाटिका तथा अति आधुनिक शाकाहारी रेस्टारेंट का सानिध्य, एक सुंदर पिकनिक स्पॉट * रात-दिन कार्यरत प्रशिक्षित सेवकगण की उपस्थिति। * जनहित कार्यक्रम बिनामूल्य तथा सम्पूर्ण आय सामाजिक उत्थान के लिए व्यय करने का दृढसंकल्प।

'सिकची रिसोर्ट', वलगांव, नागपुर से करीब 160 कि.मी. तथा अमरावती से 10 कि.मी. दूरी पर अमरावती-परतवाड़ा मार्ग पर स्थित है। विविध पैकेजेस तथा अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें।

सचिन धरनकर
मो. 7507805264

Email : sikchi123@yahoo.com

पियूष शर्मा
मो.नं. 9637385336

पश्चिमी मप्र महिला संगठन की बैठक संपन्न

पीथमपुर. पश्चिमी मप्र माहेश्वरी महिला संगठन की बैठक का आयोजन धार जिला महिला संगठन द्वारा पीथमपुर में किया गया। अभा महासभा के सभापति श्याम सोनी ने सभा का उद्घाटन किया। सम्मानीय अतिथि के रूप में ललिता मालपानी, रमा शारदा, उर्मिला झंवर आदि उपस्थित थीं। संस्था अध्यक्ष अरुणा बाहेती ने अतिथि स्वागत किया। संस्था सचिव वीणा सोमानी ने सचिवीय प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इसके अंतर्गत अभी तक आयोजित की जाने वाली गतिविधियों का विवरण दिया। विभिन्न प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गईं। प्रतियोगिता का सफल संचालन अनुपमा बाहेती एवं किरण लखोटिया ने किया। कार्यक्रम में गीता मूंदड़ा, राजेंद्र ईनानी, प्रकाश बाहेती, महेश तोतला आदि कई गणमान्यजन उपस्थित थे।

श्रावण की गोठ का हुआ आयोजन

बीकानेर. श्रावण मास में पारिवारिक संस्था श्री प्रीति क्बल द्वारा एक विशाल गोठ का आयोजन किया गया। क्लब के महामंत्री नारायणदास दम्माणी व अध्यक्ष घनश्याम कल्याणी ने बताया कि इस बार गोठ का आयोजन स्थानीय बजरंग धोरे से 5 किमी आगे पर्लस सिटी में किया गया। कार्यक्रम के संयोजक अशोक बागड़ी थे। इस अवसर पर विभिन्न मनोरंजक कार्यक्रम आयोजित हुए। क्लब संरक्षक मगनलाल चांडक, जगदीश कोठारी, नारायण दम्माणी, घनश्याम कल्याणी, याज्ञवल्क्य दम्माणी, पवन कुमार राठी, सुरेश कोठारी, जुगल राठी, रमेश चांडक, नारायण बिहाणी, रमेश करनाणी, नारायण डागा, भवानीशंकर राठी आदि सपत्नीक उपस्थित थे।

माहेश्वरी मंडल की कार्यकारिणी गठित

पुलगांव. माहेश्वरी मंडल की नई कार्यकारिणी का गठन वर्ष 2018-20 के लिए सर्वसम्मति से हुआ। इसमें अध्यक्ष धनराज राठी, सचिव सुनील मालपानी, उपाध्यक्ष लक्ष्मीनारायण राठी, सहसचिव दीपक राठी, कोषाध्यक्ष प्रवीण पनपालिया, प्रचार मंत्री मनोजकुमार पनपालिया चुने गए। कार्यकारिणी सदस्य व सलाहकारों का चयन भी हुआ।

अन्न क्षेत्र ने मनाया वार्षिकोत्सव

बीकानेर. गरीब एवं असहाय लोगों के सहायतार्थ स्थापित संस्था 'श्रीकृष्ण अन्न क्षेत्र' का 21वां वार्षिक उत्सव सादगीपूर्ण तरीके से मनाया गया। संस्था के संयोजक मगनलाल चांडक ने बताया कि संस्था द्वारा स्थापना दिवस पर पुनीत कार्य करते हुए 200 वृद्ध, विधवा व कमजोर वर्ग के लोगों को गेहूं, रसोई सामान, जुराब व खाद्य तेल का वितरण किया गया। इस अवसर पर बीकानेर व्यापार उद्योग मंडल अध्यक्ष जुगल राठी, भारत स्काउट एवं गाइड की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. विमला ठुकराल, जनसंपर्क अधिकारी हरिशंकर आचार्य, स्त्री रोग विशेषज्ञ एवं आयुर्वेदाचार्य डॉ. प्रीति गुप्ता, गोपीकिशन पेड़ीवाल, जगदीश कोठारी, शशि कोठारी, विजयगोपाल राठी (मुंबई), केवलचंद मूंधड़ा, गोपाल कोठारी आदि उपस्थित थे।

तरुण क्रांति स्वाभिमान यात्रा का आयोजन

वाशिम. समाजसेवी संस्था तरुण क्रांति मंच के जिलाध्यक्ष नीलेश सोमाणी और भारती सोमाणी के नेतृत्व में समूचे देश में तरुण क्रांति स्वाभिमान यात्रा देशभक्ति, सेवा, समर्पण की मिसाल के रूप में निकाली गई। इसका स्वागत योग ऋषि स्वामी रामदेव बाबा ने भी किया। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी आदि जनप्रतिनिधियों के साथ कई स्थानों पर संतों ने भी यात्रा का स्वागत किया। स्वाभिमान यात्रा द्वारा हरिद्वार की ''हर की पोड़ी'' पर स्वच्छता अभियान चलाया गया। स्वास्थ्य खराब होने के बावजूद क्रांतिकारी राष्ट्रसंत तरुणसागरजी महाराज ने भी अपना समय देकर यात्रा को आशीर्वाद दिया था।

"जीवन को एक मिनट में बदला नहीं जा सकता है, लेकिन एक मिनट में लिया गया निणर्य जीवन में सब कुछ बदलता है। निणर्य लेने से पहले हमेशा शांत रहें ?
'दूरदर्शी व उत्साहशील बने'"

भंवरीदेवी की स्मृति में बनाया चार मंजिला छात्रावास

भीलवाड़ा. टैक्सटाइल यार्न बनाने वाली अग्रणी कंपनी नितिन स्पिनर्स लिमिटेड ने सीएसआर योजना के तहत पटेल नगर में गर्ल्स होस्टल का निर्माण करवाकर उसका शुभारंभ किया। योजना पर करीब 4 करोड़ रुपए की लागत आई है। गर्ल्स होस्टल का शुभारंभ गत दिनों भीलवाड़ा सांसद सुभाष बहेड़िया ने किया। समारोह में नितिन स्पिनर्स के चेयरमैन आरएल नौलखा सहित बड़ी संख्या में राजनेता, उद्यमी एवं समाजसेवी मौजूद रहे। श्री नौलखा ने बताया कि उनकी माता स्व. श्रीमती भंवरदेवी की स्मृति में यह होस्टल बनाया गया है। होस्टल में भीलवाड़ा के बाहर से आने वाली 80 छात्राओं के आवास एवं मेस की सुविधा है एवं इसे बिना किसी लाभ-हानि की योजना के आधार पर संचालित किया जाएगा। इससे बालिकाओं की उच्च शिक्षा का विस्तार होगा। इस चार मंजिला छात्रावास में 44 कमरों का निर्माण कराया गया है। होस्टल में लिफ्ट, सुरक्षा के आधुनिक उपकरण, 24 घंटे वार्डन, जनरेटर पावर बैकअप एवं भोजन आदि की सभी सुविधाएं मौजूद हैं।

मोहता की पुण्यस्मृति में रक्तदान

नागदा जंक्शन. माहेश्वरी युवा संगठन, नागदा जंक्शन जिला उज्जैन के तत्वाधान में स्व. श्री ओमप्रकाश मोहता की स्मृति में एवम श्रीमती सीतादेवी मोहता की पुण्यतिथि पर गत 31 अगस्त को जनसेवा चिकित्सालय में रक्तदान शिविर लगाया गया। शिविर में माहेश्वरी समाज के 17 व्यक्तियों ने रक्तदान किया। माहेश्वरी समाज सचिव अशोक बिसानी, मनोज राठी, युवा संगठन अध्यक्ष वीरेंद्र मालपानी, युवा संगठन सचिव विक्रांत मोहता, बब्बू राठी, विपिन मोहता, संतोष मोहता आदि ने रक्तदान किया। समाज अध्यक्ष सतीश बजाज, बसंत मालपानी, समाज के वरिष्ठ गोविंद मोहता, गोपाल मोहता, जमना मालपानी, प्रशांत राठी आदि मौजूद रहे। जानकारी विपिन मोहता ने दी।

युद्ध जीतने से कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण शांति की स्थापना करना है?
'लोगों का दिल जीतें'

Gopal Sadani
93705-87744

Shyam Sadani
85510-39244

Greenlam
LAMINATES
Aut. Distributer

SA

Sadani Associates

Plot No. 73, Lakadganj, Behind Jaisitaram Complex,
Queta Colony, Nagpur - 440008
Ph. : 0712-2733999
Mo. : 9373888995
Email : sadaniassociates@gmail.com

तीजोत्सव का हुआ आयोजन

कोटा. गत 23 अगस्त को स्थानीय माहेश्वरी महिला मंडल के तत्वावधान में तीज उत्सव का आयोजन किया गया। मंडल सचिव ऋतु मूंदड़ा ने बताया कि सावन माह के अवसर पर देवरानी-जेठानी लहरिया क्वीन प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसके अंतर्गत रंजना कचोलिया व आशिता मालानी ने क्वीन का ताज पहना। बैंगल्स पैकिंग में प्रथम अंजू शारदा व द्वितीय रेखा सोनी रहीं। परिणीता लाहोटी एवं विजया सोमानी ने सदस्याओं को मजेदार गेम्स और तंबोला का आनंद दिलाया। राष्ट्रीय महामंत्री आशा माहेश्वरी, मधु बाहेती, कुसुम मंत्री, पूर्व अध्यक्ष विनीता लाहोटी एवं मंडल अध्यक्ष अरुणा मूंदड़ा ने विजेताओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

बाबा रामदेवजी की संगीतमय कथा का आयोजन

बीकानेर. भाद्रपद मास के पावन पर्व पर स्थानीय मुरलीधर व्यास नगर स्थित नंदीश्वर महादेव मंदिर परिसर में लोक देवता बाबा रामदेवजी की संगीतमय कथा का आयोजन किया गया। एमडीवी सेलिब्रेटी ग्रुप के पवन राठी ने बताया कि कथा का वाचन ख्यात कथावाचक पं. कृष्णकांत पुरोहित ने किया। कथा से पूर्व बाबा रामदेव की पूजा की गई। ग्रुप के अध्यक्ष योगेश बिस्सा ने बताया कि देररात 12 बजे तक चले इस कथा कार्यक्रम में न केवल कॉलोनी के बुजुर्ग, पुरुषों, महिलाओं, युवक-युवतियों ने भाग लिया बल्कि शहरी लोगों ने भी कथा स्थल पहुंचकर इस कथा का श्रवण किया।

> किसी भी रणनीति के अंतर्गत बनी हुई योजना को कार्यान्वित करने की जिम्मेदारी शीर्ष नेतृत्व से शुरू होनी चाहिए। सभी क्षेत्रों में विभाग के प्रमुख, प्रबंधकों, टीम के नेताओं और कर्मचारियों को भी सफलता के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए ?
> 'एक क़दम सफलता की ओर...'

डॉ. सिकची की पुस्तक विमोचित

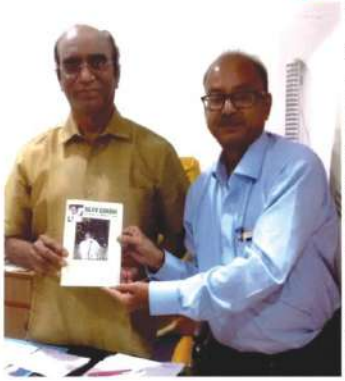

चेन्नई. ख्यात चिकित्सक डॉ. शरद रामाराव सिकची द्वारा अंग्रेजी में लिखी गई पुस्तक 'राजीव गांधी आर्किटेक्ट ऑफ माडर्न इंडिया' का विमोचन गत 20 अगस्त को स्व. श्री गांधी के जन्मदिवस पर टीएनसीसी अध्यक्ष तिरुनावुक्कुरासर के हाथों स्थानीय सत्यमूर्ति भवन में समारोहपूर्वक किया गया। इस अवसर पर उपस्थित प्रो. सीएमके रेड्डी ने भी इस पुस्तक की सराहना की। यह पुस्तक मूल रूप में हिंदी में 'मेरा भारत महान, मेरा राजीव महान' शीर्षक से 2014 में प्रकाशित हुई थी। वर्ष 2015 में इसका तमिल संस्करण भी प्रकाशित हो चुका है।

तीज के सिंजारा का हुआ आयोजन

अहमदाबाद. सुरभि समिति के अंतर्गत माहेश्वरी सखी संगठन ने गत 27 अगस्त को तीज के सिंजारा का आयोजन किया। इस अवसर पर सखियों ने सावन के झूले, एक मिनट के गेम के अलावा दो स्पर्धा सत्तू सजाना व तीज क्वीन कॉन्टेस्ट आदि का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 80 सखियों की उपस्थिति थीं।

सावन के सिंजारा का आयोजन

पुरुलिया. माहेश्वरी महिला समिति ने सुरम्या समिति के अंतर्गत सागर राज रिसोर्ट में सावन के सिंजारा का आयोजन किया। इसमें 70 सदस्याओं ने भाग लिया। परंपरागत वस्त्र पहने व स्वादिष्ट भोजन के साथ झूला, घुड़सवारी आदि का आयोजन हुआ। सुष्मिता मल, पूजा डागा, रुचि मल का विशेष योगदान रहा। इसी प्रकार माहेश्वरी महिला समिति पुरुलिया ने बड़ी तीज के पावन अवसर पर कमला मल्ल के घर पर झूला झूलने का आयोजन किया। तत्पश्चात कुछ सदस्यों ने सामूहिक रूप से मूवी भी देखी।

ग्रेनएक्स इंडिया 2018 में भाग लेंगे डॉ. सोडाणी

भीलवाड़ा. जयपुर के एसएम एस इन्वेस्टमेंट स्टेडियम में 5 से 7 अक्टूबर को मल्टी ग्रेन प्रोसेसिंग मशीनरी आधारित तीन दिवसीय एक्जीबिशन ग्रेनएक्स इंडिया 2018 का आयोजन किया जा रहा है। इसमें देश-विदेश की 150 से अधिक कंपनियों के प्रतिनिधिमंडल भाग ले रहे हैं। आडोमास द्वारा आयोजित इस तीन दिवसीय एक्जीबिशन में एग्रीकल्चर इंडस्ट्रीज में न केवल टेक्नोलॉजी पर आधारित प्लांट व मशीनरी का प्रदर्शन किया जाएगा बल्कि विभिन्न विषयों पर सेमिनार भी होगा। चैंबर ऑफ फूड प्रोसेसिंग इंडस्ट्रीज भीलवाड़ा का जनरल सेक्रेटरी डॉ. अशोक सोडाणी के नेतृत्व में 11 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल इसमें भाग लेगा। इस एक्जीबिशन में आयोजित सेमिनार में 'राजस्थान में एग्रो इंडस्ट्रीज के लिए संभावनाएं' विषय पर डॉ. सोडाणी शोध-पत्र प्रस्तुत करेंगे।

राष्ट्रपति के प्रतिनिधि मंडल में शामिल डॉ माहेश्वरी

लुधियाना. स्थानीय लाइफ लाइन हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. आरएस माहेश्वरी भारत के राष्ट्रपति रामनाथ गोविंद के डेलीगेशन में यूरोप के बुलगारिया एवं चेक गणराज्य की यात्रा पर जा रहे हैं। 30 सदस्य वाले इस प्रतिनिधिमंडल द्वारा दोनों देशों के बीच शिक्षा, कृषि, उत्पाद, स्वास्थ्य, विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में आपसी सहयोग एवं व्यापार की भावी संभावनाओं पर विचार किए या जाएगा। डॉ. माहेश्वरी मेडिकल टूरिज्म एवं स्किल डेवलपमेंट के क्षेत्र में आपसी सहयोग की संभावनाओं एवं मेडिकल क्षेत्र को लेकर बुलगारिया एवं चेक गणराज्य के विवि के प्रबंधकों से बातचीत करेंगे। उल्लेखनीय है कि डॉक्टर माहेश्वरी पूर्व में भारत के पूर्व राष्ट्रपति माननीय प्रणब मुखर्जी के साथ स्वीडन के प्रतिनिधिमंडल का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। डॉ. माहेश्वरी आगर-मालवा मप्र के निवासी हैं एवं नेहरू कॉलेज के छात्र भी रह चुके हैं।

शिक्षकों का किया सम्मान

नागदा. लांयस ग्रेटर द्वारा स्थानीय स्नेह स्कूल में 30 शिक्षकों का सम्मान किया गया। शिक्षक सम्मान अध्यक्ष घनश्याम-सुनीता राठी ने किया। इस मौके पर सचिव सौरभ-श्रुति मोहता गोविंद मोहता, सतीश बजाज, राजकुमार मोहता, प्रकाश राठी, झमक राठी, अशोक बिसानी आदि मौजूद रहे।

सांवरिया सेठ का फूल बंगला सजाया

देवास. जन्माष्टमी के पावन पर्व पर जेल रोड स्थित सांवरिया सेठ के मंदिर पर आकर्षक फूल बंगला माहेश्वरी समाज देवास के तत्वावधान में सजाया गया। शाम 4 बजे से ही भक्तों का फूल बंगला निहारने का क्रम शुरू हो गया था। इस अवसर पर राष्ट्रीय कलाकार द्वारका मंत्री ने साथियों के साथ भजनों की प्रस्तुति दी। सांसद मनोहर ऊंटवाल, विधायक गायत्रीराजे पंवार, दुर्गेश अग्रवाल, राजू खंडेलवाल, संजय दायमा, मनोज राजानी, जयसिंह ठाकुर सहित कई गणमान्यजन मौजूद थे। भौंरासा, सोनकच्छ, बैरसिया, उज्जैन, इंदौर, देपालपुर आदि क्षेत्रों से भी आए भक्तों ने सांवरिया सेठ के दर्शन किए और भजनों का आनंद लिया। समाज अध्यक्ष प्रहलाद दाड़, युवा संगठन अध्यक्ष विपिन डागा, महिला संगठन अध्यक्ष शोभा चिचाणी, सखी संगठन अध्यक्ष मीनू डागा ने उपस्थित सभी भक्तों का आभार व्यक्त किया।

प्रदेश कार्यसमिति की बैठक संपन्न

धार. मप्र वैश्य सम्मेलन की 21वीं प्रदेश कार्यसमिति की बैठक सागर जिले में 1-2 सितंबर को आयोजित हुई। बैठक के मुख्य अतिथि प्रदेश अध्यक्ष एवं मप्र शासन के राजस्व मंत्री उमाशंकर गुप्ता थे। विशिष्ट अतिथि व्यापार संवर्धन बोर्ड के अध्यक्ष (राज्यमंत्री दर्जा) मदनमोहन गुप्ता एवं सागर विधायक शैलेंद्र जैन थे। उद्घाटन सत्र में क्रांतिकारी संतश्री तरुणसागर जी एवं पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी को श्रद्धांजलि दी गई। इस अवसर पर धार संभाग प्रभारी एवं प्रदेश महामंत्री महेश माहेश्वरी द्वारा धार संभाग की रिपोर्ट पेश की गई।

> "जहाँ तक शैली का सवाल है,
> समय एवं ज़माने के साथ चलें।
> लेकिन सिद्धांतों के साथ कभी
> कोई समझौता ना करें ?
> 'हमारे संस्कार... हमारी विभूति'"

चुनरी महोत्सव का हुआ आयोजन

इंदौर. माहेश्वरी फ्रेंड्स ग्रुप के 120 कपल सदस्यों ने भगवान महाकाल की नगरी उज्जैन पहुंचकर मां शिप्रा को 120 साड़ियों की 5 चुनरी ओढ़ाकर सुख शांति की प्रार्थना की। ग्रुप के सदस्य संपतकुमार साबू ने बताया कि रामानुजकोट मंदिर के स्वामी श्री रंगनाथाचार्य जी महाराज के सान्निध्य में प्रातः बेला में भगवान शिव का अभिषेक सामूहिक रूप से किया गया। इसमें श्रद्धालु यजमान गोपाल सोमानी, केशव शारदा, गोविंद सोमानी, कृष्णदास राठी एवं मांगीलाल भूतड़ा के साथ मुख्य यजमान संस्था के अध्यक्ष सुरेश सावित्री सिंगी के प्रतिनिधित्व में बैंडबाजे के साथ शोभायात्रा में शामिल हुए। इस कार्यक्रम में सुरेश जमना राठी, गोविंद राठी, जगदीश भूतड़ा, दिनेश चितलांग्या, पुरुषोत्तम मानधन्या, उज्जैन के भूपेंद्र भूतड़ा, अजय मूंदड़ा तथा हैदराबाद दाहोद आदि स्थानों के समाजजन उपस्थित थे।

सावन के सिंजारा का आयोजन

रायपुर. महेश महिला संगठन द्वारा गत 17 अगस्त को सावन सिंजारे के उपलक्ष्य में बहुत ही सुंदर रंगारंग कार्यक्रम 'पधारो म्हारे देश' की प्रस्तुति दी गई। इस कार्यक्रम के माध्यम से संगठन की सदस्याओं ने रायपुर में ही राजस्थान के मेले, राजस्थान में होने वाले आदर सत्कार, खानपान, खेल तमाशा, लोकनृत्य, पहनावा, सावन सिंजारा आदि को नृत्य के जरिये प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर संगठन की 45 सदस्याओं ने भाग लिया। कार्यक्रम में करीब 200 लोग उपस्थित थे। जानकारी अध्यक्ष शिल्पा सारडा ने दी।

> "प्रत्येक कठिनाई को इतने सम्भावित हिस्सों में विभाजित कर सरल बनायें जोकि उन्हें हल करने के लिए जरूरी है ? 'समस्याओं से ना डरें'"

श्रावणी भोज के साथ वार्षिक सभा संपन्न

दुर्ग. स्थानीय श्री माहेश्वरी पंचायत की वार्षिक साधारण सभा एवं श्रावणी भोज का कार्यक्रम गत दिनों आयोजित किया गया। कोषाध्यक्ष रामावतार राठी द्वारा आय-व्यय का ब्योरा प्रस्तुत किया गया व मंदिर समिति अध्यक्ष नंदकिशोर चांडक द्वारा बाबा रामसापीर के मेले में होने वाले कार्यक्रमों की जानकारी दी गई। छग प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के तत्वावधान में दुर्ग जिला सभा द्वारा श्री माहेश्वरी पंचायत दुर्ग के आतिथ्य में आयोजित जीवन साथी चयन 2018-2019 को 22 एवं 23 दिसंबर 2018 तक आयोजित किए जाने पर सहमति बनी। इस कार्यक्रम हेतु नरेंद्र राठी को प्रभारी बनाया गया।

नंदोत्सव का किया आयोजन

बूंदी. स्थानीय श्री माहेश्वरी महिला मंडल की ओर से गीता भवन में नंदोत्सव मनाया गया। शुभारंभ राधा-कृष्ण की पूजा-अर्चना कर जिलाध्यक्ष किरण लखोटिया व महिला मंडल सचिव सोनल मूंदड़ा ने किया। राधा की भूमिका रितिषा लड्ढा ने, यशोदा की भूमिका मालविका बहेडिया ने, नंदबाबा की भूमिका संगीता सोमानी ने और वासुदेव की भूमिका नीलम लखोटिया ने निभाई। इस अवसर पर मंडल की सभी सदस्याओं ने सर्वसम्मति से राधा मूंदड़ा को महिला मंडल की कार्यवाहक अध्यक्ष बनाया। मीनाक्षी काबरा, कविता जाजू, अनिता मंडोवरा, मंजू मोदी, राधा मंडोवरा सहित मंडल की सदस्याएं मौजूद थीं।

महिला संगठन की कार्यकारिणी गठित

रायपुर. महेश महिला संगठन रायपुर (अंतर्गत महेश सभा) की वर्ष 2018-2021 के लिए सर्वसम्मति से नवीन कार्यकारिणी चयनित की गई है। इसमें अध्यक्ष शिल्पा सारडा, निवर्तमान अध्यक्ष करुणा पेड़ीवाल, उपाध्यक्ष दिव्या राठी, सुनीता झंवर, सचिव मंजू सोमानी, सहसचिव अनिता मोदानी, कोषाध्यक्ष पूजा करवा चुनी गईं। कार्यकारिणी सदस्यों का चुनाव भी किया गया।

महिला संगठन की राष्ट्रीय पदाधिकारियों का सम्मान

रायपुर. गत 10 सितंबर को अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन के पदाधिकारियों का स्वागत एवं सम्मान माहेश्वरी महिला समिति सदर बाजार द्वारा माहेश्वरी भवन डूंढा में किया गया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय अध्यक्ष कल्पना गगडानी, पूर्व उपाध्यक्ष शोभा सादानी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ज्योति राठी, राष्ट्रीय संचालिका उषा मोहंता, संयोजिका राष्ट्रीय मोनिका माहेश्वरी, संयोजिका अनिता धूत, सुकृति संयोजिका विभा राठी, राष्ट्रीय प्रभारी संचारी उर्मिला कलंत्री, राष्ट्रीय प्रभारी सुकृति सोनाली मूंदड़ा, निवर्तमान प्रदेशाध्यक्षा पुष्पा राठी, प्रदेश सचिव शशि गट्टानी, प्रदेशाध्यक्ष आशा डोडिया, जिलाध्यक्ष सरला चांडक आदि मौजूद थीं। मीटिंग में जनवरी 2019 में तीन दिवसीय कार्यक्रम की रूपरेखा भी तैयार की गई।

महाराष्ट्र युवा संगठन की बैठक संपन्न

सालासर. महाराष्ट्र प्रदेश माहेश्वरी युवा संगठन की बैठक युवा संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजकुमार काल्या के मुख्य आतिथ्य में तथा राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री शिव कासट महाराष्ट्र प्रदेश माहेश्वरी युवा संगठन अध्यक्ष शरद काबरा व सचिव मयूर सोमानी के विशेष आतिथ्य में आयोजित हुई। इस अवसर पर जानकारी दी गई कि अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी युवा संगठन के महत्वपूर्ण प्रकल्प लोहार्गल धाम अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट द्वारा माहेश्वरी समाज की उत्पत्ति स्थल लोहार्गल में भवन निर्माण का कार्य जल्द ही पूर्ण किया जा रहा है। इसी के साथ अजमेर जिला माहेश्वरी युवा संगठन द्वारा केकड़ी में आयोजित बहुचिकित्सीय परामर्श शिविर का समापन श्री काल्या की उपस्थिति में हुआ।

> पृथ्वी पर गुरुत्वाकर्षण का कारण शायद यही है कि जीवन की सभी सम या विषम परस्थितियों में हमारे पैर जमीन पर ही रहें ? 'अपनी जड़ें ना छोड़ें'

पुनः भामाशाह सम्मान से सम्मानित तोषनीवाल

जयपुर. गत दिनों राजस्थान सरकार की ओर से 24वां राज्यस्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इस समारोह में गत कई वर्षों की तरह इस बार भी राजकीय उमा संस्कृत विद्यालय अजमेर मंडल हेतु 35.78 लाख रुपए के आर्थिक सहयोग के लिए कोलकाता निवासी वरिष्ठ समाजसेवी नेमीचंद तोषनीवाल को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कैलाश मेघवाल अध्यक्ष राजस्थान विधानसभा थे। अध्यक्षता वासुदेव देवनानी राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) ने की। उल्लेखनीय है कि श्री तोषनीवाल गत कई वर्षों से अपने सीतादेवी तोषनीवाल चेरिटेबल ट्रस्ट के माध्यम से शिक्षा व चिकित्सा में अपना विशिष्ट सहयोग दे रहे हैं। उनके साथ मदनगोपाल तोषनीवाल भी उपस्थित थे।

टावरी का हुआ सम्मान

अमरावती. स्थानीय श्री हिंदी विकास परिषद द्वारा मराठी पत्रकार भवन में आयोजित विशेष सभा में हिंदी में एक हजार से अधिक लेख तथा सात प्रकाशित पुस्तकें लिखने के उपलक्ष्य में श्याम टावरी का सम्मान किया गया। इस अवसर पर राजेंद्र लुणावत, रामेश्वर गग्गड़ तथा सचिव सुरेशचंद्र साहू गुरुजी ने उनका स्मृति चिह्न, पुष्पगुच्छ, शॉल श्रीफल भेंटकर सम्मान किया गया। साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत बालगीत कवि डॉ. विवेक मूंधड़ा का सम्मान भी सुरेश जैन सहसंयोजक गिरीश खारकर के हाथों किया गया।

पौधारोपण के साथ मनाया स्वतंत्रता दिवस

मालेगांव. महालक्ष्मी माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा नई दिशा की ओर एक कदम चलो चलें स्वतंत्रता दिवस मनाये तिरंगा फहराके' और धरती पर हराभरा उपवन सजाएं, पौधारोपण करके' थीम के साथ स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। मंडल के पदाधिकारी व सदस्यों ने आश्रय संस्था में जाकर बच्चों के साथ ध्वजारोहण किया। बच्चों से देशभक्ति पर गीत स्पर्धा आयोजित की तथा पौधारोपण भी किया। मंडल अध्यक्ष सरिता कैलाश बाहेती ने संबोधित किया। शारदा लाहोटी, वंदना जाजू, इंदू जाजु, बीना भंडारी, मनीषा झंवर, सोनल काला, पुष्पा बंग, विजया कलंत्री आदि मौजूद थे।

नंदोत्सव का हुआ आयोजन

मथुरा. माहेश्वरी महिला मंडल मथुरा द्वारा नंदोत्सव का आयोजन अध्यक्ष कविता दीवान के निवास स्थान पर किया गया। सुकीर्ति समिति के अंतर्गत 'वात्सल्य के रंग यशोदा मैया के संग' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सुरभि समिति के अंतर्गत 'कनुआ के रंग यशोदा मैया के संग' प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत लड्डू गोपाल का शृंगार एवं नयनाभिराम झांकियां प्रस्तुत की गईं। स्पर्धा की निर्णायक रेखा माहेश्वरी व संगीता गोदानी थीं। अध्यक्ष कविता एवं सचिव प्रिया माहेश्वरी द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया।

डॉ. माहेश्वरी को डीलिट् उपाधि

अलमनेर (महा.). स्थानीय प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय की उपप्राचार्य तथा हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. शैलजा माहेश्वरी ने पोस्ट डॉक्टरेट प्रबंध प्रस्तुत कर हिंदी में डीलिट् की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने अपना अनुसंधान कार्य दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास में बंगलूर शिक्षा शास्त्र महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. इसपाक अली के निर्देशन में पूर्ण किया। डॉ. माहेश्वरी ने 'रामनिवास मानव के काव्य का वैशिष्ट्य' शीर्षक से प्रबंध प्रस्तुत किया है। वे महाराष्ट्र में हिंदी की पहली महिला प्राध्यापक हैं, जिन्होंने डीलिट् की सर्वोच्च उपाधि प्राप्त की। वे अनुसंधाता होने के साथ-साथ कवि, अनुवादक तथा आलोचक एवं देश के कई पुरस्कारों से सम्मानित हुई हैं। उन्होंने एक दर्जन पुस्तकों का लेखन-संपादक किया है। संभवतः माहेश्वरी समाज की किसी महिला को प्राप्त यह प्रथम सम्मान है।

ई-पत्रिका 'सक्षम' का लोकार्पण

कोलकाता. माहेश्वरी सभा अंतर्गत संचालित माहेश्वरी औद्योगिक शिक्षण केंद्र (अंतर्गत माहेश्वरी सभा) कोलकाता की ई पत्रिका सक्षम का लोकार्पण केंद्र के सभापति डीके मोहता के कर कमलों से हुआ। केंद्र के मंत्री अरुणकुमार सोनी ने बताया कि इसका वितरण सोशल मीडिया व ईमेल द्वारा किया जाएगा। यह पूर्णतः निःशुल्क है। आप अपना ईमेल एड्रेस केंद्र के ईमेल पर भेज कर इसके सदस्य बन सकते हैं। सक्षम के संपादक पंचानन भट्टड़ ने बताया कि यह पत्रिका केंद्र का मुखपत्र है, जिसमें केंद्र की गतिविधियों का समावेश भी रहेगा। उपसभापति सीताराम डागा ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में पद्मा बागड़ी, बृजमोहन मीमानी, नारायणदास डागा एवं आदित्य बिनानी का योगदान रहा।

कई संस्थाओं ने किया बागड़ी का सम्मान

नागपुर. क्लिन फाउंडेशन, श्वेत-केतु, कलादालन फाउंडेशन, सोनी एंड सोनी फिल्म निर्माता व मैत्री परिवार के तरफ से सत्कार समारोह व 'कारवा सुनहरे गीतों का' कार्यक्रम कविवर सुरेश भट्ट सभागृह रेशमबाग में आयोजित किया गया। अतिथि संदीप जोशी महाराष्ट्र राज्य लघु उद्योग महामंडल के अध्यक्ष (राज्यमंत्री दर्जा) व कुनाल गडेकर दक्षिण मध्य सांस्कृतिक केंद्र भारत सरकार कार्यक्रम के समिति सदस्य तथा कई राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त व टाईम्स बिजनेस अचीवर्स अवॉर्ड से सम्मानित समाजसेवी शरद बागड़ी थे। इस अवसर पर समाजसेवा में चहुंमुखी योगदान को लेकर श्री बागड़ी का सम्मान किया गया।

केरल राहत कार्यों में मदद

बीकानेर. रोटरी क्लब बीकानेर मिडटाउन ने 'राष्ट्र सर्वोपरि' की संकल्पना को साकार करने हेतु केरल की जनता के लिए 51000/- रुपए का चेक रोटरी इंडिया ह्यूमेनिटी फांउडेशन को भेजा। सचिव रघुवीर झंवर ने बताया कि क्लब अध्यक्ष सुरेश राठी के नेतृत्व में रोटरी सदस्यों ने जिला कलेक्टर नरेंद्रकुमार गुप्ता से मुलाकात कर उन्हें अवगत करवाया। क्लब कोषाध्यक्ष आशीष चूरा ने बताया कि इस राशि का चेक बनाकर डिस्ट्रिक्ट 3053 के गवर्नर प्रियेश भंडारी के माध्यम से फाउंडेशन को भेजा गया। इस आयोजन में क्लब सदस्य विमल चांडक, राम चांडक, शशि बिहाणी, सुरेश राठी सहित कई सदस्य उपस्थित थे।

बियाणी शिक्षण संस्था में राठी अध्यक्ष

अमरावती. महाराष्ट्र की प्रतिष्ठित ब्रिजलाल बियाणी संस्था के चुनाव में एडवोकेट अशोक राठी विजयी हुए। इस पैनल के 16 सदस्य बहुमत से विजयी हुए। इसमें सर्वसम्मति से श्री राठी को अध्यक्ष चुना गया।

"आपका व्यवसाय भी अन्य मनुष्यों की सहायता करने का एक सीढ़ी (ज़रिया) बनता है? 'सहृदय बनें'"

बागड़ी का किया अभिनंदन

नागपुर. रोटरी क्लब ऑफ नागपुर का पदग्रहण समारोह होटल हेरिटेज में आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि भुसावल से आए डिस्ट्रिक्ट गवर्नर रोटेरियन राजीव शर्मा थे। इसमें शहर की नगरसेविका व महिला बालकल्याण समिति की सभापति प्रगति अजय पाटिल ने अध्यक्ष का पद ग्रहण किया। इस अवसर पर क्लब के वरिष्ठ सदस्य शरद बागड़ी का विभिन्न संस्थाओं में किए गए कार्यों, समाजसेवा, आठ राष्ट्रीय पुरस्कार व उपलब्धियों के लिए विशेष प्रशस्ति पत्र से सम्मान किया गया। उनकी धर्मपत्नी भारती बागड़ी का भी बुके देकर सत्कार किया गया। इस अवसर पर श्री बागड़ी को प्रथम उपाध्यक्ष भी मनोनीत किया गया।

महेश सोसायटी के चुनाव संपन्न

उदयपुर. महेश सोसायटी उदयपुर के द्विवार्षिक चुनाव बड़बड़ेश्वर महादेव में आयोजित साधारण सभा की बैठक में निर्वाचन अधिकारी मुरलीधर गट्टानी की देखरेख में संपन्न हुए। प्रचार-प्रसार मंत्री गौतम सोमानी ने बताया कि इसमें वर्ष 2018-20 के लिए कैलाश कालानी अध्यक्ष, बृजगोपाल चांडक सचिव एवं दिनेश मूथा कोषाध्यक्ष निर्वाचित घोषित किए गए। इसी तरह महेश महिला सोसायटी के वर्ष 2018-20 के लिए नीलम पेड़ीवाल अध्यक्ष, सुनीता राठी सचिव एवं दीक्षा मंत्री कोषाध्यक्ष निर्वाचित घोषित की गईं। इस अवसर पर पारिवारिक पिकनिक व खेलकूद का भी आयोजन किया गया।

युवक-युवती परिचय सम्मेलन दिसंबर में

जालना. माहेश्वरी विवाह समिति जालना के अंतर्गत माहेश्वरी संस्था द्वारा आगामी 2 दिसंबर को अष्टम युवक-युवती परिचय सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। अध्यक्ष कांतिलाल राठी व सचिव सुनील बियाणी ने बताया कि इसमें शिक्षित, उच्च शिक्षित तथा सभी वर्ग के प्रत्याशी शामिल हो सकेंगे। इसके लिए प्रत्याशी का बायोडाटा, दो फोटो व 1 हजार रुपए शुल्क का भुगतान ड्राफ्ट या ऑनलाइन कर 1 नवंबर तक पंजीयन करवाया जा सकेगा। सम्मेलन स्थल सोनी फॉर्म हाउस के पास श्रीकृष्ण रक्मिणी नगर नया मोंढा रोड जालना रहेगा। अधिक जानकारी अथवा पंजीयन के लिए माहेश्वरी सेवा संस्था कार्यालय हिंगोली बैंक के नीचे, देवलगांव राजा रोड, जालना (महाराष्ट्र) पर संपर्क किया जा सकता है।

सिंजारा का हुआ आयोजन

मांडल. गत दिनों स्थानीय माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा बड़ी तीज का सामूहिक सिंजारा अध्यक्ष आशा पटवारी व मंत्री सुधा बिड़ला के नेतृत्व में मनाया गया। इसमें सभी सदस्यों को मेहंदी लगाई गई तथा सावन के गीत गाए गए। ड्रेस कोड लहरिया रखा गया था। शाम को सामूहिक गोठ का आयोजन भी किया गया।

पाठक मंच

'आपकी आवाज'

यदि आप समाज के किसी भी संगठन की कार्यप्रणाली से असंतुष्ट हैं, किसी योजना का लाभ आपको नहीं मिल पा रहा है या संगठनात्मक व्यवस्था में कमी को लेकर असंतुष्ट हैं, तो सप्रमाण जानकारी प्रेषित करें। हम आपकी बात जिम्मेदारों तक पहुँचाएंगे और उनके उत्तर प्राप्त होने पर उन्हें भी इस स्तंभ के माध्यम से प्रकाशित करेंगे।

कहीं समाज में निरंकुशता तो नहीं बढ़ रही?

पिछले वर्षों से अखिल भारतवर्षीय महासभा द्वारा नागपुर से प्रकाशित माहेश्वरी पत्रिका के आजीवन सदस्य बनने हेतु एक विज्ञप्ति जारी की गई थी। मैं इससे कतई सहमत नहीं हूं। माहेश्वरी समाज की देश में कहीं से भी कोई भी पत्रिका प्रकाशित हो वह समाज के लिए उपयोगी होती है। अतः केवल नागपुर की पत्रिका के सदस्य बनाने का कोई औचित्य नहीं है। एकाधिकार की प्रवृत्ति समाज के लिए निरकुंशता की ओर इंगित करती है। अतः ऐसी किसी भी विचारधारा की सकारात्मक आलोचना होनी चाहिए। इसी तरह से पिछले कई वर्षों से अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा, प्रादेशिक महासभा, जिला सभा व क्षेत्रीय सभाओं के माध्यम से माहेश्वरी समाजबंधुओं के लिए आदित्य विक्रम बिड़ला व्यापार केंद्र आर्थिक सहायता केंद्र, बांगड़ मेडिकल वेलफेयर सहायता, श्रीकृष्ण जाजू ट्रस्ट एवं अन्य संस्थाओं द्वारा सहायतार्थ प्रचार प्रसार जोर-शोर से किया जा रहा है। करना तो चाहिए लेकिन वास्तविकता क्या है? इस ओर मैं माहेश्वरी सदस्य के माध्यम से पदाधिकारियों, समाज बंधुओं एवं व्याप्त अव्यवस्थाओं की ओर ध्यान आकर्षित करवाना चाहूंगा। किसी भी तरह की आर्थिक सामाजिक सहायता प्रदान करने के लिए मापदंड होते हैं, लेकिन यह मापदंड नियम, पदाधिकारी अपने ढंग-ढंग से प्रचारित प्रसारित कर रहे हैं। आम माहेश्वरी बंधु उससे अनभिज्ञ हैं तथा कितने समय में सहायता मिलेगी या नहीं उसकी सूचना तक नहीं दी जा रही है। आर्थिक सहायता कम, उसका समाज में ढिंढोरा ज्यादा पीटा जाता है, जबकि यह सब गोपनीय रखा जाना चाहिए। महासभा की कई योजनाओं में अत्यधिक अनावश्यक जानकारी मांगी जा रही हैं जो सर्वथा अनुचित है।

एस.बी. माहेश्वरी, अजमेर
मो. 94143-14666

सुंदरकांड का हुआ आयोजन

चंद्रपुर. नागपुर रोड स्थित शकुंतला लॉन में माहेश्वरी युवक मंडल चंद्रपुर द्वारा रामायण के पांचवें अध्याय सुंदरकांड के पाठ का आयोजन हुआ। संत अलकाश्रीजी ने सुंदरकांड पाठ करवाया। कार्यक्रम में कुल 86 माहेश्वरी दंपतियों ने हिस्सा लिया। 1200 से अधिक भक्त इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। मंच संचालन दामोदर सारडा द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम का प्रकल्प निर्देशन माहेश्वरी युवक मंडल, चंद्रपुर अध्यक्ष राजेश काकानी व सचिव दीपक सोमानी ने किया। भरत बजाज, प्रवीण सारडा, पंकज सारडा, ऋषिकांत जाखोटिया, नितेश चांडक, प्रतीक सारडा, राजू बजाज, ऋषभ डालिया, हरीश सोमाणी, गोविंद राठी आदि का सहयोग प्राप्त हुआ।

जन्माष्टमी पर्व का हुआ आयोजन

वरंगल. जन्माष्टमी उत्सव अंतर्गत समाज द्वारा 7 दिवसीय अखंड श्री हरि नाम संकीर्तन उत्सव 31 अगस्त से 7 सितंबर तक प्रगतिशील मारवाड़ी समाज भवन में आयोजित किया गया। इसी कड़ी में 3 सितंबर को जन्माष्टमी का कार्यक्रम बड़े ही उत्साह से मनाया गया। श्री लक्ष्मी वेंकटेश मंदिर के इस कार्यक्रम के यजमान लालचंद रमेशचंद बंग थे। मंदिर के व्यस्थापक श्री जाखोटिया परिवार ने यह जानकारी दी।

> “कार्य प्रारम्भ होने पर आयी हुई चुनौतियों का पूरी शक्ति के साथ सामना करना चाहिये और उस कार्य को सिद्ध करने में पूरी ताकत और ऊर्जा डालना चाहिये ?
> ‘डटे रहें’ ”

पुण्य स्मृति में स्वास्थ्य शिविर

चंद्रपुर. माहेश्वरी सेवा समिति व माहेश्वरी युवा मंडल द्वारा श्री नंदलाल चंपालालजी (मामाजी) की स्मृति में निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर के मुख्य आयोजन राजेश बीज थे। अनुजा शारदा (नागपुर) व मेघना कुमार आदि उपस्थित थे। शिविर में हृदय रोग, दांत, नाक, कान और गले, आयुर्वेदिक, सामान्य चिकित्सक, मधुमेह आदि का परामर्श दिया गया। शिविर में भरत बजाज, प्रवीण शारदा शारदा पंकज, ऋषिकांत जाखेटिया, नितेश चांडक, शारदा प्रतीक, राजू बजाज, रिषभ डालिया, हरीश सोमानी आदि कई सदस्यों का सहयोग रहा।

पुण्य स्मृति में की जरूरतमंदों की मदद

मालेगांव. महालक्ष्मी माहेश्वरी महिला मंडल अध्यक्ष सरिता कैलाश बाहेती ने अपनी सासु मां और ससुरजी के स्मरणार्थ मालेगांव स्थित आश्रय व पुनर्वसन संस्था को रोजगार निर्वाह हेतु सिलाई मशीन भेंट की। कार्यक्रम महालक्ष्मी माहेश्वरी मंडल के बैनर तले संपन्न हुआ। संस्था द्वारा जो पुराने कपड़े एकत्र किए जाते हैं, उनसे थैलियां सिलकर मार्केट में बिक्री कराने का और थैलियों को बड़ा मार्केट दिलाने का वादा किया। कैलाश बाहेती, मोहित बाहेती, मंडल सदस्य शारदा लाहोटी, वंदना जाजू, इंदू जाजू, बीना भंडारी, शमा जाजू, अंजू दरक, सोनल काला, मनीषा झंवर आदि मौजूद थीं।

परिचय सम्मेलन का होगा आयोजन

नाथद्वारा. नवरात्रि के पावन पर्व पर 13 और 14 अक्टूबर को प्रोफेशनल युवक-युवती के लिए परिचय सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इसमें सिर्फ 120 प्रोफेशनल युवक-युवतियों की एंट्री रखी गई है। परिचय सम्मेलन के अंदर इंट्रोडक्शन, काउंसलिंग व रोचक खेलों द्वारा एक-दूसरे से परिचित करवाया जाएगा। इस परिचय सम्मेलन की विशेषता यह है कि इंडिया से बाहर रहने वाले प्रतिभागी जो इस परिचय सम्मेलन में रुचि रखते हैं उनकी भी वीडियो चैट के द्वारा नाथद्वारा में उपस्थित प्रतिभागी से बातचीत करवाई जाएगी। इस परिचय सम्मेलन में प्रतिभागी का आना जरूरी है। उक्त जानकारी सुमन मूंदड़ा ने दी इनसे मो. 7877431037 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

लड़के-लड़कियों के रिश्ते ढूँढना हुआ बेहद आसान
हमारी वेबसाइट है
इसका सही समाधान

रिश्ते ही रिश्ते

High Status,
Middle Status,
NRI, Manglik, Non Manglik,
Biodata MBA, MCA, Doctor,
Engg. Biodata, CA, CS,
ICWA Biodata

Graduate,
Post Graduate Biodata
Professional Biodata
Businessman Biodata
Service Class Biodata

माहेश्वरी समाज के लिए
60 हजार से अधिक

जैन समाज के लिए
70 हजार से अधिक

अग्रवाल समाज के लिए
1 लाख से अधिक

Registration Free

Website
www.maheshwari.org
www.jain2jain.org
www.agrawal2agrawal.org

Registration Free

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

39/1, Old Rajendra Nagar, New Delhi-110060
Phones :011-25746867, M. : 093129 46867

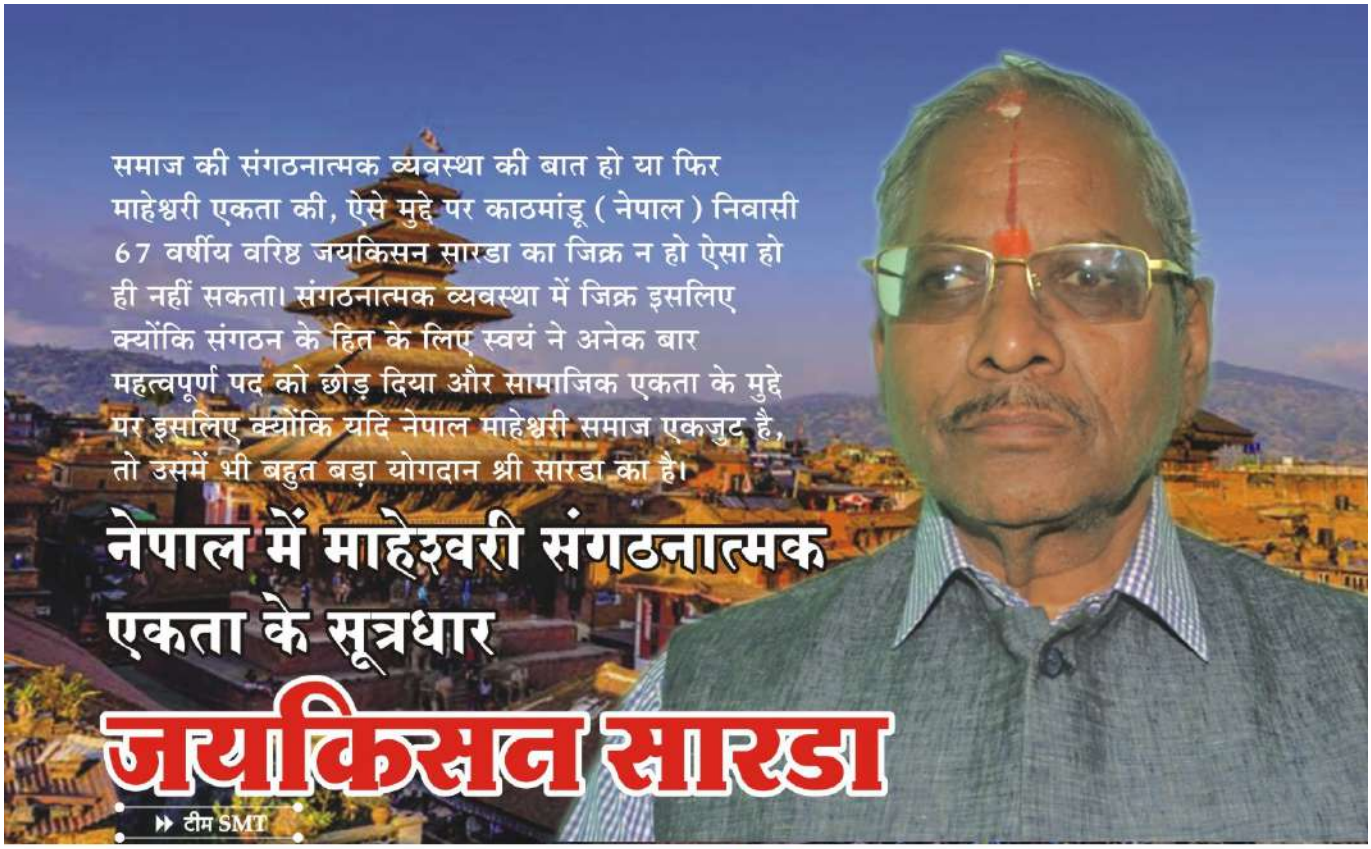

समाज की संगठनात्मक व्यवस्था की बात हो या फिर माहेश्वरी एकता की, ऐसे मुद्दे पर काठमांडू (नेपाल) निवासी 67 वर्षीय वरिष्ठ जयकिसन सारडा का जिक्र न हो ऐसा हो ही नहीं सकता। संगठनात्मक व्यवस्था में जिक्र इसलिए क्योंकि संगठन के हित के लिए स्वयं ने अनेक बार महत्वपूर्ण पद को छोड़ दिया और सामाजिक एकता के मुद्दे पर इसलिए क्योंकि यदि नेपाल माहेश्वरी समाज एकजुट है, तो उसमें भी बहुत बड़ा योगदान श्री सारडा का है।

नेपाल में माहेश्वरी संगठनात्मक एकता के सूत्रधार

जयकिसन सारडा

टीम SMT

न सिर्फ माहेश्वरी समाज बल्कि नेपाल में निवासरत हिंदू समाज में जयकिसन सारडा एक ऐसा नाम है, जिनका उल्लेख होते ही हर कोई स्वतः ही सम्मान से नतमस्तक हो जाता है। नेपाल में महाभूकंप की त्रासदी के समय वे न केवल पीड़ितों की मदद के लिए आगे आए बल्कि उन्होंने इस दौर में भी सनातन संस्कृति को बचाने के लिए गीताप्रेस गोरखपुर की धार्मिक पुस्तकों की अधिकृत दुकान भी काठमांडू में खुलवाई और नेपाली भाषा में कई पुस्तकों का अनुवाद करवाकर धर्म व संस्कृति के संरक्षण में अहम योगदान दिया। वर्तमान में श्री सारडा नेपाल माहेश्वरी परिषद के अध्यक्ष के रूप में समाज को अपनी निःस्वार्थ सेवा दे रहे हैं।

अधूरी शिक्षा में भी शिखर की सफलता

गंगाशहर, बीकानेर राजस्थान से उनके पूर्वज करीब 70 वर्ष पूर्व विराटनगर (नेपाल) आए थे। यहां श्री सारडा का जन्म स्व. श्री जयनारायण सारडा एवं स्व. श्रीमती शकुंतला देवी सारडा के द्वितीय पुत्र के रूप में 28 अगस्त 1951 को विराटनगर (नेपाल) में हुआ। आईएससी की डिग्री के बाद पैतृक व्यवसाय संभालने के कारण बैचलर डिग्री बी.एससी. की शिक्षा को बीच में ही छोड़ना पड़ा, लेकिन पढ़ने के शौक एवं देश-विदेश में भ्रमण ने उन्हें कई अन्य भाषाओं में पारंगत कर दिया। 2 मार्च 1976 के दिन नागौर राजस्थान निवासी स्व. श्री माणकलाल सोनी की सुपुत्री सुमित्राजी से उनका विवाह संपन्न हुआ। वर्तमान में ललित व भास्कर दो पुत्र के साथ उनका भरापूरा परिवार है। कॉस्मेटिक होलसेलर के रूप में दुकान प्रारंभ की एवं समय के साथ इन्हीं सामान के आयातकर्ता का कार्य भी कर रहे हैं। वर्तमान में श्री सारडा परफ्यूम, टॉइलेट्री के आयातकर्ता व थोक विक्रेता भी हैं, जिस व्यवसाय को उनके पुत्र संभाल रहे हैं। श्री सारडा स्वयं नेपाल स्टॉक एक्सचेंज अंतर्गत शेयर की बड़ी खरीदी-बिक्री का कार्य करते हैं एवं नेपाल इन्वेस्टर फोरम के वरिष्ठ सलाहकार भी हैं।

माहेश्वरी समाज काठमांडू, युवा व महिला मंच की स्थापना

श्री सारडा का परिवार विराटनगर में निवास करता था लेकिन काठमांडू में उनके पारिवारिक उद्योग का कार्यालय होने से वर्ष 1970 से स्वयं उनका वहां आगमन प्रारंभ हो गया। फिर पारिवारिक कारणों से 14 फरवरी 1984 को सपरिवार ही काठमांडू आ गए और यही उनकी कर्मभूमि बन गई। स्व. ई. सत्यनारायण राठी के नेतृत्व में माहेश्वरी समाज काठमांडू की स्थापना 1984 में महेश नवमी के दिन हुई। इसमें श्री सारडा संस्थापक सदस्य के रूप में शामिल थे। करीब 50 परिवारों की उपस्थिति में माहेश्वरी समाज काठमांडू का गठन हुआ था। बाद में श्री सारडा इस संगठन के अध्यक्ष भी रहे। माहेश्वरी समाज काठमांडू की स्थापना के 7 वर्ष पश्चात माहेश्वरी युवा मंच की स्थापना सन् 1991 में हुई। प्रथम अध्यक्ष स्व. श्री सत्यनारायण राठी (जूनियर) व प्रथम महासचिव स्वयं श्री सारडा थे। संस्थापक महासचिव बनने के पूर्व उन्होंने करीब 100 माहेश्वरी परिवारों वाले काठमांडू शहर में युवा साथियों के घर-घर पहुंचकर माहेश्वरी युवा मंच काठमांडू के गठन की नींव रखी। उन्हीं के प्रयासों से वर्ष 2011 में महिला मंच का भी गठन किया गया। श्रीमती अर्चना सारडा इसकी प्रथम अध्यक्ष बनीं।

महासभा के अनुरोध पर नेपाल माहेश्वरी परिषद का गठन

वर्ष 1994 में महासभा की कार्यकारी मंडल की बैठक तथा महिला व युवा संगठन कार्यसमिति की बैठक विराटनगर में हुई। इसमें महासभा के भीष्म पितामह कहे जाने वाले स्व. श्री रामगोपाल माहेश्वरी, अध्यक्ष बद्रीनारायण राठी, महिला संगठन अध्यक्ष मनोरमा लड्ढा एवं युवा संगठन अध्यक्ष रमेश मर्दा का आगमन हुआ। विराटनगर के इस कार्यक्रम में रमेश मर्दा के उद्‌बोधन से श्री सारडा उनके मुरीद बन गए। इस बैठक में नेपाल एवं भारत से करीब 800 लोगों की उपस्थिति रही। इस बैठक के पश्चात महासभा के अनुरोध पर प्रदेश सभा के रूप में नेपाल माहेश्वरी परिषद की तदर्थ समिति के गठन के विषय में बराबर चर्चा जारी रही। अंततः विराटनगर में आयोजित एक बैठक में स्व. श्री बैजनाथ सोनी के संयोजकत्व में नेपाल माहेश्वरी परिषद का गठन हुआ। इसमें श्री सारडा सहसंयोजक एवं विराटनगर के घनश्याम राठी सचिव सर्वसम्मति से चुने गए। इस तदर्थ समिति में नेपाल के सभी स्थानीय संगठनों की सहभागिता रही। विधान के निर्माण हेतु एक समिति का गठन किया गया। इसके संयोजक चंपालाल राठी विराटनगर थे एवं तदर्थ समिति के समय महासभा में कार्यसमिति सदस्य के रूप में देवकिशन मूंदड़ा ने प्रतिनिधित्व किया। नेपाल माहेश्वरी परिषद का विधान तैयार कर संस्था को रजिस्टर्ड भी करवाया गया। परिषद के गठन के समय नेपाल में 7 स्थानीय संगठनों की संरचना थी, जिसे संशोधन में विस्तृत रूप प्रदान करते हुए स्थानीय संगठनों की संख्या 9 तक पहुंच चुकी है। इस परिषद को अभा माहेश्वरी महासभा कार्यकारी मंडल के कार्यसमिति सदस्य चयन करने का अधिकार भी है।

माहेश्वरी समाज काठमांडू का पंजीयन एवं भवन निर्माण

वर्ष 2000 में श्री सारडा की विशिष्ट कार्यक्षमता को देखते हुए माहेश्वरी समाज काठमांडू ने बृजगोपाल इनानी की अध्यक्षता में श्री सारडा को माहेश्वरी समाज काठमांडू का महासचिव चयनित किया। पिछली 15 वर्षों की बैठक में इस बात की चर्चा हमेशा रही थी कि काठमांडू में माहेश्वरी भवन की स्थापना होनी चाहिए। काफी प्रयास होने के बावजूद भी इसमें सफलता प्राप्त नहीं हो सकी। इसके लिए श्री सारडा के प्रयासों से माहेश्वरी समाज को कानूनी रूप देते हुए विधान का निर्माण करवाते हुए माहेश्वरी समाज काठमांडू को रजिस्टर्ड करवाया गया, जिसके नाम से आज भव्य माहेश्वरी भवन स्थापित हो सफल रूप से संचालित है। इसका लोकार्पण वर्ष 2007 में हुआ था एवं इस कार्यक्रम में विशिष्ट वक्ता के रूप में भारत के सर्वोच्च न्यायालय के प्रमुख न्यायाधीश श्री रमेशचंद लाहोटी की उपस्थिति रही। श्री सारडा श्री लाहोटी को अपना प्रेरणास्रोत मानते हैं।

मारवाड़ी समाज में श्री सारडा की भूमिका

काठमांडू के एक दुर्गम स्थल होने के कारण माहेश्वरी ही नहीं यहां मारवाड़ियों की संख्या भी ज्यादा नहीं थी। अतः मारवाड़ी समुदाय द्वारा 65 वर्ष पूर्व मारवाड़ी सेवा समिति नेपाल की स्थापना की गई। श्री सारडा इसके प्रथम माहेश्वरी कार्यसमिति सदस्य व सलाहकार भी रहे। वर्ष 2001 में प्रथम अखिल भारतवर्षीय अंतरराष्ट्रीय मारवाड़ी सम्मेलन का आयोजन काठमांडू में हुआ। उनकी कार्यक्षमता को देखकर भारत से आए

हुए सभी मेहमानों की व्यवस्था की जिम्मेदारी उन्हें ही सौंपी गई। हाल ही नेपाल में मारवाड़ी समाज की शीर्षस्थ संस्था नेपाल राष्ट्रीय मारवाड़ी परिषद ने श्री सारडा का चयन सलाहकार के रूप में किया है।

महासभा एवं परिषद का किया नेतृत्व

नेपाल माहेश्वरी परिषद के गठन पश्चात सन् 1998-1999 से ही माहेश्वरी समाज काठमांडू का प्रतिनिधित्व करते हुए महासभा में काठमांडू के प्रथम कार्यकारी मंडी सदस्य बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ एवं महासभा के 23वें व 24वें सत्र में भी कार्यकारी मंडल सदस्य के रूप में आप कार्यसमिति सदस्य रहे। इसी वर्ष महासभा के लिए पूर्वांचल संयुक्त मंत्री प्रत्याशी के लिए श्री सारडा सबसे आगे चल रहे थे, लेकिन समाजहित में निर्वाचन प्रक्रिया को त्यागकर सर्वानुमति से चंपालाल राठी के लिए इस पद का त्याग कर दिया। वर्ष 2016 में महासभा के 28वें सत्र में नेपाल माहेश्वरी परिषद के षष्टम सत्र के अध्यक्ष सर्वसम्मति से चुने गए। अपने इस वर्तमान कार्यकाल में उन्होंने महेश जल सेवा, रक्तदान जीवन दान, भवन निर्माण हेतु माहेश्वरी समाज मेची द्वारा 5 कट्ठा जमीन का क्रय, माहेश्वरी बंधुओं को संगठित करने हेतु मोबाइल एप्स का निर्माण, यूट्यूब के माध्यम से एएमपी न्यूज चैनल एवं नेपाल के दोनों संभागों में 2 अस्पताल से समझौता करते हुए पत्रिका के ग्राहक सदस्यों की संख्या 60 से 275 तक पहुंचाने के साथ ही सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण कार्यक्रम को पूर्णता प्रदान की। गुजरात एवं नेपाल में आई बाढ़ की स्थिति को देखते हुए नेपाल माहेश्वरी परिषद आपदा कोष का इसी सत्र में निर्माण कर गुजरात के बाढ़ पीड़ितों को आर्थिक सहयोग भी प्रदान करवाई। इस सत्र में नेपाल को पूर्वांचल अंतर्गत प्रदेश के स्थान पर एक पृथक राष्ट्र के रूप में मान्यता प्रदान करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। महासभा ने भी अपने विधान में नेपाल को नेपाल चैप्टर के रूप में मान्यता प्रदान की है। महासभा की पांचवीं कार्यसमिति की बैठक को नेपाल चैप्टर के संयोजकत्व में माहेश्वरी अंतरराष्ट्रीय समागम के रूप में संपन्न किया, जिसमें नेपाल के उपराष्ट्रपति श्री नंदबहादुर पुन पासाङ्ग एवं नेपाल में भारतीय दूतावास के महामहिम राजदूत मंजीब सिंह पुरी के साथ ही देश-विदेश खासकर अमेरिका से अरुण मूंदड़ा इसमें शामिल हुए।

धर्म की सेवा के लिए अभूतपूर्व प्रयास

सनातन संस्कृति को समर्पित विश्वविख्यात संस्था गीताप्रेस गोरखपुर द्वारा भारत के विभिन्न 21 राज्यों के शहरों में शाखाएं स्थापित कर लगभग 14 भाषाओं में पुस्तक प्रकाशन का कार्य किया जा रहा है। इनकी निजी दुकानें भारत के प्रत्येक राज्य में होने के बावजूद अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक भी नहीं थी। श्री सारडा के प्रयास व सूरत मानव सेवा संघ गुजरात के उपाध्यक्ष रामनारायण चांडक के सहयोग से नेपाल में गीताप्रेस गोरखपुर की अंतरराष्ट्रीय शाखा के रूप में 11 जून 2016 को प्रथम अंतरराष्ट्रीय निजी दुकान माधवराज सुमार्गी स्मृति भवन पाशुपत क्षेत्र वनकाली, काठमांडू में खुली। पशुपति क्षेत्र विकास कोष के तत्कालीन सदस्य सचिव डॉ. गोविंद टंडन के संयुक्त करकमलों से इसका विधिवत शुभारंभ हुआ। कानूनी रूप से संपूर्ण जिम्मेदारी श्री सारडा को सौंपी गई जिसका वे ईमानदारी से निर्वाह कर रहे हैं। गीता प्रेस सेवा केंद्र नेपाल की पहल पर गीता, रामायण, भागवत, पुराण, उपनिषद, नित्यपाठ आदि के नेपाली अनुवाद का कार्य तेजी से चल रहा है। इसी क्रम में रामचरितमानस,

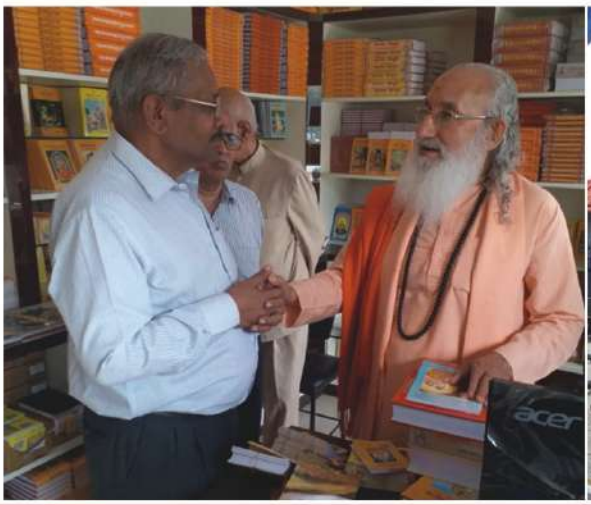

श्रीमद्भगवदगीता, नित्यकर्म सहित कुछ ग्रंथों का नेपाली में अनुवाद होकर प्रकाशन हो चुका है एवं गत 5 अगस्त 2018 के दिन श्रीमद्भगवत गीता एवं सरल गीता के नेपाली संस्करण का विमोचन कार्यक्रम संपन्न हुआ, जिसमें 700 से ज्यादा लोगों की उपस्थिति रही। श्री सारडा के नेतृत्व में नेपाल के घर-घर में गीता पहुंचाने के उद्देश्य से भारत एवं नेपाल से पिछले एक सप्ताह में करीब 20 लाख रुपए की पुस्तकें निःशुल्क वितरण हेतु राशि एकत्र हो चुकी है। शिवपुराण, वाल्मीकि रामायण और हिमवंत खंड प्रकाशन की तैयारी में हैं। गीताप्रेस साहित्य का नेपाली भावानुवाद कार्य को करवाते हुए 20 से ज्यादा पुस्तकों का अनुवाद करवा चुके हैं एवं आगामी 2 वर्षों में इसकी संख्या 100 पार पहुंचाने का लक्ष्य है। माहेश्वरी सदन प्रांगण में स्थित मंदिर के साथ राजस्थान के देशनोक बीकानेर स्थित श्री करणी माता मंदिर के स्वरूप में तथा काठमांडू नेपाल के 600 वर्ष पुराने नक्साल भगवती मंदिर में एक दिव्य धाम की स्थापना में भी श्री सारडा की अहम भूमिका रही। इस अवसर पर श्री सारडा ने श्रीमद् देवी भागवत महापुराण का सप्ताह यज्ञ करवाकर मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा करवाने में अहम भूमिका का निर्वाह किया।

मानवसेवा में भी समर्पित

वर्ष 2015 में नेपाल में भयानक महाभूकंप आया, जिसमें भारी जन-धन की हानि हुई। इसमें माहेश्वरी समाज काठमांडू की ओर से दुर्गम पहाड़ियों के लोगों तक राहत सामग्री पहुंचाई गई। भूकंप पीड़ितों को करोड़ों रुपए की सामग्री के रूप में राशन, कपड़ा, आवश्यक दैनिक इस्तेमाल की वस्तुएं एवं दवाएं न सिर्फ पहाड़ों तक पहुंचाई बल्कि अस्पताल तक की व्यवस्था करवाकर दी। 200 परिवारों को घर बनवाकर हस्तांतरण करवाए तो 300 परिवारों को घर बनाने हेतु छत निर्माण के लिए एल्युमीनियम कोरोगटेड शीट प्रदान की। 15 बैड के एक अस्पताल एवं 350 बच्चों के स्कूल का पुनर्निमाण भी करवाया। इन कार्यों में श्री सारडा को विश्वभर के समस्त बंधुओं विशेषकर सूरत मानव सेवा संघ का अत्यधिक सहयोग प्राप्त हुआ। उनकी मानव सेवा की यह यात्रा विपदाओं तक ही सीमित नहीं है। उनके प्रयासों से मानवसेवा आश्रम भी संचालित है। गोविंद टंडन प्रमुख संरक्षक एवं श्री सारडा के संरक्षण में मानस सेवा आश्रम का विधिवत कानूनी संचालन हो रहा है। इसके प्रथम अध्यक्ष रामजी अधिकारी हैं। इस संस्था द्वारा अब तक 750 लक्ष्मीनारायणों का उद्धार किया जा चुका है एवं 250 से ज्यादा लोगों का पारिवारिक मिलन करवाया जा चुका है। आज नेपाल भर में इस संस्था की 12 शाखाएं स्थापित हो चुकी हैं। जहां 250 से ज्यादा लक्ष्मीनारायण को सेवा प्रदान की जा रही है एवं सौ से ज्यादा अभियान्ता अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। इस कार्य हेतु अर्थ व्यवस्थापन कहां से हो रहा है यह तो भगवान श्री पशुपतिनाथ ही जानते हैं।

इंदौर निवासी विष्णुदास राठी की पहचान जितनी एक सफल व्यवसायी के रूप में है, उससे अधिक 91 वर्ष के युवा के रूप में है। वे इस उम्र में भी पूर्ण स्वस्थ व ऊर्जा से उसी तरह भरपूर हैं, जितने युवा अवस्था में थे।

91 वर्ष के युवा विष्णुदास राठी

टीम SMT

श्री राठी का जिक्र होते ही न सिर्फ उनके हम उम्र बल्कि युवा वर्ग भी उनके 91 वर्ष के इस चिर यौवन के सामने नतमस्तक हुए बिना नहीं रहता। वास्तव में यह कोई करिश्मा नहीं है, बल्कि उनकी अनुशासिक जीवन शैली का प्रतिफल है। व्यवसाय की दौड़ में दौड़ते हुए भी श्री राठी ने सदैव एक अनुशासित जीवन जिया, जिसमें प्राकृतिक चिकित्सा, योग साधना व मेडिटेशन का सामंजस्य बनाए रखा। उनका मानना है कि इस सफलता की यात्रा में ये शक्तियों व साधनाएं ही उनकी शक्ति बनी क्योंकि इसके लिए मानसिक व शारीरिक स्वास्थ को बनाए रखना भी जरूरी होता है।

इस तरह चली सफलता की यात्रा

मप्र के गाडरवारा गांव में जन्मे श्री राठी ने प्रारंभिक शिक्षा के बाद जबलपुर से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। फिर बहुत छोटी उम्र में ही कर्म क्षेत्र में इस सूत्र के साथ उतर गए कि काम छोटा या बड़ा नहीं होता मेहनत, ईमानदारी व लगन उसे बड़ा बना देती है। यही कारण था कि आप गुजरात से शुरू कर पंजाब की सीमाओं तक एवं फिर मालवा के पठार तक अपने श्रम से अपने कार्यों की गरिमा को बढ़ाते रहे। टैक्सटाइल्स, पॉवर केबल्स, स्टील वायर, स्टील ट्यूब, फूड इंडस्ट्रीज आदि विभिन्न उद्योगों में विगत 68 वर्षों से सफलतापूर्वक कार्यरत रहकर अब अपने व्यवसाय सवित यूनिवर्सल लिमिटेड के चेयरमैन पद पर आसीन हैं। इसमें आप यार्न, डेनिम, पॉलिस्टर, फ्यूल, कंस्ट्रक्शन एवं रियल एस्टेट एवं फाइनेंस के क्षेत्र में कार्यरत हैं। इस लंबी यात्रा में इनकी साथी रही इनकी प्रतिभा, दृढ़संकल्प, कठिन परिश्रम एवं क्षमता। श्री राठी ने अपने जीवनकाल में अमेरिका, इंग्लैंड, यूरोप, अफ्रीका, अरब आदि देशों की यात्राएं की हैं और वहां से भी जानकारियां प्राप्त करने में पीछे नहीं रहे। श्री राठी की इस जीवन यात्रा में उनका संबल बनीं धर्मपत्नी सावित्रीदेवी, जिन्होंने हर कदम पर उनका साथ दिया। वर्तमान में उनके व्यवसाय की जिम्मेदारी पुत्र अखिलेश राठी संभाल रहे हैं।

सेवा पथ के भी साथी

अपनी तमाम व्यस्तता के बावजूद श्री राठी समाजसेवा के क्षेत्र में भी

सदैव अपना यथोचित योगदान देते रहे हैं। आप रोटरी क्लब से वर्ष 1968 से जुड़े हुए हैं। वर्ष 1972 में रोटरी क्लब, राजपुरा के अध्यक्ष एवं वर्ष 1978 में रोटरी क्लब, इंदौर सेंट्रल के संस्थापक अध्यक्ष रह चुके हैं। वर्तमान में चेयरमैन के रूप में श्री गोपीकृष्ण रामकृष्ण राठी चेरिटेबल ट्रस्ट तथा ट्रस्टी के रूप में श्री माहेश्वरी जनकल्याण ट्रस्ट, एबी माहेश्वरी एजुकेशन ट्रस्ट, श्री माहेश्वरी विवाह प्रकोष्ठ व श्री माहेश्वरी डीडवाना 51 घर थोक सार्वजनिक ट्रस्ट आदि को

अपनी सेवा दे रहे हैं। उनकी सेवा यात्रा यहीं तक सीमित नहीं है, समाज हो या अन्य समाजसेवी गतिविधियाँ जहां भी उनकी आवश्यकता पड़ी वे अपना यथोचित योगदान देने में कभी पीछे नहीं रहे। उनकी समाजसेवी गतिविधियों में पत्नी श्रीमती राठी के साथ ही पुत्र अखिलेश व पुत्रवधू ममता राठी भी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग दे रहे हैं। उनका परिवार वर्तमान में पौत्री निमिषा, कृति व पौत्र कान्हा से हराभरा है।

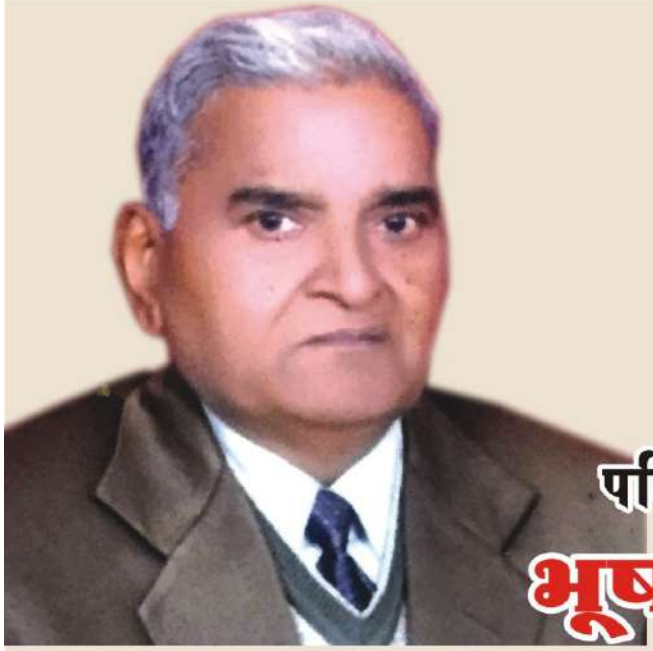

प्रख्यात एडवोकेट रहे लेकिन इस जिम्मेदारी की व्यस्तता भी समाज से दूर नहीं कर पाई। वे जिस तरह न सिर्फ समाज से संबद्ध रहे बल्कि अपनी सतत सेवा भी देते रहे, यह स्थिति युवा पीढ़ी के लिए प्रेरक है।

पश्चिमी उप्र प्रदेश सभा संरक्षक

भूषणशरण महेश

कमलेन्द्र माहेश्वरी

समाज के वरिष्ठ एडवोकेट भूषण शरण महेश (एडवोकेट) को मुजरफ्फनगर उत्तर प्रदेश को सिविल बार एसोसिएशन के प्रांगण में जिला जज मुजरफ्फनगर द्वारा वरिष्ठतम अधिवक्ता एवं 55 वर्ष से अधिक समय तक वकालात के लिए शॉल ओढ़ाकर व प्रशस्ति पत्र भेंटकर सम्मानित किया गया। आप सिविल बार एसोसिएशन के वर्ष 1988, 1994, 2001, 2005 में अध्यक्ष रह चुके हैं तथा वर्ष 2009, 2012 व 2013, 2017 में सिविल बार एसोसिएशन की एल्डर कमेटी के चेयरमैन पद पर सुशोभित रहे। श्री महेश को सिविल बार एसोसिएशन द्वारा वरिष्ठ एडवोकेट का अवॉर्ड देकर सम्मानित भी किया गया।

समाज की सतत सेवा

एडवोकेट का जीवन कितना व्यस्त होता है यह सभी जानते हैं, लेकिन यह वस्तता भी श्री महेश के समाज के प्रति दायित्व के जज्बे के सामने नतमस्त हो गई। वे अपनी जिम्मेदारी निभाने में सदैव आगे ही रहे, चाहे इसके लिए आर्थिक नुकसान ही क्यों न उठाना पड़ा हो। श्री महेश माहेश्वरी सभा मुजफ्फरनगर सभा के संस्थापक रहे और 23 साल तक लगातार निर्विरोध सचिव रहे एवं बाद में 2 सत्र तक अध्यक्ष पद पर रहे। इसके पश्चात वे पश्चिम उत्तर प्रदेश माहेश्वरी सभा के 2 सत्र तक अध्यक्ष भी रहे। अभा भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के इचलकरंजी अधिवेशन में संयुक्त मंत्री उत्तरांचल निर्विरोध चुने गए और अब पश्चिमी उत्तरप्रदेश माहेश्वरी सभा के संरक्षक हैं।

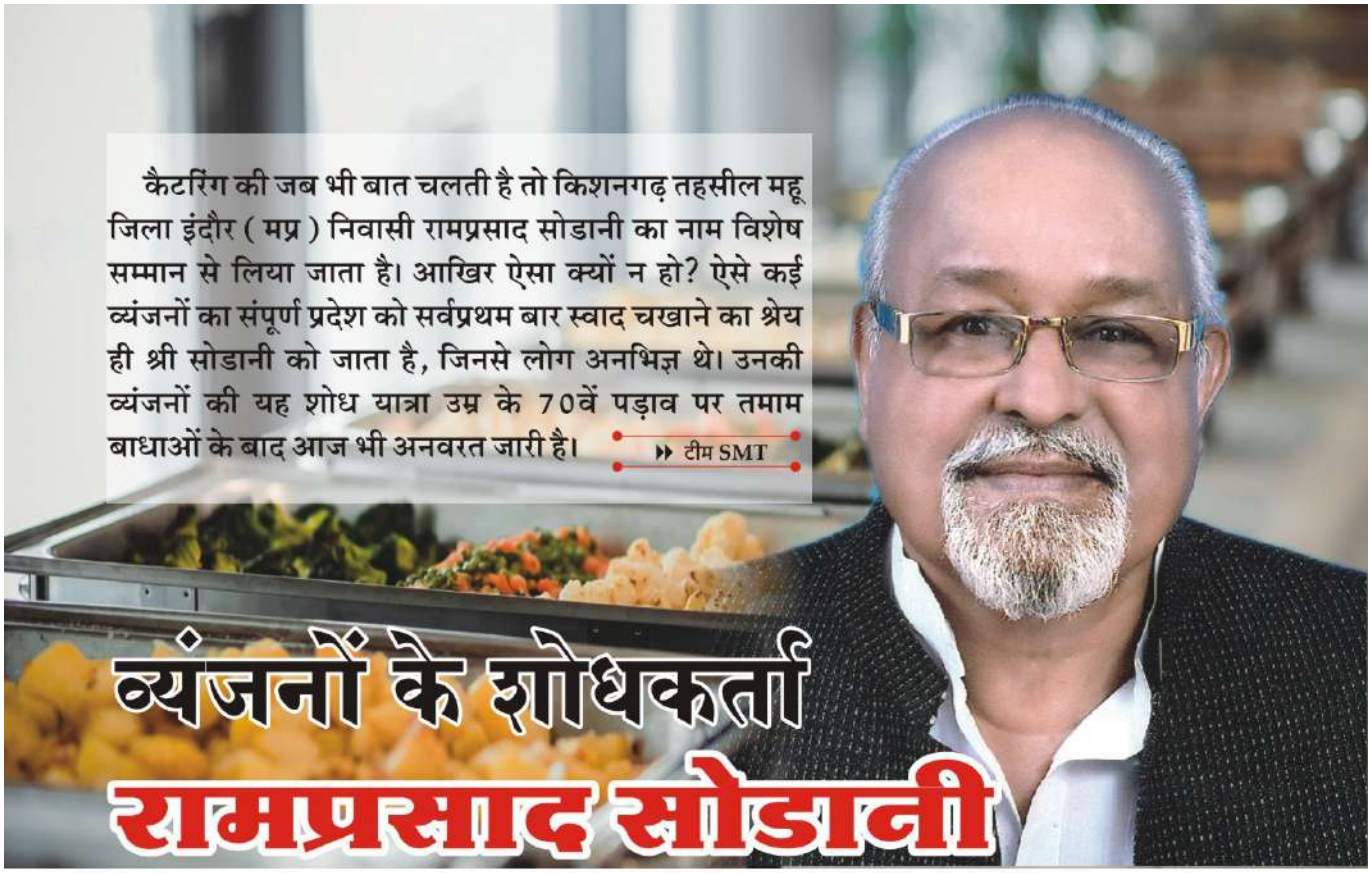

कैटरिंग की जब भी बात चलती है तो किशनगढ़ तहसील महू जिला इंदौर (मप्र) निवासी रामप्रसाद सोडानी का नाम विशेष सम्मान से लिया जाता है। आखिर ऐसा क्यों न हो? ऐसे कई व्यंजनों का संपूर्ण प्रदेश को सर्वप्रथम बार स्वाद चखाने का श्रेय ही श्री सोडानी को जाता है, जिनसे लोग अनभिज्ञ थे। उनकी व्यंजनों की यह शोध यात्रा उम्र के 70वें पड़ाव पर तमाम बाधाओं के बाद आज भी अनवरत जारी है।

▸▸ टीम SMT

व्यंजनों के शोधकर्ता रामप्रसाद सोडानी

किशनगंज महू जिला इंदौर निवासी समाज के वरिष्ठ 70 वर्षीय रामप्रसाद सोडानी की पहचान एक अत्यंत हंसमुख व समाजसेवा के लिए सदैव तत्पर रहने वाले समाजसेवी के रूप में तो है ही। इससे बढ़कर उनकी विशिष्ट पहचान व्यंजन निर्माण के विशेषज्ञ के रूप में भी है, जिन्होंने सर्वप्रथम बार संपूर्ण प्रदेश को फ्रूट रबड़ी, ड्रायफ्रूट रबड़ी, मैंगो रबड़ी आदि का स्वाद चखाया। श्री सोडानी ने एक सफल कैटरर के रूप में कई नए व्यंजनों का निर्माण किया। व्यंजनों के क्षेत्र में उनके शोध की यह यात्रा उम्र के इस पड़ाव पर भी अनवरत जारी है, जबकि वे अपना व्यापार-व्यवसाय पुत्र रितेश सोडानी को वर्ष 2013 से ही सौंप चुके हैं। 30 वर्षों से मधुमेह से ग्रस्त हैं व वर्ष 2009 में बायपास सर्जरी हो चुकी है, धर्मपत्नी के वर्ष 2014 में देहांत का आघात भी लगा, लेकिन उनकी सक्रियता कम नहीं हुई।

उतार-चढ़ाव भरा जीवन

श्री सोडानी का जन्म 12 फरवरी 1948 को स्व. श्री नारायण व स्व. श्रीमती नारायण सोडानी के यहां महूं मे हुआ था। पिताजी का पुश्तैनी किराना व्यवसाय था। स्वयं ने भी मात्र 16 वर्ष की उम्र से एजेंसियों का काम किया। पिताजी का वर्ष 1969 में अचानक स्वर्गवास हो गया तो पुश्तैनी किराना व्यवसाय संभालना पड़ा। मात्र 19 वर्ष की उम्र में प्रेम विवाह द्वारा स्व. श्री नंदलाल जाजू की सुपुत्री कृष्णा के साथ परिणय बंधन में बंध गए।

समाज की सेवा में समर्पित

स्व. श्री रामनारायण माहेश्वरी (लढ़ा) की प्रेरणा से मात्र 15 वर्ष की उम्र से समाज व श्री माहेश्वरी विद्यालय में सक्रिय हो गए। माहेश्वरी तरुण मंडल के अध्यक्ष 15 वर्ष की आयु में बने। कुछ वर्षों बाद मंडल बंद हो गया। सन् 1971 में माहेश्वरी तरुण मंडल फिर बना, जिसके वे पुनः अध्यक्ष बने। उनके अथक प्रयासों से श्री माहेश्वरी विकास मंच का गठन 20 वर्ष पूर्व किया गया, जिसमें होली मिलन समारोह एवं श्री शरद पूर्णिमा उत्सव आदि कई आयोजन होते हैं। आज 71 वर्ष की उम्र में भी वे समाज को सक्रिय रूप से सेवा दे रहे हैं। समाज में कई वर्षों तक श्री महेश नवमी उत्सव, श्री अन्नकूट उत्सव, श्री होली मिलन समारोह, श्री शरद पूर्णिमा उत्सव में भोजन प्रसाद बनाने का कार्य भी सफलतापूर्वक किया। माहेश्वरी समाज महू में शुरू से ही पांच पंच प्रणाली है। इसमें सबसे कम 35 वर्ष की उम्र में समाज के पंच बने एवं लगातार 35 वर्षों तक पंच पद पर सफलतापूर्वक कार्य किया। धर्मपत्नी स्व. श्रीमती कृष्णा सोडानी ने भी श्री माहेश्वरी महिला मंडल की सक्रिय सदस्य रहते हुए अध्यक्ष व कोषाध्यक्ष पद की जिम्मेदारियां सफलतापूर्वक निभाईं थी। पारिवारिक संस्था मित्र मंडल के भी वे संयोजक हैं।

ऐसे बने व्यंजन विशेषज्ञ

श्री सोडानी ने सन् 1993 में महू में सबसे पहले कैटरिंग (भोजन) का व्यवसाय शुरू किया। वैसे उनकी शुरू से ही रसोई (भोजन) बनाने के कार्य में बहुत रुचि थी। उनके रसोई के गुरु ताऊजी स्व. श्री गोपीकिशन सोडानी (बादशाह सेठ) थे। उन्होंने कैटरिंग के कार्य में गुणवत्ता से कभी भी समझौता नहीं किया ना ही किसी से कैटरिंग के कार्य में अनावश्यक प्रतिस्पर्धा की। उन्होंने भोजन में कई नए व्यंजनों का निर्माण किया तथा कई तरह की मिठाई, नमकीन व्यंजन भी बनाए। पुत्र रितेश सोडानी कैटरिंग के कार्य में सक्रिय रहे। किराने का पुश्तैनी व्यापार भी है। कैटरिंग कार्य 2012-13 में अपने पुत्र रितेश सोडानी को सुपुर्द कर इस कार्य से मुक्त हो गए। राजनीति में भारतीय जनता पार्टी से संबद्ध रहे। 1984 के पूर्व तो वे पार्टी के प्रथम नगराध्यक्ष भी रहे हैं, लेकिन किन्हीं कारणों से फिर राजनीति से दूरी बना ली।

समाचार पत्र-पत्रिकाओं का एक स्तंभ होता है, 'आपके पत्र' जो पत्र लेखकों के लिए ही होता है। कहने के लिए तो यह एक अत्यंत साधारण सा स्तंभ है, लेकिन इसके द्वारा आमजन की आवाज को किस तरह उठाया जा सकता है, इसी की मिसाल बन चुके हैं उज्जैन निवासी ख्यात पत्र लेखक प्रो. के.डी. सोमानी।

टीम SMT

पत्र लेखन से बने आमजन की आवाज

प्रो.के.डी. सोमानी

शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय झाबुआ से वर्ष 2001 में प्राचार्य के रूप में सेवानिवृत्त होने के बाद से ही प्रो. सोमानी भगवान महाकालेश्वर की नगरी उज्जैन के ही होकर रह गए। वे यहां ऋषिनगर विस्तार के क्षेत्र में निवास करते हैं। उम्र के 78वें वर्ष का पड़ाव पूर्ण होने के बावजूद न तो देश, न ही समाज और न ही साहित्य के प्रति अपनी जिम्मेदारियों से कभी विमुख हुए। उनकी विशिष्ट पहचान एक ऐसे प्रखर पत्र लेखक के रूप में है, जिन्होंने सदैव आमजन की आवाज उठाई है। इतना ही नहीं साहित्य के प्रति अवदान के रूप में प्रतिमाह वे पत्रिका नवनीत की 10-12 प्रतियां खरीदकर युवा वर्ग में वितरित कर देते हैं। इसके पीछे लक्ष्य होता है, तो बस यही कि लोगों का साहित्य के प्रति रुझान सदैव बना रहे। समाज संगठन में बिना किसी पद प्रतिष्ठा की लालसा के सदैव सक्रिय रहे और अपना योगदान देते रहे।

प्रतिभा व ईमानदारी ही रही पहचान

प्रो. सोमानी का जन्म इंदौर में 26 सितंबर 1940 में श्रीमती आसीबाई व श्री बद्रीनारायण सोमानी के यहां हुआ था। एम.कॉम. वर्ष 1961 में प्रथम श्रेणी में विक्रम विवि की मेरिट सूची में द्वितीय स्थान के साथ किया। फिर शासकीय कॉलेज के व्याख्याता के रूप में नवंबर 1961 में सेवा यात्रा प्रारंभ की। पहली नियुक्ति शास. महा. अंबिकापुर में हुई। वर्ष 1961 में ही इंदौर के परवाल परिवार में विवाह संपन्न हुआ। मप्र के विभिन्न कॉलेजों में 40 वर्ष सेवा के बाद 2001 में शा. पीजी कॉलेज के प्राचार्य के पद से सेवामुक्त हो गए। प्रो. सोमानी अपने जीवन में समय की पाबंद पर विशेष जोर दिया। एक बार जावरा कॉलेज में कक्षा में 15 मिनट लेट होने पर आधे दिन के अवकाश के आवेदन के साथ प्राचार्य कक्ष में जाकर उपस्थित हो गए। प्राचार्य ने यद्यपि आधे दिन का अवकाश स्वीकृत नहीं किया, तथापि इनसे वे प्रभावित अवश्य हुए।

पत्र लेखन ने दिलाया सम्मान

सेवानिवृत्ति के बाद पत्र लेखन व साहित्यिक गतिविधि में विशेष योगदान दिया। नईदुनिया, चौथासंसार, नवनीत, अहा जिंदगी, भास्कर आदि में पत्र लेखन किया तथा लेख भी छपे। वर्ष 2008 में माणिकचंद वाजपेयी पत्र लेखन समिति के इंदौर में आयोजित कार्यक्रम में 35 प्रतिभागी में इनके पत्र को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वर्ष 2014 में उज्जैन के महेश नवमी कार्यक्रम में भी सम्मानित हुए। जावरा के पत्र लेखन संघ द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में इनके पत्र 'सत्यमेव जयते की सार्थकता' को प्रथम पुरस्कार मिला। नईदुनिया में उनके विशेष पत्र करीब 10 से 12 छपे व बिजनेस स्टैंडर्ड में 'व्यापार गोष्ठी' व 'आपका पक्ष' में भी पर्याप्त स्थान मिला। खेलकूद में क्रिकेट व बैडमिंटन में विशेष रुचि रही। वर्तमान में ऋचा विचार मंच, पेंशनर संघ व बौद्धिक संस्था से भी सक्रिय रूप से संलग्न हैं। धर्मपत्नी अब नहीं रहीं यह अत्यंत गहरा तो था लेकिन अपने इन योगदानों में उन्होंने फिर भी कोई फर्क नहीं पड़ने दिया।

आपसे कहा जाता है -

- संकट निवारण हेतु पानी में नारियल बहा दें।
- सांप दिखे तो काम टालें।
- नल को पानी टपकता न छोड़ें।

... और भी बहुत कुछ **तो फिर...**

ऐसा क्यों?
aisa kyon
जिसमें छुपा है आपके हर क्यों का जवाब

प्रश्न उठना स्वाभाविक है - "ऐसा क्यों?" लेकिन इसका उत्तर देगा कौन?
इसका उत्तर देगी गहन अध्ययन से संजोई पुस्तक

Rs. 100/-
डाक खर्च सहित

90, विद्यानगर, साँवेर रोड, उज्जैन (म.प्र.) फोन - 0734-2526561, 2526761, मो. 094250-91161

अच्छाई वह सुगंध है जो हर करीबी को भी महका देती है। समाजसेवा के मामले में नागपुर निवासी 73 वर्षीय वरिष्ठ गोपाल सादानी के मामले में यह बात शत-प्रतिशत खरी उतरती है। समाजसेवा के पथ पर उन्होंने ऐसे निःस्वार्थ भाव से कदम रखे कि पूरा परिवार ही पूर्ण समर्पित भाव से उनका अनुसरण कर रहा है।

समाजसेवा की खुशबू फैलाते गोपाल सादानी

टीम SMT

नागपुर माहेश्वरी समाज हो या अन्य समाजसेवी संस्थाओं की गतिविधियां लगभग अधिकांशतः श्री सादानी के योगदानों से अछूती नहीं है। इसमें भी उनकी विशेषता यह रही कि उन्होंने कभी-भी पद-प्रतिष्ठा तक की अपेक्षा नहीं की। बस मन ने कहा कि अपने कर्तव्य का निर्वहन करो तो उनके कदम चल पड़े, हर सेवा गतिविधि में योगदान देने के लिए। श्री सादानी श्री बीकानेरी माहेश्वरी पंचायत, अग्रवाल एकता क्लब, बरड़ी पंचायत आदि से लंबे समय से सक्रिय रूप से सम्बद्ध होकर अपना योगदान दे रहे हैं। मारवाड़ी, फिल्मी गीत (मुकेश के) तथा भजन गाना न सिर्फ उनका शौक है बल्कि उन्होंने इनकी इतनी प्रस्तुतियाँ भी दी हैं कि लोग उन्हें 'मुकेश' तक कह देते हैं। वर्ष 1989 में नीबूतल्ला पंचायत द्वारा आयोजित कार्यक्रम 'राजकपूर की यादें' में दी गई उनकी डांस प्रस्तुति वर्षों बाद आज भी लोगों के मन में जीवंत है। अभिनय व लेखन भी उनका शौक है।

व्यवसाय में भी शिखर की यात्रा

श्री सादानी का जन्म 19 मई 1945 को कलकत्ता में स्व. श्री बद्रीदास सादानी के यहाँ हुआ था। बचपन से ही धार्मिक व समाजसेवी संस्कार प्राप्त हुए। कलकत्ता से ही बीकॉम तक शिक्षा प्राप्त की, फिर उनकी कर्मभूमि नागपुर बन गई। 8 जून 1969 को विमला सादानी के साथ परिणय सूत्र में बंध गए। वर्तमान में आप 'सादानी एसोसिएट्स' के बैनर तले कंपनी ग्रीन लेन इण्डस्ट्रीज लि. के ग्रीन लेमिनेट्स तथा मेरीनो इण्डस्ट्रीज लि. के सॉलिड सरफेस के डिस्ट्रीब्यूटर हैं। व्यावसायिक क्षेत्र में भी श्री सादानी की विशेष प्रतिष्ठा है। पुत्र श्याम सादानी वर्तमान में व्यावसायिक जिम्मेदारी संभाल रहे हैं। श्री सादानी नागपुर नगर ज्येष्ठ नागरिक सभा के एक्जीक्यूटिव मेंबर भी हैं और हर मासिक सभा में अपने गीत-भजनों से वरिष्ठजनों का मनोरंजन भी करते हैं।

परिवार हर कदम पर साथ-साथ

वर्तमान में उनके परिवार में धर्मपत्नी श्रीमती विमला सादानी, पुत्र श्याम, पुत्रवधू विनीता तथा पौत्र मुकुंद हैं। पुत्री विनीता का विवाह चेन्नई के मूंधड़ा परिवार में हो चुका है। श्री सादानी के समाजसेवी कार्यों में पूरे परिवार का साथ किस तरह है, उसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि वे किसी सेवा गतिविधियों में अकेले नहीं रहते, पूरा परिवार ही साथ होता है। महेश नवमी कार्यक्रम हो, रक्तदान, मूक सहायता अथवा अन्य आयोजन पूरा परिवार ही सक्रिय रूप से सहयोग प्रदान करता है। सादानी परिवार के गिरिराज, गणेश, नारायण, भगवान, शोभा, बिथलेश, राधिका व नंदलाल सादानी आदि लगभग हर अनन्य सदस्य अपना योगदान देने में पीछे नहीं रहते।

व्यवसाय जगत में शिखर की यात्रा तय करने वाला ऊर्जावान व्यवसायी जब आध्यात्म के पथ पर कदम रखता है, तो वहाँ भी अपनी सौगात देने में पीछे नहीं रहता। जीरापुर निवासी 78 वर्षीय ओपी मूंदड़ा एक ऐसे ही व्यवसायी हैं, जो जीवन के उत्तरार्द्ध में तीर्थ स्थानों की सौगात देने में जुटे हैं।

आध्यात्म के तीर्थ सजाते ओ.पी. मूंदड़ा

टीम SMT

ओपी मूंदड़ा एक ऐसा नाम है जो पहले व्यापारिक जगत में वर्षों के संघर्ष से सफलता के नित नए आयाम स्थापित करता हुआ 'धूमकेतु' की तरह चमका। उन्होंने पेट्रोलियम पदार्थों के छोटे से व्यवसाय की शुरुआत की, जो आज अत्यंत वृहद वटवृक्ष बन चुका है। अब फिर जीवन के उत्तरार्द्ध तक आते-आते भौतिक सुख-साधनों के परे जाकर आध्यात्म की ओर उन्मुख हो रहे हैं। अपनी ही जन्मभूमि (जीरापुर) को पहले कर्मभूमि बनाया और अब तीर्थ भूमि बना देने को लालायित हैं।

जीरापुर को दी तीर्थ की सौगात

लगभग दो दशक पूर्व जीरापुर जैसे छोटे से कस्बे में एक अत्यंत भव्य एवं विशाल मंदिर 'तिरुपति बालाजी व्यैंकटेश देवस्थान' की परिकल्पना उनके द्वारा साकार की गई। ये एक ऐसा वृहद और अनुपम कार्य था जो दैवीय सहयोग के बिना किसी साधारण मनुष्य के द्वारा किया जाना तो बिल्कुल असंभव था। छोटे से कस्बे में इतना आकर्षक और भव्य देवस्थान समाजजनों के लिए गौरव तिलक की भांति है। जीवन के आठ दशक पूर्ण करने की ओर अग्रसर श्री मूंदड़ा जी की कर्मठता और सक्रियता का इससे अधिक उत्कृष्ट उदाहरण और क्या होगा कि इस नवीन देवस्थान के निर्माण की कार्ययोजना के साथ-साथ तिरुपति बालाजी धाम में अपनी धर्मपत्नी श्रीमती शंकुतला मूंदड़ा के सहयोग से सुबह 7 से 12 बजे तक एवं अपराह्न 3 बजे से रात 9 बजे तक दोनों पति-पत्नी श्रद्धालुओं एवं भक्तजनों के स्वागत हेतु प्रति हर पल तत्पर रहते हैं।

अब त्रिदेव धाम की सौगात

श्री मूंदड़ाजी का धर्म और आध्यात्म में अप्रतीम विश्वास ही है जो जीवन की इस अवस्था (लगभग 78 वर्ष) में भी सक्रिय होकर योगदान दे रहे हैं। अब अपने प्रियजन (पुत्रवधू स्व. श्रीमती नीलू मूंदड़ा) की स्मृति में पुनः एक और सुंदर देवस्थान के निर्माण का संकल्प लिया और अभियान को पूर्णता तक पहुँचाया। उक्त देवस्थान इसी राजगढ़ जिले की ब्यावरा तहसील में स्थित ग्राम चाठा में निर्मित किया जा रहा है जो 'त्रिदेव धाम' के नाम से जाना जाएगा। ग्राम चाठा स्थित नवीन देवस्थान त्रिदेव धाम का निर्माण अंजनीलाल मंदिर धाम के मठाधीश श्री स्वामीजी श्री प्रमोदजी नागर के मार्गदर्शन में किया जा रहा है। मंदिर की पूजा-पद्धति भी उन्हीं के द्वारा प्रदान निर्देशों के अनुरूप की जाएगी।

कहां है ग्राम चाठा

इस "त्रिदेव धाम" मंदिर का निर्माण जिस चाठा गांव में हो रहा है, यह वर्तमान में तो तीर्थ यात्रियों तो ठीक अधिकांश आम लोगों के लिए भी लगभग अनजान ही रहा है, लेकिन अब ऐसा छोटा सा गांव भी तीर्थ की पहचान प्राप्त कर लेगा। ग्राम चाठा ब्यावरा नगर से 7 किमी की दूरी पर स्थित है, जो गुना की ओर मुख्य मार्ग पर है। ग्राम चाठा से निकटतम दूरी पर बसे 5-7 गांव हैं, जिनके धर्मप्रेमी ग्रामीणों को देवालय का सान्निध्य प्राप्त होकर दर्शन लाभ मिलता रहेगा एवं चिरकाल तक धर्म ध्वजा फहराती रहेगी। इस प्रकार श्री मूंदड़ा ने अपनी जीवनकाल में एक ही सूत्र वाक्य को अपना रखा है कि 'नर सेवा ही नारायण सेवा है' और यही इसकी स्थापना में भी इनका उद्देश्य है।

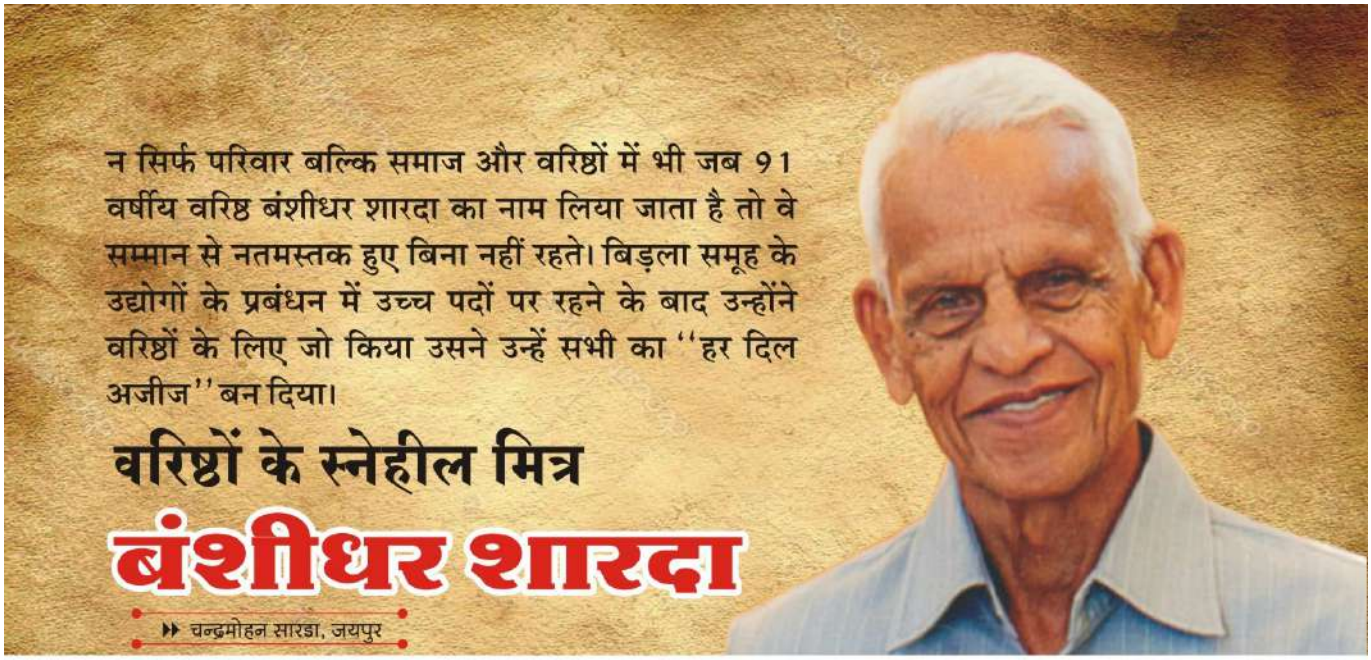

न सिर्फ परिवार बल्कि समाज और वरिष्ठों में भी जब 91 वर्षीय वरिष्ठ बंशीधर शारदा का नाम लिया जाता है तो वे सम्मान से नतमस्तक हुए बिना नहीं रहते। बिड़ला समूह के उद्योगों के प्रबंधन में उच्च पदों पर रहने के बाद उन्होंने वरिष्ठों के लिए जो किया उसने उन्हें सभी का "हर दिल अजीज" बन दिया।

वरिष्ठों के स्नेहील मित्र बंशीधर शारदा

▸▸ चन्द्रमोहन सारड़ा, जयपुर

जयपुर में संचालित जितनी भी वरिष्ठ संस्थाएं हैं, 91 वर्षीय श्री शारदा लगभग हर एक से किसी न किसी तरह संबद्ध अवश्य ही हैं। उनकी ही अध्यक्षता में वर्ष 1991 में वरिष्ठ नागरिक परिषद शास्त्री नगर प्रखंड की स्थापना हुई थी। फिर उनके नेतृत्व में वरिष्ठों की सेवा के लिए इसका विस्तार होता ही चला गया। इस संस्था ने देश में आईं प्राकृतिक या राष्ट्रीय विपदाओं के समय जनसहयोग से पीड़ितों की सहायता करने में भी कोई कसर नहीं रख छोड़ी। कई धार्मिक यात्रा व कार्यक्रमों का आयोजन श्री शारदा के नेतृत्व में संस्था कर चुकी है। उम्र के इस 91वें पड़ाव पर भी वे यथाशक्ति सहयोग प्रदान करने में पीछे नहीं रहते।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौर में जन्म

श्री शारदा का जन्म सन् 1927 में जयपुर (राजस्थान) के चौमूं कस्बे में 5 भाई-बहनों से भरेपूरे परिवार में श्री धन्नालाल शारदा के यहां हुआ था। 14-15 वर्ष की उम्र तक स्थानीय मिडिल यानी आठवीं क्लास में रहे होंगे। यह समय हमारे देश व प्रदेश के लिए राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा। उन्होंने सन् 1942 से 1946-47 की अवधि में प्रजामंडल द्वारा संचालित स्वाधीनता संघर्ष आंदोलन नजदीक से देखा। चौमूं में प्रजामंडल के झंडे के नीचे चाचाजी रामनिवास शारदा व उनके साथी मास्टर रामसहायजी, रामेश्वरजी गुप्ता, पं. युद्धिष्ठरजी, बद्रीनारायण जी खूंटेटा तथा सामोद के मुराद अली को गिरफ्तार होते देखा था। ये लोग भी इंकलाब जिंदाबाद के नारे लगाते थे, किंतु पुलिस की लाठी देखकर इधर-उधर हो जाते थे। इन्हीं दिनों नेताजी सुभाषचंद्र बोस का प्रादुर्भाव हुआ जिन्होंने गांधीजी के अहिंसा सत्याग्रह से अलग विचारधारा से प्रेरित होकर 'आजाद हिंद फौज' की स्थापना की। इन घटनाओं का श्री शारदा पर गहरा प्रभाव पड़ा।

ऐसे चली उच्च शिक्षा की यात्रा

गांव में मिडिल स्तर तक पढ़ाई के बाद आगे भी पढ़ाई के लिए पिलानी चले गए। यहां बिरला हाईस्कूल एवं बिरला कॉलेज से इंटरमीडियट के शिक्षा प्राप्त की। पिलानी की आबो-हवा का लाभ लेने के लिए देश के प्रथम राष्ट्रपति राजेंद्र बाबू भी हर वर्ष कुछ दिनों के लिए आया करते थे। पिलानी से इंटरमीडियट करने के बाद श्री शारदा अपने बड़े भाई रामेश्वरप्रसादजी के पास कलकत्ता चले गए। वहां के जयपुरिया कॉलेज में पढ़ाई करके बीए किया तथा कलकत्ता यूनिवर्सिटी से डिग्री प्राप्त की। शरीर का ढांचा लंबा पूरा होने से बंगाली विद्यार्थी उन्हें सरदार के नाम से पुकारते थे तथा बदमाश लोगों को उनके सामने पेश करते थे। वालीबॉल, हॉकी, मल्लखंभ, कुश्ती, तैराकी आदि में भी श्री शारदा अच्छे खिलाड़ी के रूप में सामने आए।

18 वर्ष की उम्र में विवाह

श्री शारदा का विवाह सन् 1947 में मैट्रिक करने के बाद ही हो गया था। वे करीब 18 वर्ष के तथा जीवनसंगिनी मात्र 13 वर्ष की थी। जीवन संगिनी जयपुर के चितलांग्या परिवार की बेटी राधाजी की स्कूली पढ़ाई न के बराबर थी, किंतु बुद्धि विवेक में वह उच्च शिक्षित महिलाओं से कम नहीं थीं। श्री शारदा व्यावसायिक जिम्मेदारियों में व्यस्त रहे तो ऐसे में भी आपकी धर्मपत्नी शारदाजी परिवार को संभालने में जुटी रहीं। अपने चार बेटों व दो बेटियों को उच्च शिक्षा दिलाने की व्यवस्था की, परिणामस्वरूप एक डॉक्टर बना, बाकी विशेषज्ञ व बिल्डर, व्यापारी बनकर अपनी-अपनी गृहस्थी संभाल रहे हैं। बेटियां दोनों ग्रेजुएट हैं तथा अपनी ससुराल में सम्मानपूर्वक दोनों कुलों का नाम गौरवान्वित कर रही हैं। उनके पौत्र-पौत्री के विवाह भी हो चुके हैं और अब प्रपौत्र व प्रपौत्री की किलकारियों से भी उनका आंगन गूंज रहा है।

उद्योगों में संभाली महत्वपूर्ण जिम्मेदारी

बीए पास करने के बाद सन् 1951-52 में श्री शारदा की नियुक्ति बिरला ग्रुप के ओरियंट पेपर मिल, बृजराजनगर (ओडीशा) में हुई। वे पूरी निष्ठा तथा परिश्रम के साथ काम करते थे। ड्यूटी के आठ घंटे बाद भी ऑफिस का काम पूरा करने में लगे रहते थे। प्रबंधक योग्यता परखने के लिए अलग-अलग विभागों की जिम्मेदारी देते रहे। सभी जगह विभागों में चाहे व्यावसायिक हो या तकनीकी कामयाबी मिलती गई। यही नहीं, दूसरे कार्य जैसे स्कूलों का मैनेजमेंट, को-ऑपरेटिव सोसायटी की देखरेख, सामाजिक त्योहार, समारोह

का नेतृत्व आदि-2 कार्य भी मुख्य ड्यूटी के अतिरिक्त दिए जाते। तीन स्कूल, अपर प्राइमरी, गर्ल्स स्कूल, बॉयल हाईस्कूल का शिक्षा स्तर व अनुशासन सुधारने का मौक मिला। फैक्ट्री में तीन समुदाय के लोग मुख्य रूप से थे, हिंदी भाषी, बांग्ला भाषी व उड़िया भाषी, इन लोगों में समरसता रखने के लिए दुर्गा महोत्सव में तीनों भाषाओं के माध्यम से नाटकों (ड्रामा) का आयोजन होता था। एक 'साहित्य-संगम' टेक्निकल एवं इकोनॉमिक्स एसोसिएशन का भी गठन किया गया। सभी जगह प्रबंध में उन्हें ही आगे रखा गया। कई महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभाने के बाद वर्ष 1980 में सेवानिवृत्त हो गए। 30 वर्ष ओडीशा में सेवारत रहने से आज भी वे वर्ष में दो माह भुवनेश्वर में निवासरत पुत्र अशोक के यहां व्यतीत करते हैं।

विपदाओं में बने सहयोगी

वरिष्ठ नागरिक परिषद द्वारा राष्ट्रीय एवं सामाजिक आवश्यकता हेतु समय-समय पर अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाते रहे हैं। विशेष रूप से उल्लेखनीय है, वर्ष 1999 में उड़ीसा में तूफान पीड़ितों की सहायतार्थ घर-घर जाकर कपड़े, बर्तन व अन्य घरेलू सामान इकट्ठा किया गया, जिसे ट्रक में भरकर भुवनेश्वर भेजा गया था। इसे बड़े पुत्र अशोक की देखरेख में वहां पर जरूरतमंद लोगों को वितरित किया गया। इसके अलावा एक डॉक्टर टीम उनके सबसे छोटे पुत्र डॉ. सुधीर शारदा के नेतृत्व में ओडीशा में भेजी गई। इन लोगों ने जेके कंपनी के सहयोग से जहां पुत्र अशोक काम करते थे, करीब 15 दिन बिखरी हुई लाशों के बीच रहकर निष्ठापूर्वक चिकित्सा सेवा कार्य किया। योगासन-प्राणायाम में भी उनकी रुचि स्कूली जीवन से ही रही। पिलानी में एक जातीय बंधु गंगाप्रसाद शारदा के संपर्क में आने के बाद वे आसन-प्राणायाम के अभ्यास में रुचि लेने लगे। श्री गंगाप्रसाद ऋषिकेश के शिवानंद आश्रम से योग शिक्षित थे। अतः श्री शारदा को भी योग संबंधी क्रियाओं का कुछ ज्ञान प्राप्त हुआ। खुद सीखने के बाद कुछ लोगों को सिखाने का काम शुरू किया। लोग उन्हें शारदानंदजी के नाम से पुकारने लगे थे। यहीं योग प्रेम संभलपुर जाने पर अधिक अच्छे ढंग से विस्तार से बढ़ा। वहां योग विद्यालय निर्माण में भी उनकी भूमिका रही। प्रबंध समिति में 1980 तक सचिव पद पर भी रहे।

वरिष्ठों के हर दिल अजीज

वरिष्ठजनों के तो श्री शारदा हमेशा ही चहेते रहे हैं। कारण यह है कि उन्होंने उनके जीवन में खुशियां बिखेरने का सदैव प्रयास किया। उनके नेतृत्व में वरिष्ठ नागरिकों ने मिलकर विभिन्न तीर्थ स्थलों पर अभी तक 12 से अधिक श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन किया जा चुका है। उनके नेतृत्व में अभी तक अनगिनत बार वरिष्ठजनों के लिए तीर्थ यात्राओं का आयोजन हो चुका है। इन यात्राओं के आयोजनों में शारदा परिवार ने भी अपना भरपूर आर्थिक सहयोग दिया। वरिष्ठों के लिए साहित्यिक पत्रिका 'वरिष्ठ मित्र' का प्रकाशन भी कई वर्षों से हो रहा है। कुछ वर्षों से आर्थिक समस्या के कारण प्रकाशन प्रायः कठिन-सा हो गया था। अतः श्री शारदा को सन् 2013 से इसके प्रबंध संपादक की जिम्मेदारी सौंपी गई। कोई भी पत्रिका बिना विज्ञापन नहीं चल सकती है। इस समस्या के समाधान के लिए अपने मित्रों एवं स्वयं के रिश्तेदारों का सहयोग उन्होंने लिया। इसकी विज्ञापन दर बहुत कम थी जिसे पिछले 2-3 सालों में संशोधित किया गया। मुख्य त्योहारों पर हार्दिक शुभकामनाओं का कॉलम शुरू किया गया। इसके साथ ही अपने जान-पहचपान के वरिष्ठजनों के दिवंगत परिजनों को श्रद्धांजलि के लिए भी स्थान निर्धारित किया गया।

पुस्तक समीक्षा

गंगा जमुनी संस्कृति का आईना

सुभाष रस्तोगी

अरुण माहेश्वरी के सद्यः प्रकाशित संपादित संकलन 'या हंसा मोती चुगे' में निश्चय ही उनके हंस ने हिंदी और उर्दू की श्रेष्ठ कविता के मोती चुगे हैं, जिसमें उनकी पसंदीदा या चयनित हिंदी और उर्दू कविता अपने समवेत पाठ में इस देश की गंगा जमुनी संस्कृति का आईना बनकर सामने आई है। इसमें रोमानियत है तो सांप्रदायिक सद्भाव भी है, जीवन की विसंगतियों के प्रति आक्रोश है, तो अंतर्मन की पीड़ा भी। इसमें सवाई, मुक्तक, चतुष्पदी, कतअः, गजल और प्रेम की बहुरंगी छवियों का परिदृश्य है, जो बरबस ही पाठक के मन को बांधता है।

संभवतः अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से श्री माहेश्वरी ने इस संकलन को 14 खंडों में विभाजित किया है जो इस प्रकार है। सवाई, मुक्तक, चतुष्पदी-कतअः, नीति प्रेरणा, उत्साह एवं शिक्षासत्र, मित्रता/दोस्ती के खट्टे मीठे अनुभव, कवि की व्यथा, हास्य-व्यंग्य, मोहब्बत, प्यार, विरह, सौंदर्य, शिकवा-शिकायत, गजल, शैशव-जाहिद-वाइज (धर्मोपदेश), विविध, गोष्ठी, वरिष्ठ नागरिकों के लिए, मधुवाला (साकी), मधुशाला (मयखाना) व अंतिम यात्रा।

यह संकलन वास्तव में जीवन के मुखिलफ रंगों का एक गुलदस्ता है, जिसमें प्रत्येक रंग की अपनी अनूठी छटा है। यहां जिंदगी के ऐसे ही कुछ मुखिलफ रंगों की नुमाइंगी करते हुए चुनिंदा अश्आर देखें-

दोस्तों से वफा की उम्मीदें,
किस जमाने के आदमी तुम हो

- बशीर बद्र

किताबों से कभी गुजरों तो यूं किरदार मिलते हैं,
गये वक्तों की ड्योढ़ी में खड़े कुछ यार मिलते हैं?

- गुलजार

मुहब्बत में धमकियां देते हो मीर,
अरे जनाब मुहब्बत में हकूमत कैसी।

- मीर तकी 'मीर'

यहां सवाल उठाया जा सकता है कि जब हिंदी और उर्दू की श्रेष्ठ कविता के यह कवितांश विभिन्न संग्रहों में पहले ही संगृहीत हैं, तब उन्हें इस संकलन में संकलित करने का क्या औचित्य है? लेकिन तस्वीर का दूसरा रुख यह भी है और यह अधिक अहम भी है कि हिंदी और उर्दू की श्रेष्ठ कविता में अपने समय की धरोहर बना चुके इन मुक्तकों, सवाइयों, शेरों और गजलों को एक जिल्द में संजोना अपने समय की धरोहर को एक जिल्द में सहेजने जैसा है।

पुस्तक
या हंसा मोती चुगे
संकलन एवं संपादन- अरुण माहेश्वरी
प्रकाशक- अलंकार ज्वैलर्स,
सदर बाजार गुरुग्राम (हरियाणा)
कुल पृष्ठ संख्या-208

कहते हैं कि वरिष्ठावस्था प्रभु स्मरण का समय है। वास्तव में ईश्वर उपासना गोसेवा व नरसेवा में ही छिपी है। ऐसे ही पथ पर अपना योगदान दे रहे हैं, गच्छीपुरा नागौर के 79 वर्षीय वरिष्ठ राजाराम सारडा।

सेवा पथ के वरिष्ठ सेवक

राजाराम सारडा

▸▸ जुगलकिशोर काकाडी, कोच्चीन

नर नारायण सेवा का महत्व तो सर्वविदित है। यह तो वास्तव में मानवता की सेवा ही है। वहीं गोमाता में सभी देवताओं का वास होने से उसे साक्षात् देव स्वरूप ही माना गया है। गच्छीपुरा नागौर निवासी 79 वर्षीय वरिष्ठ राजाराम सारडा ने अपनी वरिष्ठावस्था में धर्मपथ पर इन दोनों मार्गों को ही चुना और उनकी सेवा यात्रा सतत रूप से चल रही है।

थोक व्यापारी के रूप में कॅरियर

श्री सारडा का जन्म 15 फरवरी 1939 को गच्छीपुरा नागौर में हुआ। आपने अपने जीवन में थोक व्यापार को ही अपनी आजीविका बनाया। वर्ष 2000 से अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त होकर समाज व धर्म सेवा में अपना योगदान दे रहे हैं। आप स्थानीय व्यापार मंडल के अध्यक्ष भी रहे हैं।

व्यवसाय में शिखर पर परिवार

चाहे स्वरूप बदल गया हो लेकिन व्यवसाय का जो पौधा श्री सारडा ने लगाया था, वह अब उनके मार्गदर्शन व पुत्रों के नेतृत्व में वटवृक्ष का रूप ले चुका है। वर्तमान में कोचिन (केरला) में उनकी दो फर्म एक नेचरल मार्बल तथा दूसरी राधिका ग्रेनाइट के नाम से स्टोन का थोक व्यापार कर रही हैं। उनके इस व्यवसाय को तीनों पुत्र नटवरलाल सारडा, गिरधरलाल सारडा तथा बनवारी लाल सारडा नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं।

गौ व जन सेवा में समर्पित

गौसेवा को श्री सारडा ने धर्मसेवा के रूप में अपनाया और तन-मन-धन से गौसेवा में समर्पित हैं। आप गच्छीपुरा गौशाला से लंबे समय से संबद्ध होकर सेवा दे रहे हैं। वे उम्र के इस पड़ाव पर भी इसके अध्यक्ष हैं। गच्छीपुरा अस्पताल में रेस्ट रूम, मुख्य द्वार, पार्किंग आदि के निर्माण के साथ ही आवश्यक उपकरणों की खरीदी में भी श्री सारडा ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनकी इन सेवाओं को लेकर गत 26 जनवरी 2018 को नागौर कलेक्टर द्वारा श्री सारडा को सम्मानित किया गया। श्री सारडा माहेश्वरी समाज नागौर द्वारा भी सम्मानित किए जा चुके हैं। श्री सारडा की प्रेरणा से गच्छीपुरा में रक्तदान शिविर भी आयोजित हो चुका है। वर्तमान में उनके पुत्र भी उनके पदचिह्नों पर चलते हुए सामाजिक कार्यों में निःस्वार्थ योगदान दे रहे हैं।

ऋषिमुनि समूह द्वारा काल गणना की प्राचीन नगरी उज्जयिनी से प्रकाशित

श्री विक्रमादित्य पञ्चाङ्ग

इतना सरल की अपने घर के पंडित आप खुद बन जाए

डेढ़ वर्ष के मुहूर्त के साथ

व्रत-पर्व देखना हो या शुभ मुहूर्त या
विवाह के लिए पत्रिका का करना हो मिलान
कहीं जाने की जरूरत नहीं, स्वयं देखें अपने पञ्चाङ्ग में

90, विद्या नगर, टेड़ी खजूर दरगाह के पीछे, साँवेर रोड, उज्जैन (म.प्र.)
फोन - 0734-2526761, मो. 094250-91161, 98275-59522

सभी प्रमुख बुक स्टॉलों पर उपलब्ध

तमाम सरकारी प्रयासों के बावजूद आदिवासी अंचल अभी-भी मूलभूत शिक्षा की कमी के कारण विकास की मुख्यधारा से कोसों दूर है। ऐसे क्षेत्रों में वास्तव में जनजागृति की आवश्यकता है और ऐसे ही अभियान को अंजाम दे रहे हैं, सलम्बूर (उदयपुर) निवासी वरिष्ठ शिक्षाविद् जयप्रकाश आगाल।

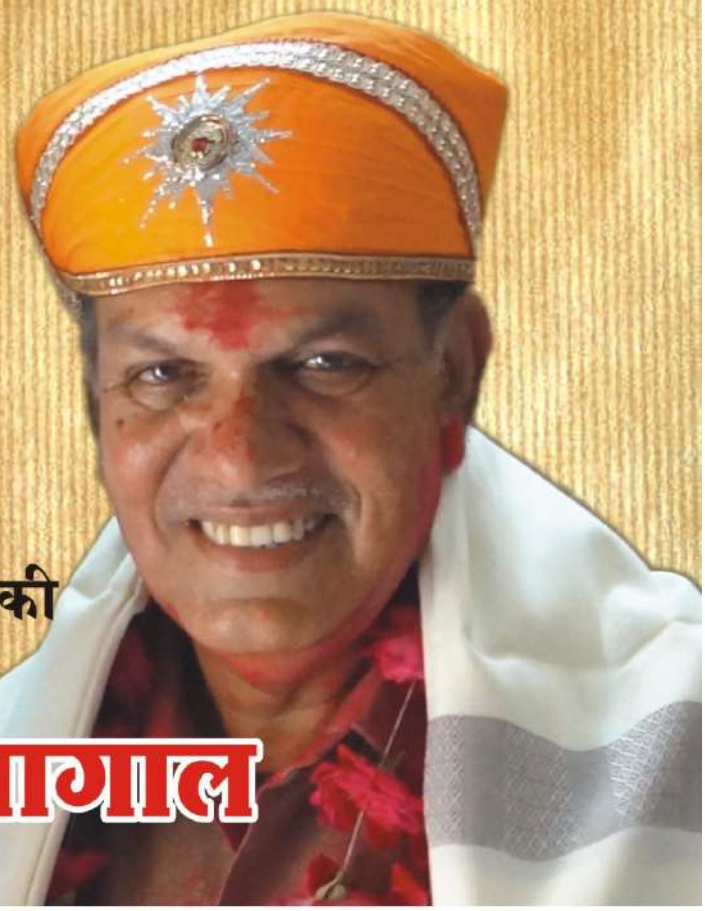

जनजातीय क्षेत्र में शिक्षा की ज्योति जलाते जयप्रकाश आगाल

टीम SMT

पंचायत समिति में विकास अधिकारी, शिक्षा विभाग में ब्लॉक प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी एवं प्रधानाचार्य जैसे महत्वपूर्ण पदों पर रहे शिक्षाविद् जयप्रकाश आगाल की पहचान एक ऐसे समाजसेवी के रूप में है जो पिछड़े जनजातीय क्षेत्रों में विकास की ज्योत जला रहे हैं। उनकी यह सेवा यात्रा भी अजब है, बस नौकरी करते-करते आदिवासी अंचलों में शिक्षा की दुर्दशा देखी, तो निःस्वार्थ भाव से उतर पड़े उन लोगों में शिक्षा का अलख जगाने। अभी तक उन्होंने कई अशिक्षित आदिवासी परिवारों को समझा बुझाकर उनके बच्चों को स्कूल तक पहुंचाने में सफलता प्राप्त की है।

सेवा के लिए छोड़ दी नौकरी

सलुंबर निवासी जयप्रकाश आगाल पुत्र शिक्षाविद् श्री मगनलाल आगाल ने आदिवासी क्षेत्र में बालिका शिक्षा एवं प्रारंभिक शिक्षा की अलख जगाने व समाजसेवा के लिए सरकारी नौकरी से स्वतः सेवाकाल से 20 माह पूर्व स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ले ली। श्री आगाल को अपने इस सपने को पूरा करने में कठिनाई तो बहुत आई फिर भी वे अपने इस उद्देश्य को लेकर दृढ़प्रतिज्ञ रहे और तन, मन से जुटे रहे। सलुंबर क्षेत्र के इस आदिवासी इलाके में अकेले बाइक पर गांव-गांव, ढाणी-ढाणी घूमकर आदिवासी लोगों को अपने बच्चों को स्कूल भेजकर शिक्षा के लिए प्रेरित करते रहे।

हर विपदा में भी बने सहयोगी

शिक्षा के क्षेत्र में अलख जगाने के साथ ही श्री आगाल का समाजसेवा के क्षेत्र में भी अनूठा योगदान रहा है। चाहे क्षेत्र में कोई भी प्राकृतिक आपदा रही या संकट। श्री आगाल कभी भी पीछे नहीं रहे। इसका उदाहरण क्षेत्र में वर्ष 2006 में आई भयानक बाढ़ थी। इससे जयसमंद क्षेत्र के आसपास गांवों में पानी भर गया फिर भी श्री आगाल पीछे नहीं रहे। अपने अधिकारियों के साथ नाव में राशन सामग्री, दवाईयां आदि लेकर उन संकटग्रस्त लोगों तक पहुंचा कर ही चैन लिया। ब्लॉक प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी के पद पर रहते हुए भी क्षेत्र में सदैव गरीब जनता की, उनके बच्चों की सहायता करते रहे। श्री आगाल पूर्व में लायंस क्लब सलुंबर के अध्यक्ष रहते हुए हजारों लोगों की आंखों का निःशुल्क ऑपरेशन का कार्य करवा चुके हैं। पल्स पोलियो जैसे कार्यक्रमों में भी उन्होंने अपना अमूल्य योगदान दिया है।

समाज की सेवा में भी समर्पित

श्री आगाल जितने मानवता की सेवा में समर्पित हैं, उतने ही माहेश्वरी समाज की सेवा के प्रति भी हैं। नौकरी में रहते हुए भी जहां उनकी जरूरत लगी, वहां वे उपस्थित होने में पीछे नहीं रहे। क्षेत्र के सभी जनप्रतिनिधियों से घनिष्ट संबंध रहने से हर मुसीबत में तो जैसे वे संकटमोचक ही रहे। अब चुनाव प्रबंधन, विधवा विवाह, पर्यावरण, खेल, प्रशासनिक कार्य, सामाजिक सौहार्द, धार्मिक आयोजनों आदि क्षेत्र में उनकी सेवाओं का समाज को लाभ मिलेगा। अभी तक श्री आगाल माहेश्वरी समाज के सचिव, जिला कार्यकारिणी सदस्य, प्रदेश प्रतिनिधि आदि पदों पर सेवा दे चुके हैं। उपखंड स्तर एवं जिलास्तर से विभिन्न सेवा कार्यों हेतु सम्मानित भी हो चुके हैं।

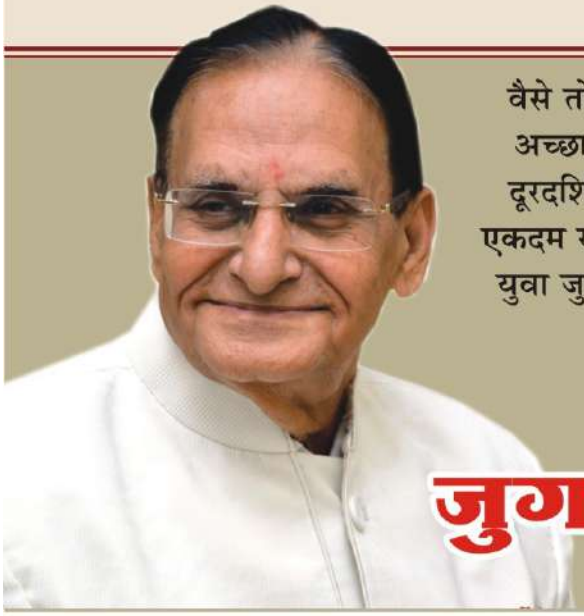

वैसे तो उनका स्वभाव ही ऐसा है कि उन्हें जानने वाला उनकी अच्छाइयों की प्रशंसा किए बिना नहीं थकता। लेकिन अद्‌भुत दूरदर्शिता उनकी एक ऐसी विशेषता है, जिसने उन्हें बना दिया एकदम खास। यहां हम बात कर रहे हैं, अमरावती के 75 वर्षीय युवा जुगलकिशोर गट्टानी की, जिनकी सफलता की कहानी हर किसी की जुबान पर होती है।

दूरदर्शिता की मिसाल
जुगलकिशोर गट्टानी

टीम SMT

स्थानीय माहेश्वरी समाज ही नहीं बल्कि अमरावती शहर के लिए 75 वर्षीय जुगलकिशोर गट्टानी कई मामलों में मिसाल हैं। उनकी सबसे बड़ी विशेषता उनकी गजब की दूरदर्शिता है, जिसने उन्हें समृद्धि के शिखर पर पहुंचाया। सहज-सरल व सहृदय इतने कि हर आम व्यक्ति की पीड़ा का अहसास उन्हें है। नेतृत्व क्षमता इतनी अनूठी कि उन्हें जिस किसी संस्था या संगठन में कोई जिम्मेदारी सौंपी गई तो उस पर वे आशा से भी अधिक खरे उतरे। संयमित जीवन व योग-प्राणायाम से स्वास्थ्य इतना सधा हुआ है कि जिसके सामने युवा भी अंगुली दबा लें। 1996 और 2006 में उनकी दो बार हार्ट सर्जरी हो चुकी लेकिन उनकी प्रबल इच्छाशक्ति और उमंग के कारण इस सर्जरी का उनके जीवन और बिजनेस पर कोई दुष्परिणाम नहीं हुआ, आज भी वे उसी उत्साह से युवा की तरह काम करते हैं।

उच्च शिक्षा के बावजूद चुना व्यवसाय

श्री गट्टानी का जन्म 13 जनवरी 1943 को अकोला (महाराष्ट्र) के एक छोटे से गांव बोरगांव मंजू में एक मध्यमवर्गीय 2 भाई व 2 बहनों के भरेपूरे परिवार में स्व. श्री मदनलाल व श्रीमती नारायणीदेवी गट्टानी के यहां हुआ था। परिवार में उनके बड़े भाई वल्लभ, छोटे भाई प्रेमकिशोर तथा बहन सुंदरबाई व किरणबाई थीं। परिवार का खेती व किराना का व्यवसाय था। अतः पिताजी का दुकान संभालने का आग्रह था, उच्च शिक्षा जारी नहीं रखने का था। लेकिन वे पढ़ना चाहते थे, आगे बढ़ना चाहते थे, परिवार व समाज के लिए कुछ करना चाहत थे। उनके इसी सपने को पंख लगाए माता नारायणीबाई ने और पिताजी के न चाहते हुए भी उन्हें मौसाजी के यहां अमरावती भेज दिया। जुगलकिशोरजी की आठवीं तक की पढ़ाई गांव में ही हुई थी। फिर अमरावती में रहकर सतत उच्च शिक्षा प्राप्त करते हुए एमकॉम तक शिक्षा ग्रहण की। इसी दौरान मामाजी हुक्मीचंद हेड़ा के फिल्म लाइन के व्यवसाय में भी सहयोग करते थे। उन्हें उस समय अच्छी नौकरी मिल सकती थी लेकिन उन्होंने स्व व्यवसाय को ही अपना लक्ष्य बनाया। इसी बीच 20 जून 1967 में सुशीला देवी के साथ परिणय बंधन में बंध गए। यह उनकी उच्चस्तरीय सोच ही है कि उन्होंने धर्मपत्नी को विवाह के बाद शिक्षा के लिए प्रेरित किया। श्रीमती गट्टानी ने बीकॉम तक शिक्षा प्राप्त की। वे शिक्षिक के रूप में शासकीय सेवा में रही है। गत 14 जनवरी 2018 को उनके सुखी दांपत्य के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में अमृत महोत्सव का आयोजन किया गया था।

ऐसे चली व्यावसायिक यात्रा

व्यवसाय करते-करते समय की मांग को पहचानते हुए श्री गट्टानी ने वर्ष 1971 में पवन फिल्म डिस्ट्रीब्यूटर्स की शुरुआत की और अपनी दूरदर्शिता से सफलता के शिखर की ओर बढ़ते चले गए। अपनी कृषि के विस्तार के साथ प्रापर्टी व्यवसाय में भी सफलतापूर्वक कदम रख दिया। फिर समय की आवाज को पहचान कर पवन डिस्ट्रीब्यूटर्स को बंदकर वर्ष 2012 में होंडा टू व्हीलर्स की एजेंसी ले ली। इसका शुभारंभ दशहरा के दिन हुआ था। वर्तमान में उनके दोनों पुत्र पवन व पंकज गट्टानी इस वृहद व्यवसाय को श्री गट्टानी के मार्गदर्शन में सफलतापूर्वक संभाल रहे हैं। वर्तमान में 5 तहसीलों में 'जेपीएस होंडा' के नाम से शाखाएं हैं। पुत्रवधू अलका व विजया के सहयोग तथा श्री गट्टानी के मार्गदर्शन में पौत्र भी प्रगति की ओर कदम बढ़ा रहे हैं। पौत्र श्रवण ने लंदन से उच्च शिक्षा प्राप्त की है तथा पौत्री श्रीया व पौत्र सुधांशु भी उच्च शिक्षा में अग्रसर हैं।

कई महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों का भी निर्वहन

श्री गट्टानी समाज को भी निःस्वार्थ भाव से सेवा देते रहे हैं। विभिन्न कार्यक्रम में मुकेश-किशोर व रफी के गीतों की उनके द्वारा दी जाने वाले प्रस्तुति हमेशा आकर्षण का केंद्र रहती थी। व्यावसायिक व्यस्तता के बावजूद श्री गट्टानी को स्थानीय माहेश्वरी पंचायत अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी सौंपी गई तो उन्होंने उसका भी सफलतापूर्वक निर्वहन किया। श्री गणेशदास राठी शिक्षा समिति के उपाध्यक्ष, धर्मार्थ आयुर्वेद चिकित्सालय तथा साईं बाबा विद्यालय साईंनगर के वर्तमान में भी अध्यक्ष हैं। अभी तक धार्मिक यात्रा में सुधांशु महाराज, रमेश भाई ओझा, किरीट भाईजी, रामदेव बाबा, विदर्भ मीरा अलका श्रीजी की प्रथम कथा, राधाकृष्णजी का नानीबाई का मायरा आदि कई आयोजनों की जिम्मेदारी संभाल चुके हैं। सेवा संस्था रोटरी क्लब व ट्रस्ट अमरावती मिड टाउन के अध्यक्ष तथा आयुर्वेद शिक्षण विभाग अध्यक्ष जैसे महत्वपूर्ण पदों की जिम्मेदारियों का निर्वहन भी श्री गट्टानी कर चुके हैं। उनकी दूरदर्शिता की जरूरत जहां भी पड़ी और आज भी जहां कहीं होती है, वे मार्गदर्शन देने में कभी पीछे नहीं रहते। उनका फलसफा है। *जो मुस्कुरा रहा है उसे दर्द ने पाला होगा जो चल रहा है उसके पांव में छाला होगा*
बिना संघर्ष के इंसान चमक नहीं सकता जो जलेगा उसी दीये में उजाला होगा।

वृद्धाश्रम आवश्यकता या मजबूरी?

आज वृद्धाश्रम एक फैशन से बनते जा रहे हैं। फैशन आधुनिक पीढ़ी के लिए है और मजबूरी वरिष्ठों की। क्या यह वास्तव में समय की आवश्यकता या मजबूरी है अथवा कुछ और? आईये जानें इस स्तंभ की प्रभरी मालेगांव निवासी सुमिता मूंदड़ा सहित समाज के प्रबुद्धजनों के विचार।

एक पुरानी कहावत है कि 'माता-पिता मिलकर दस संतानों का पालन-पोषण कर सकते हैं पर दस संतानें मिलकर भी एक माता-पिता का पोषण नहीं कर पाती है।'

वृद्धावस्था में जब आय के स्रोत सूख जाते हैं, वृद्ध जब परिवार द्वारा उपेक्षित किये जाते हैं, संतान के दिल में माता-पिता के लिए सम्मान का अभाव हो जाता है। घरों में रहने के लिए पर्याप्त स्थान का अभाव होने लगता है, बढ़ती आयु में जब स्वास्थ्य निर्बल हो जाता है। इस प्रकार जब जीवन संध्या चारों तरफ से असहाय और अपमानित होने लगती है तो वृद्धाश्रम को अपना सहारा बनाना मजबूरी ही नहीं आवश्यकता बन जाती है। संतान होते हुए भी माता-पिता का वृद्धाश्रम में होना संतान की संस्कारहीनता, नकारात्मक सोच, कर्तव्यहीनता और पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव दर्शाता है।

संयुक्त परिवार का विघटन

हमारी हिंदू संस्कृति में संयुक्त परिवार को सम्माननीय और आदर्श परिवार माना जाता है। कभी एक छत के नीचे तीन से चार पीढ़ियां मिलजुलकर रहती थीं। घर के बड़े-बुजुर्गों को परिवार का आधार स्तंभ मानकर उनके अनुभवों और सलाह-मशविरा से सभी पारिवारिक सदस्य लाभान्वित होते थे। पर वर्तमान में सच्चाई यह है कि कुछ परिवारों में पढ़ी-लिखी नई पीढ़ी के समक्ष माता-पिता और घर के अन्य बुजुर्गों की अहमियत नहीं के बराबर होती है। परिवार के वरिष्ठ और वयोवृद्ध सदस्यों को तिरस्कृत, उपेक्षित और अपमानित किया जाता है। उन्हें यह अहसास दिलाया जाता है कि अब उनके अनुभव और फैसले पुराने और दकियानूसी हैं या आधुनिक पीढ़ी के शब्दों में आउटडेटेड' हैं।

स्वार्थ तक सीमित होती सोच

वर्तमान समय में बुढ़ापा अभिशाप लगने लगा है। अपनी निजी जिंदगी में माता-पिता का बंधन आज की नवीन युवा पीढ़ी को बोझ लगने लगा है। माता-पिता ने तो अपना उत्तरदायित्व पूरा कर दिया। अपनी सारी पूंजी और खुशियां अपने बच्चों के पालने-पोसने और उनका भविष्य संवारने में लगा दी। अब संतान का कर्तव्य है अपना उत्तरदायित्व निभाए, लेकिन आज के नवयुवक मैं और बस मेरा परिवार में यह भूल जाते हैं कि माता-पिता भी उनके परिवार का ही हिस्सा है। समाज पर पश्चिमी संस्कृति हावी होती जा रही है। संयुक्त परिवार अब एकल परिवार में तब्दील होते जा रहे है। माता-पिता को संभालने और उनकी देख-रेख के लिए संतानों के पास समय नहीं है।

ये भी कुछ कारण हैं

कुछ पुत्रहीन दंपति अपनी पुत्रियों के विवाह के बाद जब उम्र के उस पड़ाव पर पहुंच जाते हैं जहां वह स्वयं का कार्य भी ठीक से नहीं कर पाते हैं। हिन्दू संस्कृति में जकड़े ऐसे दंपति पुत्री के घर पर उसके साथ रहना अक्षम्य पाप मानते हैं और वृद्धाश्रम में जाना अधिक उचित समझते हैं। मानव जीवन अमर नहीं है और जब उम्र के अंतिम पड़ाव पर दंपति अपने जीवनसाथी से बिछड़ जाते हैं तो एकाकीपन और असहाय अवस्था उन्हें वृद्धाश्रम जाने को मजबूर करती है। जिन वृद्धों का कोई सहारा नहीं होता है या निसंतान दंपतियों के लिए वृद्धाश्रम एक सुरक्षित आश्रय है। वहां रहने वाले लोगों के बीच एक पारिवारिक माहौल बन जाता है जिससे वह अपने सुख-दुख आपस में बांटकर मित्रवत सौहाद्रपूर्ण वातावरण में अपनी जीवन संध्या को खुलकर जी सकें। आवश्यकता हो या मजबूरी वृद्धाश्रमों की गिनती बढ़ती जा रही है जो हिंदू समाज और संस्कृति पर एक कलंक है।

भौतिक विकास एक कारण

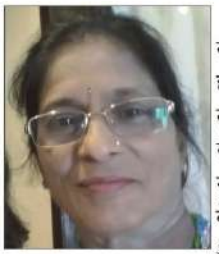

वृद्धावस्था की मजबूरियों ने ही वृद्धाश्रम का निर्माण किया है। वर्तमान युग में हम तथा हमारा समाज बहुत तरक्की कर रहा है वो ही तरक्की हमारे बुजुर्गों को वृद्धाश्रम में अपनों से दूर करके एकाकी जीवन जीने को मजबूर कर रही है। कहने को तो अच्छे संस्कारों में पले बेटे-बहू शिक्षित हो कर स्वावलंबी बनकर अपनी जिंदगी की जरूरतें पूरा करने के लिए धनोपार्जन करते है पर उनके बच्चे आया के सहारे बड़े होते हैं तथा बुजुर्गों की हालत तो बहुत दयनीय हो जाती है। सुबह से शाम अपने बच्चों की एक झलक देखने को तरस जाते हैं, सेवाभाव तथा अपनत्व पाना तो दूर की बात है। उल्टे हमारी संस्कृति के खिलाफ अपने भगवान स्वरूप माता-पिता को वृद्धाश्रम में किसी अन्य सेवाकर्मियों के भरोसे छोड़कर ऋणमुक्त हो जाते हैं। बुजुर्ग बेचारे मजबूरन अपना समय वृद्धाश्रम में व्यतीत करते हैं।

सरोज श्यामसुंदर लढ़ा
कोलकाता

वृद्धाश्रम एक डरावना स्वप्न

जिन घने वटवृक्षों को छाया देने एवं परिवार को सुरक्षा देने वाले समझा जाता था, जहां कभी भरे पूरे परिवार हंसते खेलते दुख-सुख को साझा करते थे उनकी जड़ें गहरी और मजबूत होती थीं। आज परिदृश्य यूं बदला है कि वे बुजुर्ग अवांछित होकर अपने लिए एक कोने को भी तरस रहे हैं। यह विषय गंभीर एवं हमारे हृदय की संवदेनाओं को छूने वाला है। आखिर क्यों इस कड़वे प्रश्न का जहर हमें पीना पड़ रहा है। ऊंचे ओहदों पर बैठे सफल संतानों के माता-पिता का भविष्य वृद्धाश्रम की सीढ़ी पर बैठकर अश्रुपूर्ण आंखों में प्रतीक्षा लिए घूट-घूटकर जीना और वहीं प्राण त्याग देना होना चाहिए? वृद्धाश्रम आवश्यक तो होना ही नहीं चाहिए बल्कि मजबूरी में भी कोई माता-पिता वहां अपना अंतिम समय नहीं बिताना चाहते। युवा पीढ़ी बुजुर्गों को अनावश्यक ओल्ड फैशन और अपनी जीवन शैली में अनफिट समझती है।

वृद्धाश्रम की चौखट पर सूनी आंखों से राह निहारते पिता की मौत के बाद बेटे ने किसी तरह पहुंचकर क्रियाकर्म निपटाया और पूछा पंडितजी कितने दिन का सूतक लगा है? पिता के एक परम मित्र ने जिन्होंने उस पीड़ा को नजदीक से देखा था बड़े ही मार्मिक ढंग से उत्तर दिया 'बेटा जिनके माता पिता की मृत्यु वृद्धाश्रम में हो उन्हें जिंदगीभर का सूतक लगता है।' वो वृद्धाश्रम एक ऐसा डरावना सपना है जो न आवश्यक है और न ही मजबूरी में भी कोई वहां जाना चाहता है। काश ये सब यहीं रोक सकें।

पूजा नबीरा, काटोल, नागपुर

वृद्धाश्रम आवश्कता भी, मजबूरी भी

मेरे विचार से वृद्धाश्रम आवश्यकता भी है और मजबूरी भी। आवश्यकता इसलिए है, क्योंकि वर्तमान परिवारिक परिस्तिथियों में परिवारों की एकल स्थिति है और बच्चों और बड़ों के बीच सामंजस्य का अभाव हो रहा है। युवावर्ग का अहम, परिवारिक व्यवसाय छोड़ बच्चों का नौकरी हेतु बड़े शहरों और विदेशों में स्थापित होना जैसी स्थिति से बुजुर्गों को अपने ही घर में कोई देखने, बात करने, संभालने वाला नहीं मिलता। मजबूरी इसलिए है क्योंकि वर्तमान पीढ़ी द्वारा उपेक्षित जीवन जीने को मजबूर हो चुके हैं वृद्धजन। हमारे संस्कारों और परिवारिक जीवन मूल्यों में तीव्र गति से गिरावट हो रही है। सामाजिक मूल्यों का पतन हो रहा है। बुजुर्गों द्वारा अपने सिद्धांतों से समझौता न करने का भाव या अकड़ भी एक कारण है। बीमारी एवं अन्य अवस्था में किसी भी दुर्घटना से बचने के लिलिए लोग वृद्धों की सेवा से बचने का एक उपाय मानने लगे हैं। वास्तव में वृद्धाश्रम का निर्माण किसी भी समाज के लिए गर्व, अभिमान की नहीं शर्म की बात है। इससे बुरा नैतिक पतन क्या होगा? बड़े स्तर पर संगोष्ठियों द्वारा बड़ों का महत्व, उनके मान-सम्मान, बच्चे-बच्चियों को उनके लिए समर्पित करवाना, नई पीढ़ी को मां-बाप का महत्व समझना होगा। सच तो यह कि नई पीढ़ी अब अहसान फरामोश ही आ रही है आज जो यह वृद्धाश्रम हम बना रहे। ये हम अपने लिए ही बना रहे क्यों कि कलहमें भी यहीं आना है।

राजकुमार करनाणी,
समसी (मालदा), वेस्ट बंगाल

वृद्द्धावस्था शहरों की मजबूरी

मेरे विचार में आज के पारिवारिक परिपेक्ष में एक मज़बूरी है अपने इस मत के संघर्व में कुछ अहम् बातें आप के सन्मुख रखना चहूँगा। 1) सबसे बड़ा कारण परिवार नियोजन 2) शहरों में एकलपरिवार का रहना 3) पति - पत्नी दोनों का नौकरी या पेशेवर होना। परिवार नियोजन के कारण सिर्फ एक या दो बच्चे होते है और आज की युवा पीड़ी तो अब एक बच्चे परआ गई है... बुजुर्गों को कौन सम्भालेगा। वृद्धाश्रम शहरों की मज़बूरी है, एकलपरिवार वो भी कार्यरत पति -पत्नी, कौन देखभालकरे बुजुर्गों की अतःमहेश्वरी समाज में वृधाश्रम कतई आवयश्क नहीं है परुन्तु आज के सामजिक परिपेक्ष में आज के युवा के लिए वृद्धाश्रम एक मज़बूरी बनती जा रही है आप सभी मेरे इस मत से सहमत होंगे मेरा ऐसा मानना है धन्यवाद।

सुरेश कुमार लखोटिया, बैंगलोर

उपलब्धियाँ

पूजा राठी बनी सीए

नांदुरा (बुलढाणा). बेटी ब्याओ, बहू पढ़ाओ के ध्येय वाक्य से प्रेरित होकर स्थानीय समाज के वरिष्ठ सदस्य एडवोकेट मधुसूदन राठी ने अपनी पुत्रवधू पूजा-पीयूष राठी को सीए की पढ़ाई पूर्ण करने हेतु प्रेरित किया। पूजा ने भी परिवार के दिखाए विश्वास को सार्थक करते हुए विगत माह में सीए की परीक्षा उत्तीर्ण की। पूजा मुक्ताईनगर जिला जलगांव खांदेश के एडवोकेट संतोष टावरी की सुपुत्री हैं। इस उपलब्धि पर जिला सभा एवं प्रदेश सभा द्वारा दोनों परिवारों को सम्मानित किया गया।

मेहल को अंतरराष्ट्रीय गोल्ड मैडल

उज्जैन. समाज के वरिष्ट आलोक आरती माहेश्वरी की सुपुत्री व आरवेंद माहेश्वरी (बहेड़िया) की पौत्री मेहल ने अंतरराष्ट्रीय हेक्टोक नामक प्रतियोगिता में गोल्ड मैडल प्राप्त कर विश्व रिकॉर्ड बनाया। मेहल ने गत मई में दुबई में मेंटल मैथ्स इंटरनेशनल चैंपियशिप में भाग लिया। इसमें विश्व के विभिन्न देशों के बच्चों ने भी भाग लिया। इसमें मेहल ने 155095 पाइंट लेकर 97 प्रतिशत के साथ गोल्ड मैडल प्राप्त किया। मेहल ने इसके पूर्व भी 2016 में लॉसवेगास (यूएसए) में आयोजित मेंटल मैथ्स एवं मेमोरी ओलंपियड में भी भारत का प्रतिनिधित्व कर उच्च स्थान प्राप्त किया था।

प्रिंस ने की सीएफए उत्तीर्ण

कोलकाता. ख्यात समाजसेवी घनश्याम करनानी के सुपुत्र प्रिंस ने सीएफए की तृतीय व अंतिम लेवल की परीक्षा उत्तीर्ण की। उल्लेखनीय है कि प्रिंस सीए की अंतिम परीक्षा गत वर्ष ही उत्तीर्ण कर चुके हैं।

सौरभ बने सीए

मुंबई. समाज सदस्य पवन बजाज सुपुत्र सौरभ बजाज ने दोनों ग्रुप की सीए की परीक्षा प्रथम प्रयास में ही उत्तीर्ण की। इस उपलब्धि पर समस्त स्नेहीजनों ने हर्ष व्यक्त किया है।

मानवाधिकार से भी दूर होते वरिष्ठजन

▸▸शरद गोपीदास बागड़ी, नागपुर

बुजुर्गों के साथ होने वाली प्रताड़ना के समाचार आजकल आए दिन अखबार की सनसनीखेज खबर बनते जा रहे हैं। इनमें प्रताड़ना या कहें उपेक्षा लेकिन उन्हें मानवाधिकारों तक से दूर कर दिया गया है। सरकार ने कानून बनाए, फिर भी कोई विशेष फर्क नहीं पड़ा। आखिर हम क्या सामाजिक बदलाव लाएं, जिससे अपना सबकुछ अपनी संतानों को अर्पित कर देने वाली हमारी वरिष्ठ पीढ़ी इस तरह उपेक्षा की शिकार न हो?

अभी पिछले महीने एक समाचार छपा। एक बहुत बड़े बालरोग विशेषज्ञ डॉक्टर जिनके बेटा, बेटी बहू व जंवाई सभी डॉक्टर हैं और विदेश में रहते हैं, उनकी वृद्धावस्था वृद्धाश्रम में गुजरी व देहांत की सूचना देने पर भी परिवार के किसी सदस्य के नहीं आने पर दाह संस्कार दो दिन बाद वृद्धाश्रम वालों ने ही किया। नागपुर में दो साल पहले राणा प्रताप में बुजुर्ग दंपती ने अकेलेपन से तंग आकर आत्महत्या कर ली। हम एक संस्था के माध्यम से कुछ लोगों का ग्रुप बनाकर नागपुर के आसपास के वृद्धाश्रम में गए थे। एक छोटे से शहर के बाहर स्थित वृद्धाश्रम में हमारे साथ के एक गुजराती भाई को उनके दूर के रिश्ते की एक बुजुर्ग 75 साल की महिला दिखी। पहले तो दोनों ने एक-दूसरे को देखकर अनदेखा किया। फिर पता लगा कि वह वृद्ध महिला मुंबई के एक करोड़पति उद्योगपति की माताजी थीं। हमने फोन लगाकर उनके बेटे को वहां बुलाया। वह बहुत शर्मिंदा हुआ व माफी मांगकर माताजी को वापस लेकर गया। पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार ऐसी अनेक घटनाएं रोज हो रही हैं व इनमें वृद्धि भी हो रही हैं।

क्या हैं इसके सामाजिक कारण

हर समाज में यही हो रहा है। समय बदल रहा है। इसमें किसी एक का दोष नहीं है। यह व्यवस्था हमारी पारिवारिक संरचना व शिक्षा प्रणाली की कमी आदि का परिणाम है। आज हर समाज में तीन मुद्दे बहुत गंभीर हैं-बुजुर्गों की देखरेख व मानवाधिकार, तलाक की गंभीरता तथा बच्चों की शिक्षा व संस्कार। ऊपरी तौर पर देखने में तीनों मुद्दे अलग दिखेंगे परंतु हकीकत में ये तीनों एक-दूसरे जुड़े हैं व एक-दूसरे के लिए जिम्मेदार हैं। बुजुर्गों के पास अनुभव, ज्ञान व संस्कारों की विरासत है। बच्चों व बुजुर्गों का मेल व तालमेल हमारे परिवार, समाज व देश के लिए बहुत जरूरी है। जिन बुजुर्गों ने पूरा जीवन परिवार, बच्चों व समाज को दिया था, अब बुढ़ापे में उनके भी कुछ मानवाधिकार हैं, जिसकी रक्षा करना हम सबका कर्तव्य है। अगर हम समाज में बुजुर्गों को उनका सही स्थान दिलवा सके तो बच्चों को संस्कार भी मिलेंगे व आज के बेटा-बहू, बेटी-जवांइयों अर्थात जवान पीढ़ी को दाम्पत्य जीवन में सही मार्गदर्शन भी कर सकेंगे। आज हम करोड़ों रुपए खर्च कर अधिवेशन कर रहे हैं। समाज की नई इमारतें, ऑफिस बना रहे हैं। यह अपनी जगह सही व जरूरी भी है परंतु इसकी उपयोगिता तब रहेगी जब समाज मे सब कुछ ठीक रहेगा। अगर समाज ही विघटन व पतन की राह पर चला गया तो इन सबका फायदा किसको होगा?

बेटियों के साथ न करें भेदभाव

सबसे पहले जरूरी है कि हम बेटा-बेटी को एक नजरिये से देखें व बचपन से ही उनमें किसी तरह का भेदभाव नहीं करें। अगर हम मनोवैज्ञानिक तरीके से विश्लेषण करें तो अनुभव करेंगे कि हम बचपन से बेटियों को दबाकर रखते हैं व धीरे-धीरे उनमें दबी हुई हीनभावना विकसित होती जाती है। शादी के बाद बेटी से बहू बनते समय मौका मिलने पर यह दबी चिंगारी बनकर उभरती हैं व उनका ससुराल के प्रति नजरिया पक्षपातपूर्ण होता जाता है। अगर हम बचपन से अपनी बेटी के साथ बेटे जैसा व्यवहार करेंगे तो बेटी अपने सास-ससुर को अपने माता पिता से ज्यादा प्यार व अपनापन देगी।

पारिवारिक काउंसलिंग हो

आज हर गाव शहर में समाज में अनुभवी समझदार व्यक्तियों की ऐसी कमेटी बनाई जाए जो समय-समय पर ऊपरी तौर पर यह देखे कि कौन से परिवार मे क्या तकलीफ है? किस बात की जरूरत है? टकराव के समय निष्पक्ष रूप से दोनों तरफ की बात सुनकर बिना किसी की भावनाओं को दबाए व ईगो का समर्थन न करते हुए सही राय दी जाए। कभी-कभी आईना दिखाते हुए कड़वी सही बात व कभी नरमी तो तथा प्रेम से समझाना भी जरूरी होता है।

बुजुर्गों का हो सर्वे

अपने गांव-शहर में सर्वे कर के एक लिस्ट बनाई जाये कि कौन बुजुर्ग अकेले रहते हैं व उनके बच्चे कहां-कहां रहते हैं। अगर एक शहर में अलग रहते हैं तो उनमें समन्वय बनाया जाये व उनको साथ किया जाए। आज यह काम सरकार भी करने के लिए कानून ला रही है कि हर हाल में बुजुर्ग माता-पिता की देखरेख की जिम्मेदारी बच्चों की होगी, लेकिन कानून से इसका समाधान होना मुश्किल है क्योंकि साधारणतः स्वाभिमानी अभिभावक बच्चों की शिकायत या बुराई सार्वजनिक करना नहीं चाहते।

साथ में बिताएं समय

आज परिवार का छोटा बड़ा हर सदस्य अपने आप में बहुत व्यस्त है। कुछ बातें परिवार के अंदर भी की जाएं तो बहुत अच्छा रहेगा। सबकी सहूलियत के हिसाब से रोज/हफ्ते में कुछ समय निकाल कर नियमित रूप से साथ में खाना खाते, भजन करते, कुछ खेलते हुए साथ में समय बिताएं। इस समय सभी सदस्य दिल खोलकर एक-दूसरे से अपनी समस्या की चर्चाकर गलतफहमी मिटा लें। किसी भी कीमत पर मतभेद को मनभेद न बनने दें।

बुजुर्गों के स्वास्थ्य की चाबी उचित दिनचर्या

वृद्धावस्था तो अवश्यंभावी है और प्रकृति का नियम है। यही वह अवस्था है, जिसमें शरीर कमजोर हो जाता है और रोग हावी होने की कोशिश करते हैं। वृद्धवस्था न आए यह तो संभव नहीं, लेकिन यदि हम रखें सही दिनचर्या तो इस अवस्था को भी रख सकते हैं, सुखद। आईये देखें क्या करें, क्या न करें हम?

कैलाश लड्ढा, जोधपुर

खासकर इस उम्र में खाना हल्का, सुपाच्य, कम तेल, मिर्च मसाले वाला और जहां तक हो सके शाकाहारी लें। वैज्ञानिक शोधों से ये साबित हो चुका है कि जो लोग, कम खाते हैं और शाकाहारी खानपान अपनाते हैं, वो ज्यादा लंबा और ज्यादा स्वस्थ जीवन जीते हैं। बनिस्बत उन लोगों के जो ज्यादा मात्रा में खाना खाते हैं और मांसाहार अपनाते हैं। बढ़ती उम्र के साथ चूंकि, मांसपेशियां शिथिल और कमजोर पड़ने लगती हैं इसीलिये आहार में प्रोटीन की जरूरत भी बढ़ जाती है। इसी के मद्देनजर खाने में प्रोटीन के स्रोत, जैसे कि दालें, सोयाबीन, चना, पनीर और टोफू (सोया पनीर) की मात्रा बढ़ा दें। कैल्शियम और विटामिन डी की कमी की वजह से हड्डियां कमजोर पड़ने लगती हैं, जिस वजह से कमर दर्द और जोड़ों में दर्द बहुत ही आम समस्या बन जाती है। इसीलिए ये बहुत जरूरी हो जाता है कि दूध, दही और दूध से बने पदार्थों के रूप में, खाने में भरपूर मात्रा में बराबर कैल्शियम लें। डॉक्टरी सलाह पर, कैल्शियम और विटामिन डी के सप्लीमेंट्स भी ले सकते हैं। खाने में साबुत अनाज और फाइबरयुक्त आहार लें। प्रचुर मात्रा में सब्जियों और फलों का सेवन करें। मौसमी फल प्रतिदिन खाने का नियम जरूर बना लें। 1 चम्मच घी के रूप में, थोड़ी सी वसा का भी अवश्य ही सेवन करें। विशेषकर रात का खाना हल्का लें और जल्दी अवश्य ही लें।

व्यायाम के साथ पर्याप्त नींद भी जरूरी

सात से आठ घंटे की तनावरहित नींद लेने की कोशिश करें। अगर तनाव और अनिद्रा की समस्या है तो ध्यान, योग का सहारा लें। बहुत जरूरी है कि सारे दिन किसी ना किसी गतिविधि में खुद को व्यस्त रखें, ताकि रात को नींद आने में समस्या ना हो। अगर फिर भी दिक्कत महसूस हो तो, अनिद्रा की समस्या के लिए डॉक्टर से मिलें। नियम से हफ्ते में कम से कम 3 दिन, आधे घंटे के लिए, घूमना जारी रखें। अगर शरीर में ताकत हो तो जिम ट्रेनर के संरक्षण में वेट ट्रेनिंग एक्सरसाइज करने से, हड्डियां मजबूत होंगी और मांसपेशियां भी कमजोर नहीं होंगी। इसके साथ ही साथ, अगर आप पहले से ही जॉगिंग या स्वीमिंग जैसी एक्सरसाइज करते रहें हो, तो उसको जारी रखने में कोई हर्ज नहीं। साथ ही आपको योग, ध्यान, प्राणायाम और सूर्य नमस्कार करने से भी स्वास्थ की दृष्टि से बेहद लाभ मिलेंगे। एक वैज्ञानिक शोध में तो ये भी देखा गया है, कि जो लोग डांस में रुचि रखते हैं और स्वयम डांस सीखते और करते हैं, वो ज्यादा समय तक स्वस्थ और युवा बने रहते हैं और उनकी याददाश्त भी मजबूत होती है।

जीवनशैली को सही रखें

सिर्फ वृद्धावस्था ही क्यों बल्कि बाल्यपन से लेकर युवावस्था व वृद्धावस्था में कुल मिलाकर जीवन के हर पड़ाव में व्यक्ति को एक नियमित जीवनशैली अपनानी चाहिए, जिसमें जल्दी सोना और सूर्योदय के साथ उठना, एक बेहद कारगर आदत है। निश्चित ही, नियमित दिनचर्या स्वस्थ जीवन की अमूल्य कुंजी है। इस उम्र में अक्सर पास की नजर कमजोर हो जाती है और कान से भी अक्सर कम सुनाई पड़ने लगता है। अगर आपको ऐसी कोई भी समस्या है तो ठीक नंबर का चश्मा बनवाकर लगाने और हियरिंग ऐड (सुनने का उपकरण), इस्तेमाल करने में झिझके नहीं। आखिर जब आपकी इंद्रियां सही से काम करेंगी, तभी तो आप चिंतामुक्त जीवन का आनंद उठा पाएंगे। अगर आपने अपने दांतों की हमेशा सही देखभाल की है, तो इस उम्र में भी आप सही सलामत दांतों का लाभ उठा पाएंगे। अगर दांतों या मसूड़ों में दिक्कत हो तो डेंटिस्ट से सलाह लेकर उचित इलाज जरूर कराएं। आजकल दांतों के लिए बेहतरीन सुविधाएं उपलब्ध हैं। धूम्रपान, शराब, तंबाकू या गुटखा, सभी नशे का सेवन पूरी तरह से बंद कर दें।

खुशियों से बिताएं पल

आखिरी और सबसे महत्वपूर्ण संदेश, जीवनभर आप अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह करते रहे और घर के लिए रोटी का इंतजाम करने और बच्चों की अच्छी परवरिश करने में लगे रहे। लेकिन उम्र का ये पड़ाव सिर्फ और सिर्फ आपके लिए और आपके जीवनसाथी के लिए होना चाहिए है। जीवनसाथी को भरपूर समय दें, उनको अब अपने जीवन की प्राथमिकता बनाएं। सारी अधूरी हसरतों को साथ में पूरा करने की कोशिश करें। खूब घूमें फिरें। अब बच्चों को जिम्मेदारियां स्वयं ही उठाने दें। नाती पोतों के साथ खूब खेलें। खूब किस्से कहानियां सुनाएं। अपने जीवन से जुड़ी रोचक घटनाओं को बताएं। अपने अनुभव की अमूल्य धरोहर उन्हें सौंपें। दोस्तों व रिश्तेदारों के साथ ज्यादा से ज्यादा वक्त बिताएं। क्या मालूम, सांझ की इस बेला में किसका, कितना और कब तक साथ मिले?

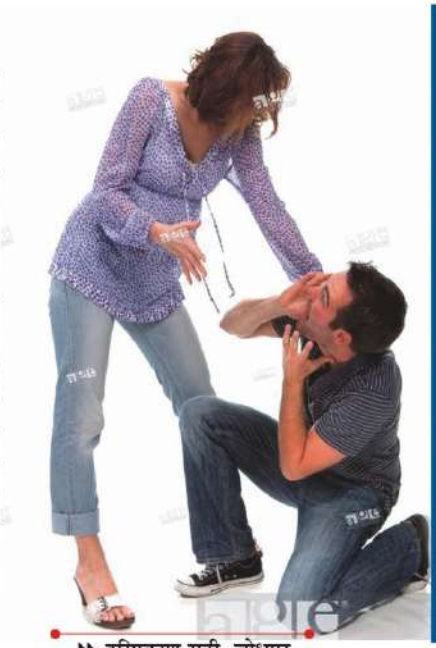

हमारी संस्कृति ही नहीं बल्कि हमारे धर्मशास्त्रों में भी नारी को अत्यंत सम्मानजनक रूप में प्रस्तुत किया गया है। दुर्भाग्य से देश की परतंत्रता की स्थिति में नारी पर अत्याचार हुए कई गलत कुरीतियों की भी शुरुआत हुई। नारी उत्पीड़न को रोकने के लिए वर्तमान में कानून बने हैं। वास्तव में ये स्वागत योग्य हैं, लेकिन इनका जिस तरह दुरुपयोग हो रहा है, उसने भी चिंता की लकीरें खींच दी हैं।

▸▸ हरिप्रकाश राठी, जोधपुर

क्यू लगातार बढ़ रहे हैं पत्नी पीड़ित

नारी तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास रजत नग पगतल में, पीयूष स्रोत सी बहा करो जीवन के सुंदर समतल में, राष्ट्रकवि दिनकर की इन पंक्तियों ने लगता है वर्तमान समाज एवं सरोकारों में अपना सन्दर्भ एवं महत्व दोनों खो दिए हैं। मुझे वर्ष 1965 में प्रदर्शित 'खानदान' फिल्म के एक गीत की वह पंक्ति 'तुम्हीं प्राण मेरे तुम्हीं आत्मा हो' भी याद हो आई है जो स्त्री-पुरुष संबंधों के माधुर्य एवं रूहानी ऊंचाईयों का अद्भुत बयान थी। आज से नहीं पौराणिक काल से पुरुष से स्त्री है एवं स्त्री से पुरुष। जीवन-रथ को सुगमता से चलाने के लिए दोनों पहियों का समान महत्व है। यह तथ्य भी सर्वविदित है कि दोनों समानधर्मा नहीं हैं। पुरुष में शौर्य, सुरक्षा देने का भाव, प्रशासकीय कौशल, अर्थोपार्जन क्षमता आदि विशिष्ट गुण हैं तो नारी में पुरुष से अधिक बुद्धि, चातुर्य, ममता, करुणा एवं सौहार्द है। जो जिसके पास नहीं होता, वह उन गुणों पर रीझता है एवं यही आकर्षण सदियों से दोनों का मिलन बिंदु बनकर परिवार, समाज एवं राष्ट्र का संरक्षण करता आया है। दोनों अपने-अपने ग्रह पर हैं, परिधि में हैं, डीएनए में हैं वहां तक दोनों में प्रेम है, समायोजन है, दोनों जैसे ही एक-दूसरे के ग्रह, परिधि पर कुदका-कुदकी, अतिक्रमण करने लगते हैं, युद्ध तय है।

स्त्री कानूनों ने बढ़ाया विघटन

इन दिनों समाज में यकायक स्त्री अधिकारों के नाम पर कानूनों की बाढ़ हो आई है। इनके स्पीरिट, मूलभाव का सही प्रयोग तो उचित है, पर देखा यह गया है कि बहुधा ऐसे कानूनों का गलत प्रयोग हो रहा है एवं इन स्थितियों ने घर-घर में पारिवारिक परिवेदनाओं को बढ़ा दिया है। हद तो यह होने लगी है कि अधिकांश मामलों में इन कानून की आड में ब्लैकमेलिंग, धौंस दिखाई दे रही है, जिसका शिकार पुरुष से कहीं अधिक परिवार की स्त्रियां यथा सास, ननद, भाभी यहां तक कि दादी सास भी हो रही है। इन्हीं कानूनों में से एक कानून सेक्शन 498ए दहेज प्रताड़ना कानून है जिसका इसके प्रादुर्भाव से ही लगातार दुष्प्रयोग हो रहा है। अनेक प्रकरणों में भले गलती लड़की की क्यों न हो, जरा सा असमायोजन होने, सास-बहू में अनबन होने अथवा रिश्ता मनमर्जी से नहीं चलने की अवस्था में बहुएं जबरन पति एवं उसके सगे-संबंधियों को इन धाराओं में आरोपी बना रही है। बहुधा ऐसे प्रकरणों में लड़के वालों को मुक्ति भारी रकम देकर ही मिलती है। एक बार केस दर्ज होने के बाद लड़के एवं संबंधों पक्षों को जेल हो जाती है एवं ऐसा होते ही सामंजस्य के सारे प्रयास भौंथरें हो जाते हैं। जेल जाना आज भी समाज में बड़ा स्टिगमा है, जो लड़के एवं उसके परिवार वालों को समायोजन से कोसों दूर कर देता है।

कोर्ट ने प्रयास कर हाथ खींचे

हाल ही में ग्वालियर कोर्ट ने झूठा मुकदमा दर्ज करने वाली एक ऐसी बहू पर भारी जुर्माना भी लगाया था जिसने अपनी ननद-देवर आदि तक के विरुद्ध पति के साथ एफआईआर दर्ज कर दी थी। यह लड़की ससुराल वालों को लगातार ब्लैकमैलिंग कर रही थी। सुप्रीम कोर्ट की दो सदस्यीय पूर्व बैंच ने भी इस स्थिति को समझा एवं ऐसे मामले में परिवार कल्याण समिति के गठन का प्रस्ताव दिया जो तफ्तीश करेगी कि मामला झूठा तो नहीं है। यह समिति समायोजन, समझौते का भी प्रयास करती थी, तत्पश्चात ही मामला दर्ज होता था। इससे झूठे मुकदमों पर लगभग अंकुश लग गया था। अनेक प्रकरणों में समायोजन भी होने लगे थे, लेकिन हाल ही में सुप्रीम कोर्ट की तीन सदस्यीय बैंच ने निर्णय को उलट दिया है एवं अब परिवार कल्याण समितियों की कोई भूमिका नहीं होगी। अब पुनः पुलिस को सीधे तफ्तीश एवं गिरफ्तारी के पॉवर मिल गए हैं। यानी अब सारा दारोमदार पुलिस पर होगा एवं सभी जानते हैं, पुलिस कैसे कार्य करती है? इसका सीधा अर्थ यह है कि अब पुनः लड़के वालों पर बिजलियां गिरेंगी एवं पारिवारिक विघटन के प्रकरण बढ़ेंगे।

पत्नी पीड़ितों की दुर्दशा

यह ठीक है कि इसमें अग्रिम जमानत का प्रावधान है, गिरफ्तारी पूर्व तफ्तीश का भी कहा गया है पर फिर भी यह नया संशोधन उस चाकू की तरह है जिसमें अधिकांश प्रकरणों में लड़के के परिवार हितों का खरबूजा कटना तय है। न्याय में अगर व्यावहारिकता, समरसता नहीं हो तो न्याय अनेक बार अपने उत्कर्ष, अंतिम उद्देश्य से भटक जाता है, न्याय में सामाजिक अवधारणाओं, जायज मान्यताओं का समावेश भी परमावश्यक है। इन दिनों पत्नी पीड़ितों की संख्या में अहर्निश इजाफा हो रहा है। कुछ दिन पूर्व हुई आईपीएस सुरेंद्रकुमार की आत्महत्या एक ज्वलन्त प्रश्न खड़ा करती है। गाजियाबाद के एक और आईपीएस ने गृह क्लेश के चलते आत्महत्या कर ली। स्त्री विमर्श के इस दौर में पुरुष के प्रति संवेदना में आखिर इतनी कमी क्यों आ गई है? क्या प्रतिसंवेदना के स्तर पर इसके भयानक परिणाम नहीं होंगे? पिछले वर्ष गुरु भय्यूजी महाराज ने भी पत्नी से प्रताड़ित होकर मौत को गले लगा लिया था। अनेक पुरुषों को वर्षों से तलाक नहीं मिल रहा है। ऐसे एक नहीं अनेक उदाहरण हैं। क्या समाज, नये स्त्री स्वर इन पुरुषों की पीड़ा पर भी चिंतन करेगा?आखिर पुरुष आपसे हैं,तो आप भी तो उसी से हैं। यदि हां तो अभी आशा शेष है एवं यदि नहीं तो समाज पारिवारिक परिवेदनाओं के ऐसे दावानल में चला जाएगा जहां अनेक घरों का जलना तय है।

वरिष्ठावस्था की सबसे बड़ी समस्या स्लिप डिस्क

स्लिप डिस्क भी वृद्धावस्था की बीमारियों में से एक प्रमुख बीमारी है। वास्तव में देखें तो यह बीमारी है ही, नहीं बल्कि शरीर की कमजोरी की वजह से उत्पन्न हुई समस्या है। स्पाइन कॉर्ड की हड्डियों के बीच कुशन जैसी एक मुलायम चीज होती है, जिसे डिस्क कहा जाता है। ये डिस्क एक-दूसरे से जुडी होती हैं और वर्टिब्रा के बिल्कुल बीच में स्थित होती है जो शॉक एब्जॉर्बर का काम करती है। वास्तव में डिस्क स्लिप नहीं होती, बल्कि इसमें स्पाइनल कॉर्ड से कुछ बाहर को आ जाती है। डिस्क का बाहरी हिस्सा एक मजबूत झिल्ली से बना होता है और बीच में तरल जैलीनुमा पदार्थ होता है। डिस्क में मौजूद जैली या कुशन जैसा हिस्सा कनेक्टिव टिश्यूज के सर्कल से बाहर की ओर निकल आता है और आगे बढ़ा हुआ हिस्सा स्पाइन कॉर्ड पर दबाव बनाता है। कई बार उम्र के साथ यह तरल पदार्थ सूखने लगता है या फिर अचानक झटके या दबाव से झिल्ली फट जाती है या कमजोर हो जाती है तो जैलीनुमा पदार्थ निकलकर नसों पर दबाव बनाने लगता है, जिसकी वजह से पैरों में दर्द या सुन्न होने की समस्या होती है।

कैसे पहचानें इसे

सामान्यतः यह परेशानी है या नहीं इसका अंतिम निष्कर्ष तो डॉक्टर ही दे सकता है। फिर भी इसके कुछ लक्षण ऐसे हैं, जिससे इसे पहचाना जा सकता है। इनमें नसों पर दबाव के कारण कमर दर्द, पैरों में दर्द, एडी या पैर की अंगुलियों का सुन्न होना, पैर के अंगूठे या पंजे में कमजोरी, स्पाइनल कॉर्ड के बीच में दबाव पड़ने से कई बार हिप या थाईज के आसपास सुन्न महसूस करना, समस्या बढ़ने पर यूरिन-स्टूलपास करने में परेशानी, रीढ़ के निचले हिस्से में असहनीय दर्द, चलने-फिरने, झुकने या सामान्य काम करने में भी दर्द, झुकने या खांसने पर शरीर में करंट सा महसूस करना आदि इसके सामान्य लक्षण हैं।

क्यों होती यह समस्या?

डॉक्टरों के अनुसार इस समस्या की उत्पत्ति ज्वाइंट्स के डिजेनरेशन, कमर की हड्डियों या रीढ़ की हड्डी में जन्मजात विकृति या संक्रमण अथवा पैरों में कोई जन्मजात खराबी या बाद में कोई विकार पैदा होने से होती है। फिर भी देखें तो इन कारणों की उत्पत्ति के मूल में भी हमारी कुछ सामान्य गलतियां हैं। गलत पोश्चर इसका आम कारण है। लेटकर या झुककर पढ़ना या काम करना, कम्प्यूटर के आगे बैठे रहना इसका प्रमुख कारण है। अनियमित दिनचर्या, अचानक झुकने, वजन उठाने, झटका लगने, गलत तरीके से उठने-बैठने की वजह से दर्द हो सकता है। सुस्त जीवन शैली, शारीरिक गतिविधियां कम होने, व्यायाम या पैदल न चलने से भी मसल्स में कमजोर हो जाती हैं। अत्यधिक थकान से भी स्पाइन पर जोर पड़ता है और एक सीमा के बाद समस्या शुरू हो जाती है। अत्यधिक शारीरिक श्रम, गिरने, फिसलने, दुर्घटना में चोट लगने, देर तक ड्राइविंग करने से भी डिस्क पर प्रभाव पड़ सकता है। उम्र बढ़ने के साथ हड्डियां कमजोर होने लगती हैं और इससे डिस्क पर जोर पड़ने लगता है।

कैसे बचें

नियमित तीन से छह किमी प्रतिदिन पैदल चलें। यह सर्वोत्तम व्यायाम है, हर व्यक्ति के लिए। देर तक स्टूल या कुर्सी पर झुक कर न बैठें। अगर डेस्क जॉब करते हैं तो ध्यान रखें कि कुर्सी आरामदेह हो और इसमें कमर को पूरा सपोर्ट मिले। शारीरिक श्रम मांसपेशियों को मजबूत बनाता है, लेकिन इतना भी परिश्रम न करें कि शरीर को आघात पहुंचे। देरतक न तो एक ही पोश्चर में खड़े रहें और न ही बैठे रहें। किसी भी सामान को उठाने या रखने में जल्दबाजी न करें। पानी से भरी बाल्टी उठाने, आलमारियां-मेज खिसकाने, भारी सूटकेस उठाते समय सावधानी बरतें। ये सारे कार्य आराम से करें। अगर भारी सामान उठाना पड़े तो उसे उठाने के बजाय धकेलकर दूसरे स्थान पर ले जाने की कोशिश करें। हाई हील्स और फ्लैट चप्पलों से बचें। अध्ययन बताते हैं कि हाई हील्स से कमर पर दबाव पड़ता है। साथ ही पूरी तरह फ्लैट चप्पलें भी पैरों के आर्च को नुकसान पहुंचाती हैं, जिससे शरीर का संतुलन बिगड़ सकता है।

'स्लिप डिस्क' वृद्धावस्था की ऐसी बीमारी के रूप में जानी जाती है जो रोगी को चलने-फिरने तक का मोहताज कर देती है। वैसे वर्तमान की अनियमित दिनचर्या के कारण युवा वर्ग भी इससे प्रभावित होने लगा है। यदि दिनचर्या सही रहे तो युवास्था तो ठीक वृद्धावस्था में भी इससे बचा जा सकता है। आईये देखें कैसे?

▸▸ टीम SMT

कई दोषों से मुक्ति का पर्व है श्राद्धपक्ष

श्राद्ध पक्ष वास्तव में सिर्फ परंपरा या कर्मकांड मात्र नहीं है। यह तो वह पितृ पर्व है, जो हमारी जन्मकुंडली के कई दोषों को भी दूर जीवन में सुख समृद्धि का संचार कर सकता है। पूर्व जन्मकृत कृत्यों के शाप से मुक्ति भी यही पर्व दिलाता है।

▸▸ महेश शर्मा, जयपुर

पितृपक्ष में सूर्य कन्या राशि के दसवें अंश पर आता है और वहां से तुला राशि की ओर बढ़ता है। इसे कन्यागत सूर्य कहते हैं। जब सूर्य कन्यागत हो तो उस समय पितरों का श्राद्ध-तर्पण करना अति महत्वपूर्ण कहा गया है। प्रतिवर्ष भाद्रपद मास की पूर्णिमा से आश्विन कृष्ण पक्ष अमावस्या तक श्राद्ध पक्ष मान्य रहता है। शास्त्रों के अनुसार श्राद्ध पक्ष में दिवंगत पूर्वजों के निमित्त श्राद्ध, तर्पण, पिंडदान यज्ञ तथा भोजन का विशेष प्रावधान किया गया है। वर्ष में जिस भी तिथि को वे दिवंगत होते हैं, पितृपक्ष की उसी तिथि को उनके निमित्त विधि-विधानपूर्वक श्राद्ध कार्य संपन्न किया जाता है। दिवंगत पूर्वजों के निमित्त श्रद्धापूर्वक किए दान को ही श्राद्ध कहा जाता है। 'संस्कृत व्यन्जनाद्यं च पयोदधिघृतान्वित, श्रद्धया दीयते यस्मात श्राद्धं तेन प्रकीर्तितम।।' अर्थात पकाए हुए शुद्ध पकवान व दूध, दही, घी आदि को श्रद्धापूर्वक पितरों के निमित्त दान करने का नाम ही श्राद्ध है।

सर्व सुख की प्राप्ति का कारण

ब्रह्मपुराण में कहा गया है 'आयुः प्रजां धनं विद्यां स्वर्गं मोक्षं सुखानि च। प्रयच्छन्ति तथा राज्यं पितरः श्राद्ध तर्पिता।।' अर्थात श्राद्ध द्वारा प्रसन्न हुए पितृगण मनुष्यों को पुत्र, धन, विद्या, आयु, आरोग्य, लौकिक सुख, मोक्ष तथा स्वर्ग आदि प्रदान करते हैं। पितृेश्वरों के आशीर्वाद से ही जन्म कुंडली में निर्मित पितृदोष के दुष्परिणामों से बचा जा सकता है। आश्विन कृष्ण पक्ष में किए जाने वाले श्राद्ध पार्वण श्राद्ध कहलाते है। जबकि वार्षिक श्राद्ध एकोदिष्ट होते हैं। वसु, रुद्र और आदित्य श्राद्ध के देवता हैं। यह तीनों हमारे द्वारा किये गए श्राद्ध कर्म मनुष्यों के पितरों को भी तृप्त करते हैं। याज्ञवल्क्य का कथन है कि श्राद्ध देवता श्राद्ध कर्त्ता को दीर्घ जीवन, आज्ञाकारी संतान, धन विद्या, संसार के सुख भोग, स्वर्ग तथा दुर्लभ मोक्ष भी प्रदान करते हैं।

क्या हैं पितृदोष के लक्षण

जन्म कुंडली में बारहवां भाव, सूर्य शनि की युति तथा राहु का प्रभाव पितृदोष का कारण बनता है। कई बार यह देखने में आता है कि जन्म कुंडली में अनुकूल ग्रह योग होते हुए भी व्यक्ति को सफलता नहीं मिल पातीं। जब किसी की जन्म पत्रिका उपलब्ध नहीं हो तो जीवन में कुछ परिस्थितियों से पितृदोष प्रमाणित होता है जैसे-बार-बार दुर्घटनाएं होना, मन में हमेशा अनहोनी की आशंका, अच्छे व्यवहार के बावजूद दुर्व्यवहार का सामना करना, नौकरी में बार-बार परेशानियां, विवाह में रुकावट, मानसिक स्थिति ठीक नहीं रहना, संतान कष्ट, पूजा-पाठ में मन नहीं लगना, चित्त-विकृत्ति, धनाभाव, व्यापार में नुकसान, रोजगार की समस्या, भय, शारीरिक व्याधि, दांपत्य जीवन में क्लेश इत्यादि। श्राद्ध पक्ष में पितृ दोष निवारण के लिए किए गए उपायों को करने से पितरों के आशीर्वाद फलस्वरूप संतान सुख, संपत्ति लाभ, राज्य सुख, मान-सम्मान आदि की प्राप्ति होती है। रोग तथा असामायिक दुर्घटनाओं से बचाव होता है।

जन्म कुंडली से कैसे पहचानें

जिनकी जन्म कुंडली में सूर्य नीचगत, शत्रु क्षेत्रीय अथवा राहु-केतु के साथ द्वादश भाव में स्थित हो तो पितृदोष बनता है। सूर्य-शनि अथवा सूर्य-राहु का योग जन्मकुंडली के केंद्र त्रिकोण (1, 4, 5, 7, 9, 10) भाव में हो अथवा लग्नेश 6, 8 या 12वें भाव में तथा राहु लग्न भाव में हो, तो पितृदोष समझें। मोहजनित दुःखों का कारक राहु, व्यक्ति को भौतिकता की ओर उत्प्रेरित करता है, वह यदि पाप प्रभाव में हो, नीच अथवा शुत्रु क्षेत्रीय होकर द्वादश भाव में शनि दृष्ट हो तो वह पितृ दोष का कारण बनता है। अष्टम अथवा द्वादश भाव में गुरु-राहु का योग हो और पंचम भाव में सूर्य-शनि या मंगल आदि क्रूर ग्रह स्थिति हों, तो पितृदोष के कारण संतान कष्ट होता है। व्ययेश लग्न में, अष्टमेष पंचम में तथा दशमेष अष्टम भाव में हो तो पितृदोष के कारण धन हानि तथा संतान के कारण कष्ट होता है। चंद्रमा के साथ राहु, केतु, बुध अथवा शनि का योग भी पितृदोष की भांति मातृ दोष कहलाते हैं।

शक्ति पूजा का महापर्व नवरात्रि

▸▸ डा. महेश शर्मा, जयपुर

शारदीय नवरात्रि प्रतिवर्ष आश्विन शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से प्रारम्भ होती है। इस वर्ष यह 10 अक्टूबर से प्रारंभ होगी।दुर्गा सप्तशती के बारहवें अध्याय में शारदीय नवरात्र के महत्व को बताते हुए देवी ने स्वयं कहा है ''शारदकाले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी। तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्तिसमन्वितः।। सर्वाबाधा विनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः। मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः।। ''अर्थात शारदीय नवरात्रा में जो वार्षिक महापूजा की जाती है, उस अवसर पर जो मेरे इस माहात्म्य को भक्तिपूर्वक सुनेगा, वह मनुष्य मेरे प्रसाद से सब बाधाओं से मुक्त तथा धन धान्य एवं पुत्र से सम्पन्न होगा-इसमें तनिक भी संदेह नहीं है। इन दिनों नवदुर्गा के रुप में देवी की नौ शक्तियों की पूजा की प्रधानता रहती है। यह नौ शक्तियॉ शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघंटा, कुष्माण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी तथा सिद्धिदात्री के नाम से विख्यात है। नवरात्र में देवी के निमित्त व्रत, पूजा, पाठ, हवन, बटुक कुमारिका पूजन आदि का विधान देवी भागवत में बताया गया है।

शारदीय नवरात्र में दुर्गा सप्तशती के व्रत, पाठ और हवन द्वारा धन, बल, विद्या एवं बुद्धि की अधिष्ठाता देवी महाकाली, महालक्ष्मी तथा महासरस्वती की आराधना की जाती है। सप्तशती का पाठ धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष चारों पुरुषार्थों को प्रदान करता है। आईये जाने कैसे करे इनकी प्राप्ति

त्रिदेवी का ही सम्पूर्ण रूप

धर्म ग्रंथ एवं पुराणों के अनुसार नवरात्र माता भगवती की आराधना का श्रेष्ठ समय होता है। नवरात्र का पर्व एक ऐसा पर्व है जो हमारी संस्कृति में महिलाओं के गरिमामय स्थान को दर्शाता है। नवरात्र में नौ दिन तक चलने वाला पर्व तीन - तीन दिन, तीन देवियों को समर्पित है। ये तीन देवियां हैं-महाकाली (शौर्य की देवी), महालक्ष्मी (धन की देवी) तथा महा सरस्वती (ज्ञान की देवी)। जगत की उत्पत्ति, पालन एवं प्रलय तीनों व्यवस्थायें जिस शक्ति के अधीन सम्पादित होती है वही पराम्बा भगवती आदि शक्ति है। 'ऐं' कारी बन कर सृष्टि का सृजन करने से इन्हें सृष्टिरूपा बीज कहा जाता है। 'ह्रीं'कारी देवी को प्रतिपाली एवं 'क्लीं' कारी कामरूपा शक्ति जगत का लय कर अपने आश्रय में ले लेती हैं। यही तीन शक्तियां महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती कहलाती हैं। इन्हीं के अनंत रूप हैं लेकिन प्रधान नौ रूपों में नवदुर्गा बनकर आदिशक्ति सम्पूर्ण पृथ्वी लोक पर अपनी करुणा की वर्षा करती है, अपने भक्त और साधकों में अपनी ही शक्ति का संचार करते हुए, करुणा एवं परोपकार द्वारा संसार के प्राणियों का हित करती हैं।

दुर्गा सप्तशति में माता के तीन चरित्र

प्रथम चरित्र- जब प्रलय के पश्चात् शेष शैय्या पर योगनिद्रा में निमग्न भगवान विष्णु के कर्ण मल से मधु और कैटभ नाम के दो असुर उत्पन्न हुए तो उन्होंने भगवान विष्णु के नाभि कमल में स्थित ब्रह्माजी को मारने का उद्यम किया तब ब्रह्माजी ने भगवती योगनिद्रा की स्तुति करते हुए उनसे तीन प्रार्थनायें कीं- भगवान विष्णु को जागृत कीजिये, उन्हें दोनों

असुरों के संहारार्थ उद्यत कीजिये, असुरों को विमोहित कर श्री विष्णु द्वारा उनका वध करवाइये। तब भगवती ने प्रकट होकर ब्रह्माजी को दर्शन दिया और दोनों असुरों को योगनिद्रा द्वारा मोहित कर भगवान से वर मांगने को कहा, अंत में उसी वरदान से विष्णु द्वारा उनका वध हुआ।

मध्यम चरित्र- पौराणिक कालमें महिष नाम के महाबली असुर ने इंद्रादिक देवी देवताओं को पराजित कर स्वर्ग से निकालदिया। तब देवताओं ने ब्रह्माजी के साथ भगवान विष्णु और शिवजी को अपनी व्यथा के साथ निवेदन किया। देवों की करूण कथा सुनकर हरिहर के मुख से एक महान तेज का प्राकट्य हुआ। इसी प्रकार अन्य देवों के शरीर से भी तेज निकला। वह समस्त तेजपुंज एकत्र होकर एक दिव्य देवी के स्वरूप में परिणित हो गया। तब ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि देवों ने उस तेजोमूर्ति देवी को दिव्य अस्त्र-षस्त्र प्रदान किये। अस्त्र-शस्त्र धारण कर देवी ने घोर अट्टहास किया, जिसे सुनकर महिषासुर सभी असुरों के साथ देवी से युद्ध करने लगा। तब देवी दुर्गा एवं उनके वाहन सिंह ने महिषासुर सहित समस्त असुरों का विनाश कर दिया। मध्यम चरित्र में मेधाऋषि ने निष्काम उपासना के माध्यम से कामोपासना द्वारा उपलब्ध फलों के निराकरण हेतु उपदेश किया है।

उत्तर चरित्र- पूर्व काल में शुम्भ और निशुम्भ नामक दो पराक्रमी राक्षसों ने इन्द्र का राज्य और यज्ञों का भाग तक छीन लिया और वे सभी देवताओं के स्वामी बन गये। तब सभी देवता मृत्युलोक में हिमालय पर पहुंचकर करूणाभाव से भगवती की प्रार्थना करने लगे। उसी समय देवी पार्वती ने प्रकट होकर पूछा, आप लोग किसकी स्तुति कर रहे है और क्या चाहते है? उसी समय देवी पार्वती के शरीर से 'शिवा' प्रकट हुई और कहने लगीं कि शुम्भ-निशुम्भ से पराजित स्वर्ग से निष्कासित इन्द्रादि देव मेरी स्तुति कर रहे हैं। पार्वती के शरीर से प्रादुर्भूत होने के कारण अम्बिका की उत्पत्ति हुई, जो 'कौशिकी' कहलायीं। उनके निर्गत हो जाने से पार्वती कृष्ण वर्णा हुईं और 'काली' नाम से हिमालय पर निवास करने लगीं। अतुलसौन्दर्य वाली देवी अम्बिका को देखकर चण्ड-मुण्ड ने असुरराज शुम्भ-निशुम्भ से देवी के सौंदर्य की प्रशंसा की तो असुरराज ने धूम्रलोचन को उस देवी को पकड़कर लाने का आदेश दिया। देवी ने हुंकार मात्र से धूम्रलोचन को भस्म कर दिया। फिर उन्होंने चण्ड-मुण्ड को भेजा। देवी ने कुपित होकर अपने ललाट से भयानक काली को प्रकट किया, उसने असुर सेना का विनाश कर दिया और चण्ड-मुण्ड के सिर काटकर अम्बिका के समीप ले आई। इसी कारण उसका नाम 'चामुण्डा' पड़ा। चण्ड-मुण्ड का वध सुनकर असुरराज ने सात सेनानायकों को युद्ध करने भेजा। उस समय ब्रह्या, विष्णु, शिव आदि की सात शक्तियां भी युद्ध करने पहुंचीं, तब अम्बा के शरीर से 'शिवदूती' नाम से शक्ति का प्रादुर्भाव हुआ। उस देवी ने सेनापति रक्तबीज सहित सभी आसुरी शक्तियों का विनाश कर दिया। अंत में शुम्भ-निशुम्भ का भी वध कर असुरों के आतंक से मुक्ति दिलायी।

नवरात्र में ग्रह दोष शांति

नौ दिनों तक देवी की आराधना, पूजा एवं व्रत करके न सिर्फ शक्ति संचय किया जाता है वरन नवग्रहों से जनित दोषों का शमन भी इस अवधि में सुगमता से किया जा सकता है। जन्म कुण्डली में यदि सूर्य ग्रह कमजोर हो तो स्वास्थ्य लाभ के लिए शैलपुत्री की उपासना से लाभ मिलता है। चन्द्रमा के दुष्प्रभाव को दूर करने के लिए कूष्मांडा देवी की आराधना करें। मंगलग्रह के लिए स्कंदमाता, व्यापार तथा अर्थव्यवस्था में वृद्धि के लिए बुध की शांति हेतु कात्यायनी देवी, गुरु के लिए महागौरी, शुक्र के शुभत्व के लिए सिद्धिदात्री तथा शनि के दुष्प्रभाव को दूर करने के लिए कालरात्रि की उपासना सार्थक रहती है। राहु की शुभता के लिए ब्रह्मचारिणी की उपासना तथा केतु के विपरीत प्रभाव को दूर करने के लिए चंद्रघंटा देवी की साधना करनी चाहिए। नवरात्र में प्रतिपदा को देवी को ऑवला, सुगंधित द्रव्य, द्वितीया को रेशम चोटी, तृतीया को सिंदूर-दर्पण, चतुर्थी को तिलक, मधुपर्क, काजल, पंचमी को चंदन, आभूषण, षष्ठी को माला पुष्प आदि अर्पित किया जाता है। सप्तमी को काजल, टीका, खड्ग, वस्त्र आदि से पूजन, अष्टमी को उपवास सहित पूजन, नवमी को महापूजा व बटुक-कुमारिका पूजन का महत्व है।

ऐसे करें सप्तशती के पाठ

नवरात्र के प्रथम दिन घट स्थापना करें, जवारे बोएं, घी का दीपक जलाएं। सर्व प्रथम गणपति अम्बिका का षोडषोपचार पूजन, कलश पूजा, पंच लोकपाल, दस दिकपाल, गौर्यादि षोडश मातृका, नवग्रह, अखण्डदीप पूजन आदि प्रतिदिन करें। इसके पश्चात दुर्गा सप्तशती के 13 अध्यायों का पाठ करें। सप्तशती के विधिवत पाठ में शापोद्धार सहित शड़ांग विधि- कवच, अर्गला, कीलक और तीनों रहस्य इन छः अंगों सहित देवी का पाठ करना चाहिए। इनका क्रम इस प्रकार है। पाठ के आरम्भ और अंत में शापोद्धार मंत्र- 'ऊँ ह्रीं क्रीं श्रीं क्रां क्रीं चण्डिकदेव्यै षापनाषानुग्रहं कुरु कुरु स्वाहा' का 7-7 बार, उत्कीलन मंत्र- ' ऊँ श्रीं क्रीं ह्रीं सप्तषति चण्डिके उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा' का 21-21 बार तथा मृतसंजीवनी विद्या मंत्र- 'ऊँ ह्रीं ह्रीं वं वं ऐं ऐं मृतसंजीवनि विद्ये मृतमुत्थापयोत्थापय क्रीं ह्रीं ह्रीं वं स्वाहा' का 7-7 बार जप करें। इसके बाद पाठ के आरम्भ में कवच, अर्गला, कीलक, वेदोक्त रात्रिसूक्त तथा देव्यअथर्वशीर्ष के पाठ करें। कर न्यास, हृदयादिन्यास आदि करने के बाद 108 बार नवार्ण मंत्र के जप करके एक से तेरह अध्याय तक पाठ करें। पाठ समाप्ति के तुरन्त बाद पुनः 108 बार नवार्ण मंत्र के जप करके पाठ को संपुटित कर लें। पुनः पूर्ववत शापोद्धार, उत्कीलन और मृतसंजीवनी विद्या के मंत्र जप करें। इसके पश्चात् ऋग्वेदोक्त देवीसूक्त, प्राधानिक रहस्य, वैकृतिक रहस्य, मूर्ति रहस्य, सिद्धिकुंजिकास्तोत्र के पाठ करें। क्षमा प्रार्थना, भैरवनामावली के पाठ, आरती तथा मंत्र पुष्पांजलि के साथ पाठ का समापन करें। विधिवत पाठ न कर सकने वाले व्यक्ति नवरात्र में व्रत रखकर हवन कर सकते हैं।

दुर्गा पाठ में रखें सावधानी

सप्तशती की पुस्तक को हाथ में लेकर पाठ करना वर्जित है। अतः पुस्तक को किसी आधार पर रखकर ही पाठ करना चाहिए। मानसिक पाठ नहीं करे वरन् पाठ मध्यम स्वर से स्पष्ट उच्चारण सहित बोलकर करना चाहिए। अध्यायों के अंत में आने वाले "इति", "अध्यायः" एवं "वधः" शब्दों का प्रयोग वर्जित है। उदाहरण देखें- "इति श्री मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमहात्मये मधुकैटभ वधो नाम प्रथमोऽध्यायः।।" के स्थान पर "श्री मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमहात्मये ऊँ तत्सत् सत्याः सन्तु मम कामाः अथवा यजमानस्य कामाः" जैसा अवसर हो अध्याय के अंत में बोलना चाहिए। दुर्गा पाठ को देवी के नवार्ण मंत्र "ऐं ह्रीं क्रीं चामुण्डायै विच्चे" से संपुटित करें अर्थात पाठ के ठीक पहले और तुरन्त बाद इस मंत्र के 108 बार जप करें। नौ अक्षरों के उक्त नवार्ण मंत्र के जाप में अन्य मंत्रों की तरह 'ऊँ' नहीं लगता है। अतः इसे प्रणव 'ऊँ' रहित ही जपना चाहिए। परन्तु करन्यास, हृदयादिन्यास आदि करते समय 'ऊँ' लगेगा।

खुश रहें... खुश रखें...

सुख की भी अपनी पीड़ा होती है और पीड़ा का भी सुख होता है

दुख कोई नहीं चाहता इसीलिए सुख के पीछे हर कोई भागता है। दुख मिलता है तो पीड़ा होती है, लेकिन सुख मिलने पर सुकून मिल ही जाए यह भी जरूरी नहीं। सुख की भी अपनी पीड़ा होती है और आध्यात्म समझाता है कि पीड़ा का भी अपना सुख होता है।

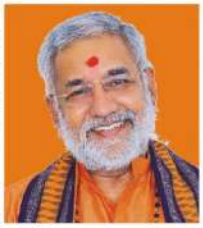

पं. विजयशंकर मेहता
(जीवन प्रबन्धन गुरु)

महाभारत के एक पात्र को समझा जाए जिनका नाम है 'भीष्म'। इनका सारा जीवन सुख की पीड़ा और पीड़ा के सुख के बीच में बीता। दोनों ही स्थितियों में इस व्यक्ति ने भगवान की भक्ति नहीं छोड़ी। ऊपर से भीष्म जितने सांसारिक दिखते थे, भीतर से उतने ही आध्यात्मिक थे। वे राजगद्दी से जुड़े हुए नजर आते थे लेकिन उनकी दृष्टि परम पद पर टिकी हुई थी। स्वयं राजा थे, कई राजाओं को बनाने और बिगाड़ने वाले थे। वे यह जानते थे कि- वो एक शख्स जो तुझसे पहले तख्तनशीं था, उसको भी अपने खुदा होने का उतना हीं यकीन था।

न तख्त रहते हैं न ताज। बड़े-बड़े राजा आम आदमी की तरह दुनिया से चले जाते हैं। भीष्म का अपना बड़ा परिवार, कुनबा या कुटुंब था, सारे सुख थे उनके पास, पर उतनी ही पीड़ा भी थी। वे दुर्योधन को नियंत्रण में नहीं रख पाए। कुरुवंश की नई पीढ़ी उन्हीं के सामने अमर्यादित हो गई। यह सुख की पीड़ा है। इसी में से उन्होंने पीड़ा का सुख भी उठाया। यह दृश्य आज भी कुछ परिवारों का हो सकता है लेकिन भीष्म ने हमें अपने चरित्र से बताया है कि मनुष्य छिपा हुआ परमात्मा है। एक तरह से परमात्मा का बीज है, मनुष्य। परमात्मा खिला हुआ रूप है और मनुष्य अधखिला परमात्मा।

हर एक के भीतर परमात्मा है बस, 'मैं' का भाव हटाओ कि ईश्वर प्रकट हो जाएगा। सुख की पीड़ा तो उन्होंने बहुत देखी थी। जब अंतिम समय वे शरशैया पर थे तो उनकी मृत्यु की गवाही देने श्रीकृष्ण स्वयं उपस्थित हुए थे। यह पीड़ा का सुख था। किसी भी परिवार के मुखिया के लिए भीष्म का जीवन अपने आप में एक सबक है, एक शिक्षा है, एक प्रबंधक है। चाहे तो हम भी इस सुख को उठा सकते हैं। बस इतना कीजिए, जरा मुस्कुराइए...।

खाना–खजाना

नवरात्रि के अवसर पर फलाहारी चूरमा

सामग्री- सिंघाड़े का आटा-250 ग्राम, राजगीरा आटा-250 ग्राम, गुड़-300 ग्राम, गोंद-50 ग्राम, बादाम बारीक कटी-50 ग्राम, इलायची पाउडर-1 छोटा चम्मच, नारियल का गोला, कद्दूकस किया हुआ-1, घी, मोयन के लिए-1 बड़ा चम्मच, घी तलने के लिए-100 ग्राम

गार्निशिंग के लिए

चांदी का वर्क 4 से 5, किशमिश 7 से 8, काजू 7 से 8, बादाम 8 से 10।

विधि-सिंघाड़े और राजगीरे के आटे को मिलाकर एक बड़ा चम्मच घी डालें और पानी डालकर मुलायम आट गूंद लें। अब एक कड़ाही में घी गर्म करें। तैयार आटे की लोइयां बनाकर घी में गुलाबी होने तक तल लें। सारी लोइयां ऐसे ही तलकर प्लेट पर निकाल कर रख लें। इन्हें ठंडा होने के बाद मिक्सर में बारीक पीसकर छान लें। अब इसी घी में गोंद भी तल लें। 100 ग्राम घी में गुड़ डालकर धीमी आंच पर गर्म करें। जब गुड़ अच्छी तरह घी में मिल जाए तो इसमें पिसा हुआ चूरा मिला लें। अब इस मिश्रण को एक बड़ी थाली में निकाल लें और इलायची, गोंद, नारियल व बादाम डालकर अच्छी तरह मिक्स कर लें। काजू, बादाम और किशमिश मिलाकर फरियाली चूरमा तैयार कर लें।

▸▸ पुनम राठी, नागपुर
9970057423

आपणी बोली

- स्वाति जैसलमेरिया, जोधपुर

मोबाइल री महिमा

खम्मा घणी सा हुक्म समय परिवर्तन रे साथे आज री बढ़ती टेक्नोलॉजी में मोबाइल रा इता ज्यादा आदी हूँ ग्या हाँ कि सब यों ही केवता नजर आवे कि '**मोबाइल न छुटे, चाहे जग रूठ जाये।**' मतलब मोबाइल बिना जीवन अधुरों है ।

हुक्म आपणा परिवार का बुजुर्गा रो जीवन देखा तो वे काम पर जावते समय पर्स, चाबी, डायरी, ख़ाणे री चिज़ा साथे राखता पर आज सब मोबाइल राखे। एक मजेदार किस्सों आपने बताऊं हुक्म म्हारा पड़ोसी रामलाल जी हवाईजहाज सुं दिल्ली जावण वास्ते रवाना हुया, एयरफोर्ट पहुंचते ही ध्यान आयो मोबाइल घरे ही भूल ग्या तो जनाब घरे लेवण आया... हुक्म पीछे फ्लाइट निकळगी। पाँच हज़ार रो मोबाइल दस हज़ार रो खर्चो करा दियों वो मंजूर कर लियो पर मोबाइल नहीं छुटे।

कुछ लोगा ने तो मोबाइल बीमारी बणगी है, और जीओ सिम जो बहुत कम पैसा में अनलिमिटेड नेट,बातचीत री सुविधा ने महिलाओं री आदत बुरी कर दी है। रसोई में ख़ाणों बणाती बातां करती रहवे, बेचारा पति, बच्चो ने जळयोडा भुनियोड़ा खावणा पड़े और अगर घर मे लड़ाई झगड़ा कर लेवे तो रिकॉर्डिंग करने ने महिला थाने में केस लगा ने पतियों ने कानून रे हत्थे चढ़ा देवे... कानून भी महिलाओं रे पक्ष में है वो भी महिलाओं री तरह ही अंधों है जो सिर्फ पुरुषों पर वार करणों जाणे हकीकत नहीं ।

मोबाइल रा सैकड़ों क़िस्सा है कुछ प्रेमी है तो कुछ गुलाम... अगर कहूँ कि भारत मे हरित क्रांति और शिक्षा क्रांति तो पूरी नही हई पर मोबाइल क्रांति जरूर हूँ गई है और या क्रांति कठे तक जाईं यो केवणो बहुत मुश्किल है पर मृत्यु सुं ज्यादा मोबाइल रे छूट जावण रो डर है क्योंकि अपने काम सुं ज्यादा मोबाइल नेटवर्क री चिंता रेह्वे ।

मोबाइल रो उपयोग हुक्म भले ही कई विकृतियों ने जन्म लियो हुवैला पर इंसान ने नम्रता जरूर सीखा दी। अकड़ ने चालण वाळा बन्दा भी सारा दिन गर्दन झुकायोड़ा हाथ मे मोबाइल धारण करियोड़ा बैठा रेह्वे 'अपना हाथ जगन्नाथ' री जगह '**अपना हाथ मोबाइल साथ**' हूँ ग्यो है। हाथ और मोबाइल रो तो यूँ लागे चोली- दामन रो साथ हूँ ग्यो है।

एक बात तो हुक्म मोबाइल ने देख ने म्हारे दिमाग मे भी आवे..

मोबाइल रे लाभ री चर्चा,हर जगह है आम
दुनिया पूरी मुठ्ठी में रेह्वे ,रुके ना कोई काम।

मुलाहिज़ा फरमाइये

मेरी झोली में कुछ दोस्त और कुछ रिश्ते हैं...
शुक्र ए मेरे मालिक, उनमें कुछ आप जैसे फरिश्ते हैं...!!

मुझ पर दोस्तों का प्यार, यूं ही उधार रहने दो।
बड़ा हसीन है ये कर्ज, मुझे कर्जदार रहने दो।।

झूठ कहते हैं कि संगत का असर होता है...
आज तक ना कांटों को महकने का सलीका आया,
और ना फूलों को चुभना आया...।।

माना कि औरों के मुकाबले कुछ ज्यादा पाया नहीं मैंने
लेकिन खुश हूं कि
खुद गिरता संभलता रहा.. किसी को गिराया नहीं मैंने।

कोई गिरने में राजी, कोई गिराने में राजी,
जो गिरकर संभल जाए, वही जीतता है बाजी

मकान बन जाते हैं कुछ हफ्तों में, ये पैसा कुछ ऐसा है....
और घर टूट जाते हैं पलों में, ये पैसा कुछ ऐसा है।

खुदगर्ज की बस्ती में अहसान भी एक गुनाह है...
जिसे तैरना सिखाया वही डुबाने को खड़ा है.....

▸▸ ***ज्योत्सना कोठारी**, मेरठ*

राशिफल

संकेत सितारों के

पं. विनोद रावल
(ज्योतिर्विद)
फोन : 0734-2515326

मेष

इस माह सामाजिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। सुख समृद्धि में वृद्धि होगी। घर में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। संतान से संबंधित कार्य होंगे। घर-परिवार में उत्सव का माहौल बना रहेगा। अतिथियों का आगमन बना रहेगा। शत्रु परास्त होंगे। अविवाहितों के संबंध तय होंगे। रुका हुआ धन प्राप्त होगा। नौकरी में पद-प्रतिष्ठा के योग प्रबल होंगे किंतु जीवन साथी के स्वास्थ्य की चिंता बनी रहेगी। खर्च की अधिकता बनी रहेगी।

वृषभ

इस माह साहित्य संगीत, कला के क्षेत्र में मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। अधिकारियों से अनुकूलता बनी रहेगी। मित्रों से मुलाकात, भवन निर्माण का कार्य करेंगे। व्यापार में लाभ, नौकरी में पद-प्रतिष्ठ प्राप्त होगी। माता-पिता के स्वास्थ्य से संबंधित परेशानी बनी रहेगी एवं संतान की भी सहायता करना पड़ेगी। मानसिक तनाव बना रहेगा। खान-पान पर नियंत्रतण बनाए रखें। यात्रा के सुअवसर प्राप्त होंगे। जीवन साथी से स्नेह प्रेम बना रहेगा।

मिथुन

यह आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार लायेगा यश की प्राप्ति यात्रा होगी कार्य में सफलता से मन प्रसन्न होगा, शुभ समाचार प्राप्त होगे, जमीन की खरीददारी करेंगे, प्रेम प्रसंग से दूरी बनाये रखे, वृद्धों की सेवा से आशीर्वाद का लाभ मिलेगा। किसी पर एकदम विश्वास करना हानिकारक सिद्ध होगा, पैसे के लेन-देन में सावधानी रखे व्यापार में उतार-चढ़ाव बना रहेगा, शत्रु से सावधानी रखे।

कर्क

यह माह आपको धन लाभ मन के अनुरूप कार्य होगे, सफलता भी मिलेगी, विरोधी परास्त होगे, जीवन साथी से संबंध सामान्य बने रहेगे सामाजिक समारोह एवं पार्टी में शामिल होगे, विद्यार्थी एवं खिलाड़ी वर्ग अच्छा प्रदर्शन कर सकेगे किसी प्रियजन से धोखा मिलेगा, विपरित योनी की ओर रुझान बन रहेगा। घर परिवार में शान्ति बना कर रखे, कार्य क्षेत्र लिये नये प्रस्ताव मिलेगे।

सिंह

इस माह आपको पिता के सुख में वृद्धि प्राप्त होगी, मन के अनुसार लाभ मिलेगा मित्र सहायक एवं भाग्योदय कारक सिद्ध होगे, नौकरी में उन्नति तथा स्थान परिवर्तन के योग बनते है। घर परिवार में सुख शान्ति एवं प्रसन्नता का वातावरण रहेगा। अचानक यात्रा होगी, सामाजिक, धार्मिक कार्य में यश मानप्रतिष्ठा मिलेगी, संतान की ओर से चिन्ता परेशानी बनी रहेगी। व्यवसाय में परेशानी तथा साझेदारी से धोखा मिलेगा, संगीत में रूविच बनी

कन्या

इस माह आपको खर्च की अधिकता बनी रहेगी, नये व्यवसाय आरंभ कर लाभ उठायेगे सामाजिक धार्मिक कार्य में रूचि बनी रहेगी। जीवन साथी से वैचारिक मनानतर बने रहेगे। घर में मांगलिक कार्य सम्पन्न होगे, अचानक यात्रा होगी शत्रु परास्त होगे, मित्र से मन मुटाव एवं गलतफहमी बनेगी। वाद-विवाद से बचे नौकरी में उन्नति तथा स्थान परिवर्तन होगा जीवन साथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखे।

तुला

यह माह कार्य में सफलता, रूका धन और काम पूरा होगा, शुभ कार्य होगे धन लाभ तरक्की एवं मान-सम्मान बढ़ेगा, जीवनसाथी के स्वास्थ्य की चिंता बनी रहेगी। अतिथि के आने की सम्भावना के कारण दौडधूप बनी रहेगी। तनाव बना रहेगा। स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दे। स्थायी सम्पत्ति खरीदने के योग प्रबल होगे, संतान के कार्यों से खुशी मिलेगी, अचानक यात्रा के अवसर प्राप्त होगे। शुभ कार्य होगे।

वृश्चिक

यह माह सामान्य रहेगा। परिवार में अस्वस्थता परेशानी खर्च की अधिकता बनी रहेगी। स्पष्टवादिता के कारण शत्रु बढ़ेगे खान-पान पर ध्यान रखना आवश्यक रहेगा, नये प्रस्ताव से धन लाभ भी होगा एवं कार्यक्षेत्र में जिम्मेदारियों भी बढ़ेगी अपने स्वयं के धन से मकान का निर्माण करेगे। संतान को आपकी आवश्यकता महसूस होगी। जीवनसाथी का पूरा सहयोग रहेगा।

धनु

यह माह मिश्रित फलदायक रहेगा। नौकरी में व्यवधान होगा, मन के अनुरूप कार्य नहीं होगे, दाम्पत्य जीवन सामान्य रहेगा, संतान की चिंता बनी रहेगी जाति समाज में मान सम्मान प्राप्त होगा। ज्यादा उतावलापन परेशानी का कारण रहेगा। विपरित योनी की ओर रूझान से परेशानी बनी रहेगी, जीवन साथी के प्रति ज्यादा स्नेह लगाव बना रहेगा, शत्रु परास्त होगे, यात्रा को टाले।

मकर

इस माह आपको अधिकारियों से अनुकूलता बनी रहेगी, किन्तु स्पष्टवादिता के कारण बने कार्य बिगाड़ लिया करेगे नौकरी में पदोन्नति एवं धन की प्राप्ति होगी। माता-पिता का विशेष ध्यान रखे दूर के मित्रों से मुलाकात होगी आपके क्रोध के कारण आपका फायदा लोग उठा लिया करेगे। भौतिक सुख सुविधा पर खर्च अधिक करेगे, मकान वाहन की खरीददारी करेगे, सुखद समाचार प्राप्त होगा। धार्मिक कार्य में रूचि रखेगे।

कुम्भ

इस माह घर में मांगलिक कार्य सम्पन्न होगे, अज्ञात भय बना रहेगा नये कार्य प्रारंभ करेगे घर परिवार में उत्सव का वातावरण रहेगा धन लाभ होगा। शत्रु परास्त होगे अविवाहित के विवाह योग प्रबल होगे समाज में मान-सम्मान मिलेगा, नौकरी में मनवांछित पद एवं लाभ मिलेगा संतान से संबंधित कार्यों से मन प्रसन्न होगा। अचानक धन एवं अभिष्ट वस्तु की प्राप्ति होगी।

मीन

इस माह व्यापार में श्रेष्ठतम सफलता नौकरी में उन्नति तथा इच्छानुसार स्थान परिवर्तन होगा। धैर्य रखे व्यर्थ के खतरे न उठाकर कार्य करे। कला संगीत के क्षेत्र में विशेष रूचि बनी रहेगी। घर में मांगलिक कार्य होगे। जीवन साथी से वैचारिक मतांतर बने रहेगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। वाहन-मकान प्राप्ति के योग एवं अतिरिक्त धन कमान के रास्ते भी बनेगे। धार्मिक यात्रा के सुअवसर प्राप्त होंगे।

श्री राजेंद्र गुप्त (बिंझानी)

जलबपुर. सिविल लाइंस निवासी श्री देवेंद्र गुप्त (बिंझानी) के लघु भ्राता एवं श्री प्रद्युम्न गुप्त (सीए) के पिता श्री राजेंद्र गुप्त (एडवोकेट) का हृदयगति रुक जाने से 77 वर्ष की आयु में सिवनी में दुःखद निधन हो गया। आप मप्र महेश सेवा ट्रस्ट के संस्थापक ट्रस्टी, श्री राजकुमारी बाई बाल निकेतन के संरक्षक सदस्य तथा छिंदवाड़ा माहेश्वरी जिला सभा के वरिष्ठ सक्रिय सदस्य थे।

श्रीमती पुष्पादेवी कोठारी

उदयपुर. सलूंबर निवासी जिला माहेश्वरी सभा के जिला उपाध्यक्ष ईश्वरलाल कोठारी की धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पादेवी कोठारी का निधन गत 23 अगस्त को हो गया है। आप अपने पीछे दो पुत्र व एक पुत्री सहित पौत्र, पौत्री, दौहित्री आदि का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं। श्रीमती पुष्पादेवी का धार्मिक, सामाजिक कार्यों में विशेष योगदान रहा है।

श्री मोहनलाल मूंधड़ा

दिल्ली. श्री मोहनलालजी मूंधड़ा सुपुत्र स्वा. शिवरतनजी का आकस्मिक निधन पटपड़गंज, दिल्ली स्थित आवास पर गत 16 सितंबर हो गया है। आप बीकानेर निवासी गोवर्धनदास बिन्नाणी के श्वसुर थे। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

श्रीमती उषा दरगड़

पुणे. वरिष्ठ समाजसेवी जेपी दरगड़ की धर्मपत्नी ख्यात समाजसेवी श्रीमती उषा दरगड़ का 69 वर्ष की अवस्था में गत दिनों पुष्कर में देहावसान हो गया। आप अपने पीछे पति श्री दरगड़ व पुत्र अमृतलाल दरगड़ सहित भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं। आप अभा माहेश्वरी महिला संगठन मध्य उप्र की सहसचिव रहीं व श्री महिला केंद्र (व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र) की आजीवन संचालिका थीं।

श्रीमती अहिल्याबाई साबू

इंदौर. स्व. श्री नारायणदास साबू की धर्मपत्नी श्रीमती अहिल्याबाई का 90 वर्ष की अवस्था में गत दिनों स्वर्गवास हो गया। उनकी अंतिम इच्छानुसार परिवार द्वारा उनके नेत्रदान करवाए गए। दिवंगत की आत्मशांति हेतु 12 दिवसीय परंपरागत आयोजन में गरुड़ पुराण का वाचन तो किया ही गया, वहीं जीवन प्रबंधन पर प्रोफेसर नंदकिशोर मालानी का प्रेरक उद्बोधन भी करवाया।

श्री पंकज सोमानी

कोलकाता. 54 वर्षीय समाज सदस्य पंकज सोमानी (सुपुत्र स्वर्गीय बृजमोहन सोमानी-गोंडा) का दुःखद निधन गत 7 सितंबर 2018 को मुंबई के एक अस्पताल में हो गया। श्री सोमानी कोलकाता प्रदेश से महासभा के कार्यकारी मंडल सदस्य थे। श्री सोमानी कार्यालय मंत्री जुगलकिशोर सोमाणी के चचेरे भाई थे। आप अपने पीछे दो शिक्षारत पुत्र अक्षत और निकुंज आदि छोड़ गए हैं।

श्रीमती शकुंतलादेवी जाजू

अहमदनगर. जिला सभा के मानद मंत्री तथा अकोला तहसील संवाददाता संघ के कोषाध्यक्ष अजय जाजू एवं जाजू कम्प्यूटर्स के संचालक धनंजय जाजू की माताजी श्रीमती शकुंतलादेवी का स्वर्गवास गत दिनों हो गया। आप अपने पीछे पति नंदलाल, पुत्री उज्वला मूंदड़ा (नासिक) व प्रीति राठी (नंदुरबार) सहित पौत्र-पौत्री, नाती-नातिन आदि का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

श्री श्यामलाल लद्दड़

वरंगल. समाज के वरिष्ठ श्री श्यामलाल लद्दड़ का स्वर्गवास गत 6 सितंबर 2018 को हो गया है। आप माहेश्वरी समाज, वरंगल के वरिष्ठ सदस्य थे। माहेश्वरी समाज वरंगल की ओर से भी उनको श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

सुश्री नयना चांडक

आकोट. आकोट के ठेकेदार संतोष चांडक की सुपुत्री एमडी तक शिक्षित नयना का ट्रेन सफर के दौरान हार्टअटैक से असामयिक देहावसान हो गया। इससे परिवार को गहरा सदमा लगा। लगभग 1 वर्ष पूर्व नयना के भाई निखिल की भी आकस्मिक मृत्यु हो गई थी।

> कुछ लोग मुझसे ज्ञान में श्रेष्ठ हैं
> कुछ लोग मुझसे संस्कार में श्रेष्ठ हैं
> कुछ लोग मुझसे बल में श्रेष्ठ हैं
> कुछ लोग मुझसे धन में श्रेष्ठ हैं
> कुछ लोग मुझसे सेवा कार्यों में श्रेष्ठ हैं
> कुछ लोग मुझसे भोलेपन में श्रेष्ठ हैं
> इसका मतलब प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप में मुझसे श्रेष्ठ अवश्य है
> अतः मैं सभी श्रेष्ठ व्यक्तियों को हृदय की गहराइयों से प्रणाम करता हूं

श्री माहेश्वरी टाईम्स

का आगामी विशेषांक रहेगा सनातन संस्कृति के महापर्व को समर्पित

दीपावली विशेषांक

जिसमें आप पाएंगे इस विशिष्ट अवसर से संबंधित ऐसे विशिष्ट आलेख जो तथ्य परक व सटीक होने के कारण आपके लिए होंगे संग्रहणीय। यदि आप अपने व्यक्तिगत शुभकामना संदेश अथवा प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान के विज्ञापन देना चाहते हैं तो लाखों पाठकों तक अपनी भावनाएं पहुंचाने के लिए शीघ्र प्रेषित करें अपना विज्ञापन।

SRI MAHESHWARI TIMES
90, Vidya Nagar (Behind Tedi Khajur Dargah)
Sanwer Road, UJJAIN (M.P.) - 456010
Ph. : 0734-2526561, 2526761 , Mo. : 94250-91161
E-mail : smt4news@gmail.com

अब रिश्ते आयेंगे आपके द्वार

उच्च शिक्षित विवाह योग्य युवक-युवतियों की विश्वस्तरीय डायरेक्ट्री

श्री माहेश्वरी मेलापक

अभी तक 3000 से भी अधिक सफल रिश्तों की सौगात के बाद फिर लिखेगी सफलता का नया इतिहास

यदि आपने बुक नहीं करवाई है अपनी प्रति
तो आज ही बुक कराएँ
कहीं मौका न चूक जाए.
प्रतियाँ सीमित

Rs. 750/-

90, विद्या नगर (टेड़ी खजूर दरगाह के पीछे), सांवेर रोड, उज्जैन (म.प्र.)
दूरभाष : 0734-2526561, 2526761, मोबाइल : 094250-91161
E-mail : srimaheshwarimelapak@gmail.com

पृथक् से प्रति बुक करवाने के लिए
शुल्क 750/- (डाक खर्च सहित)

Bank A/c Details :
Name : SRI MAHESHWARI MELAPAK
SBI A/c No. : 31725815057 / IFSC : SBIN0030062

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय भारत सरकार

राष्ट्रीय स्वास्थ्य अभिकरण

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

आयुष्मान मध्य प्रदेश

दीनदयाल स्वास्थ्य सुरक्षा परिषद

'निरामयम्'

शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

प्रत्येक चिन्हित परिवार को

5 लाख रूपये तक का सालाना कैशलेस चिकित्सा सुरक्षा कवच

सामाजिक आर्थिक जातीय सर्वेक्षण 2011 के चिन्हित आवासहीन, भूमिहीन मजदूर, गरीब, बेसहारा, अनुसूचित जाति, जन जाति निम्न आय वर्ग के परिवारों को चिन्हित तयशुदा शासकीय एवं निजी अस्पतालों में 5 लाख रूपये तक का कैशलेस उपचार मिल सकेगा

अधिक जानकारी के लिये अस्पताल परिसर में बने आयुष्मान भारत कियोस्क में सम्पर्क करें

राज्य हेल्प लाइन नं. 104 अथवा 181 / 18002332085 / Email:ayushman.bharat@mp.gov.in

लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, मध्य प्रदेश

D-17006

RNI-MPHIN/2005/14721
Po.-Malwa Division/244/2017-2019
Despatch Date - 02 October 2018

If Undelivered Please Return To
SRI MAHESHWARI TIMES
90, Vidya Nagar (Behind Tedi Khajur Dargah)
Sanwer Road, UJJAIN (M.P.) - 456010
Ph. : 0734-2526561, 2526761 , Mo. : 94250-91161
E-mail : smt4news@gmail.com

https://www.facebook.com/Srimaheshwaritimesmagazine
http://srimaheshwaritimes.blogspot.in